वार्षिक रिपोर्ट
ANNUAL REPORT
1998-99

इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र, नई दिल्ली

INDIRA GANDHI NATIONAL CENTRE FOR THE ARTS

NEW DELHI

वार्षिक रिपोर्ट
ANNUAL REPORT
1998-99

इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र, नई दिल्ली

INDIRA GANDHI NATIONAL CENTRE FOR THE ARTS

NEW DELHI

विषय-सूची

संकल्पना 5

न्यास का निर्माण 6

संगठन 7

संक्षिप्त विवरण तथा झलकियां 9

कलानिधि

कार्यक्रम क : संदर्भ पुस्तकालय 20

कार्यक्रम ख : राष्ट्रीय सूचना प्रणाली तथा डेटा बैंक 25

कार्यक्रम ग : सांस्कृतिक अभिलेखागार 26

कलाकोश

कार्यक्रम क : कलातत्त्वकोश 30

कार्यक्रम ख : कलामूलशास्त्र 31

कार्यक्रम ग : कलासमालोचन 31

कार्यक्रम घ : कलाओं के रूपक 32

कार्यक्रम ङ. : क्षेत्र अध्ययन 33

जनपद-सम्पदा

कार्यक्रम क : मानवजाति वर्णनात्मक संग्रह 37

कार्यक्रम ख : बहुमाध्यमिक प्रस्तुतियां तथा गतिविधियां 37

कार्यक्रम ग : जीवन शैली अध्ययन 38

कार्यक्रम घ : बाल जगत 41

कलादर्शन

कार्यक्रम क : संग्रह 43

कार्यक्रम ख : संगोष्ठियां और प्रदर्शनियां 43

कार्यक्रम ग : स्मारकीय व्याख्यान 52

कार्यक्रम घ : अन्य कार्यक्रम 52

अन्तर्राष्ट्रीय संवाद

सूत्रधार

क	:	कार्मिक	64
ख	:	आपूर्ति एवं सेवाएं	64
ग	:	शाखा कार्यालय	64
घ	:	वित्त एवं लेखे	65
ङ	:	आवास	66
च	:	शोधवृत्ति योजनाएं	66
छ	:	राष्ट्रीय संस्थाओं के साथ संबंध स्थापन	67

भवन परियोजना

अनुबन्ध

1.	:	इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र न्यास के सदस्य 1998-99	72
2.	:	कार्यकारिणी समिति के सदस्य 1998-99	74
3.	:	इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र के अधिकारियों की सूची 1998-99	75
4.	:	वरिष्ठ अनुसंधान अध्येताओं/कनिष्ठ अनुसंधान अध्येताओं की सूची 1998-99	77
5.	:	वर्ष 1998-99 के दौरान हुई प्रदर्शनियां	78
6.	:	वर्ष 1998-99 के दौरान हुई संगोष्ठियां/कार्यशालाएं	79
7.	:	फिल्म/वीडियो प्रलेखनों की सूची अप्रैल, 1998 से मार्च, 1999 तक	80
8.	:	31 मार्च, 1999 तक आयोजित (व्याख्यानों) की तालिका	81
9.	:	31 मार्च, 1999 तक के प्रकाशनों की तालिका	83

इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र

वार्षिक रिपोर्ट - 1998-99

संकल्पना

श्रीमती इन्दिरा गांधी की स्मृति में स्थापित इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र की कल्पना एक ऐसे स्वायत्त संस्थान के रूप में की गई है जिसमें सभी कलाओं के अध्ययन एवं अनुभव का समावेश हो और कला का प्रत्येक रूप अपना एक अलग अस्तित्व रखते हुए भी पारस्परिक अन्योन्याश्रय की स्थिति में, प्रकृति, सामाजिक संरचना और ब्रह्मांड व्यवस्था के साथ पारस्परिक रूप से सम्बद्ध हो।

कलाओं के विषय में यह दृष्टिकोण जो मानव संस्कृति के व्यापक परिवेश के साथ अखण्ड रूप से जुड़ा है, और उसके लिए आवश्यक भी है, श्रीमती गांधी की इस मान्यता पर आधारित है कि कलाओं की भूमिका मनुष्य के लिए व्यक्तिगत रूप में तथा एक सामाजिक प्राणी के रूप में उसके अंतरंग गुणों को विकसित करने के लिए आवश्यक है। यह दृष्टिकोण सम्पूर्ण विश्व को एक समझने की (विश्वबन्धुत्व) एवं विश्व की अखंडता की भावना (वसुधैव कुटुम्बकम्) में समाविष्ट है जो भारतीय परम्परा में सर्वत्र मुखरित है और जिस पर महात्मा गांधी तथा रवीन्द्रनाथ ठाकुर जैसे आधुनिक भारतीय मनीषियों ने भी बल दिया है।

यहां कलाओं के क्षेत्र को बहुत व्यापक रूप में देखा गया है, जिसमें शामिल है : लिखित तथा मौखिक रूप में उपलब्ध सृजनात्मक एवं समीक्षात्मक साहित्य, वास्तुकला, मूर्तिकला, चित्रकला और लेखाचित्रकला से लेकर सामान्य भौतिक संस्कृति, फोटोग्राफी और फिल्म जैसी दृश्य कलाएं, अपने अधिक से अधिक व्यापक अर्थों में संगीत, नृत्य, नाट्य जैसी प्रदर्शनात्मक कलाएं और मेलों, उत्सवों तथा जीवन शैली में उपलब्ध वह सब कुछ जो किसी भी दृष्टि से कलात्मक कहा जा सकता हो। प्रारंभ में केन्द्र ने अपना ध्यान भारत पर ही केन्द्रित किया है, लेकिन आगे चलकर वह अपना क्षेत्र अन्य सभ्यताओं तथा संस्कृतियों तक बढ़ा लेगा। अनुसंधान, प्रकाशन, प्रशिक्षण, सृजनात्मक कार्यकलाप तथा प्रदर्शन के विभिन्न कार्यक्रमों के माध्यम से केन्द्र कलाओं को प्राकृतिक तथा मानवीय परिवेश के संदर्भ में प्रस्तुत करने का प्रयत्न करेगा। अपने समस्त कार्य में केन्द्र का आधारभूत दृष्टिकोण बहुविषयक तथा अन्तर्विषयक दोनों प्रकार का होगा।

केन्द्र के प्रमुख उद्देश्य निम्नलिखित हैं :

1. कलाओं, विशेषकर लिखित, मौखिक और दृश्य स्रोत सामग्री के प्रमुख संसाधन केन्द्र के रूप में कार्य करना।

2. कला, मानविकी और सामान्य सांस्कृतिक धरोहर से संबंधित संदर्भ ग्रंथों, शब्दावलियों, शब्दकोशों, विश्वकोशों के अनुसंधान और प्रकाशन के कार्यक्रम हाथ में लेना।

3. सुव्यवस्थित रूप से वैज्ञानिक अध्ययनों और सजीव प्रदर्शनों का आयोजन करने के लिए क्रोड संग्रह के साथ-साथ जनजातीय और लोक कला प्रभाग स्थापित करना।

4. प्रदर्शनों, प्रदर्शनियों, बहुमाध्यमिक प्रस्तुतियों, सम्मेलनों, संगोष्ठियों तथा कार्यशालाओं के माध्यम से विविध परम्परागत तथा समकालीन कलाओं के क्षेत्र में तथा उनके बीच परस्पर सृजनात्मक एवं समीक्षात्मक संवाद, विचार-विमर्श के लिए एक मंच उपलब्ध कराना।

5. दर्शन, विज्ञान तथा प्रौद्योगिकी संबंधी वर्तमान विचारों और कलाओं के बीच संवाद को बढ़ावा देना, ताकि बौद्धिक समझबूझ के उस अंतर को दूर किया जा सके जो अवसर एक तरफ आधुनिक विज्ञाना और दूसरी तरफ कला तथा संस्कृति, जिसमें परम्परागत कला-कौशल तथा ज्ञान शामिल हैं, के बीच उत्पन्न हो जाता है।

6. भारतीय प्रकृति के अनुरूप अनुसंधान कार्यक्रमों तथा कला प्रशासन के लिए मॉडल तैयार करना।

7. विविध सामाजिक स्तरों, समुदायों और क्षेत्रों के बीच पारस्परिक क्रियाओं के जटिल ताने-बाने के रचनात्मक तथा गतिशील तत्वों को स्पष्ट करना।

8. भारत और विश्व के अन्य भागों के बीच ऐतिहासिक और सांस्कृतिक संबंधों के प्रति जागरूकता और संवेदनशीलता को बढ़ावा देना।

9. कला और संस्कृति के अन्य राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय केन्द्रों के साथ संचार साधनों का विकास करना और कला, मानविकी और सांस्कृतिक धरोहर के संबंध में अनुसंधान कार्य करने और उनको मान्यता प्रदान कराने के लिए भारतीय तथा विदेशी विश्वविद्यालयों और अन्य शिक्षा संस्थाओं के साथ संबंध स्थापित करना।

विशेष कार्यक्रमों तथा परियोजनाओं के माध्यम से कलाओं में अन्योन्याश्रय संबंध, विभिन्न क्षेत्रों के बीच परस्पर प्रभाव तथा जनजातीय, ग्रामीण और शहरी तथा लिखित एवं मौखिक परम्पराओं के बीच पारस्परिक संबंधों का पता लगाया जाएगा और उनको अभिलिखित तथा प्रस्तुत किया जाएगा।

न्यास का निर्माण

भारत सरकार, मानव संसाधन विकास मंत्रालय, कला विभाग के संकल्प संख्या एफ. 16-7/86- कला, दिनांक 19 मार्च, 1987 के अनुसरण में इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र न्यास को नई दिल्ली में दिनांक 24 मार्च, 1987 को विधिवत् गठित एवं पंजीकृत किया गया था। परवर्ती अवसरों पर न्यास का परिवर्द्धन तथा पुनर्गठन किया गया।

वर्ष 1998-1999 के दौरान इंदिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र के न्यासियों की सूची अनुबन्ध पर दी गई है।

इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र न्यास की जो कार्यकारिणी समिति के सदस्यों की सूची अनुबंध-2 पर दी गई है।

संगठन

इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र की संकल्पनात्मक योजना में वर्णित उद्देश्यों को पूरा करने के लिए और अपने प्रमुख लक्ष्यों को प्राप्त करने के लिए केन्द्र अपने पाँच प्रभागों के माध्यम से कार्य करता है, जो संरचनात्मक दृष्टि से स्वायत्त होते हुए भी कार्यक्रमों के आयोजनों के मामले में परस्पर जुड़े हुए हैं।

इन्दिरा गांधी कलानिधि : इसमें (क) मानविकी विषयों तथा कलाओं में अनुसंधान के लिए प्रमुख संसाधन केन्द्र के रूप में कार्य करने के लिए बहुविध संग्रहों से सुसज्जित सांस्कृतिक संदर्भ पुस्तकालय है, जिसे सम्बल प्रदान करने के लिए (ख) कलाओं, मानविकी विषयों तथा सांस्कृतिक परम्पराओं (धरोहर) पर एक कम्प्यूटरीकृत राष्ट्रीय सूचना प्रणाली एवं डेटा बैंक और (ग) सांस्कृतिक अभिलेखागार तथा कलाकारों/विद्वानों के बहुविध व्यक्तिगत संग्रह की व्यवस्था है।

इन्दिरा गांधी कलाकोश : यह प्रभाग आधारभूत अनुसंधान कार्य करता है। यह ऐसे दीर्घकालिक कार्यक्रम आरंभ करता है, जिनमें (क) कला और शिल्प की आधारभूत संकल्पनाओं का एक कोश तथा बुनियादी तकनीकी शब्दों का संग्रह और अंतर्विषयक शब्दावलियां, (ख) भारतीय कलाओं के आधारभूत ग्रंथों की श्रृंखला (कलामूलशास्त्र), (ग) भारतीय कलाओं के विषय में समीक्षात्मक कृतियों के पुनर्मुद्रण की श्रृंखला (कलासमालोचन) और (घ) भारतीय कलाओं का एक बहुखंडीय विश्वकोश और क्षेत्र अध्ययन के कार्यक्रम सम्मिलित है।

इन्दिरा गांधी जनपद-सम्पदा : यह प्रभाग (क) लोक तथा जनजातीय कलाओं और शिल्पों से संबंधित महत्त्वपूर्ण सामग्री का संग्रह तथा प्रलेखन करता है, (ख) बहुविध संचार माध्यमों के जरिए प्रस्तुतियां करता है, (ग) जनजातीय समुदायों की बहुविषयक जीवन शैलियों के अध्ययन के लिए व्यवस्था करता है जिससे कि समग्र भारतीय सांस्कृतिक दृश्य प्रपंच और पर्यावरणात्मक, पारिस्थितिक, कृषिविषयक, सामाजिक, आर्थिक, सांस्कृतिक तथा राजनीतिक आयामों के ताने-बाने के वैकल्पिक मॉडल तैयार किए जा सकें। इनके अलावा, (घ) उसने एक बाल रंगशाला स्थापित की है और (ङ) एक संरक्षण प्रयोगशाला स्थापित करने का प्रस्ताव है।

इन्दिरा गांधी कलादर्शन : यह प्रभाग कला एवं संस्कृति के एकीकृत विषयों तथा संकल्पनाओं पर अंतर्विषयात्मक संगोष्ठियों एवं प्रदर्शनियों के लिए एक मंच की व्यवस्था करता है। इसके भवनों में तीन रंगशालाएं (थियेटर) और बड़ी दीर्घाएं होंगी।

इन्दिरा गांधी सूत्रधार : यह अन्य सभी प्रभागों को प्रशासनिक, प्रबन्धकीय और संगठनात्मक सहायता तथा सेवाएं प्रदान करता है।

संस्था के शैक्षणिक प्रभाग अर्थात् कलानिधि तथा कलाकोश अपना ध्यान प्रमुख रूप से बहुविध प्राथमिक एवं गौण सामग्री के संग्रह पर लगाते हैं, आधारभूत संकल्पनाओं की खोज करते हैं, रूप से सिद्धान्तों का पता लगाते हैं और पारिभाषिक शब्दावलियों को स्पष्ट करते हैं। वे यह कार्य सिद्धान्त और पाठ (शास्त्र) और बौद्धिक चर्चा (विमर्श) और निर्वचन (मार्ग) के स्तर पर करते हैं। जनपद-सम्पदा और कलादर्शन प्रभाग लोक, देश तथा जन के स्तर पर अभिव्यक्ति, प्रक्रिया, जीवन-कार्य तथा जीवन-शैली और मौखिक परम्पराओं पर ध्यान देते हैं। चारों प्रभागों के कार्यक्रम सम्मिलित रूप से कलाओं को उनके जीवन तथा अन्य विषय-संबंधी मूल संदर्भों में प्रस्तुत करते हैं।

प्रत्येक प्रभाग में अनुसंधान करने, कार्यक्रम बनाने और अंतिम निष्कर्ष निकालने की रीतियां एक-जैसी हैं। हर प्रभाग का कार्य दूसरे प्रभागों के कार्यक्रमों का पूरक होता है।

वार्षिक रिपोर्ट

1 अप्रैल, 1998 से 31 मार्च, 1999 तक

संक्षिप्त विवरण तथा झलकियां

प्रस्तावना

वर्ष 1998-99 के दौरान इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र, कुछ अप्रत्याशित विघ्न बाधाओं के होते हुए भी, अपने कार्यकलापों के सभी क्षेत्रों में प्रगति करता रहा। इसके अधिकांश कार्यक्रमों का कार्यान्वयन भली-भांति निर्दिष्ट लक्ष्यों के अनुकूल रहा। केन्द्र के कार्यकलापों, विशेष रूप से उसकी प्रदर्शनियों व्याख्यानों और प्रस्तुतियों की व्यापक रूप से प्रशंसा हुई। कार्यक्रमों तथा परियोजनाओं के सफल निष्पादन का श्रेय मुख्य रूप से इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र न्यास की अध्यक्ष श्रीमती सोनिया गांधी और कार्य कारिणी समिति के अध्यक्ष श्री पी.वी. नरसिम्हाराव और केन्द्र की अकादमिक निदेशक प्राचार्या डा. कपिला वात्स्यायन ने सर्वोपरि पर्यवेक्षण के कारण संभव हुआ ।

कला तथा संस्कृति के एक प्रधान संसाधन केन्द्र के रूप में, इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र ने वर्ष 1998-99 में अनेक प्रकार के कार्यक्रम हाथ में लिए, जैसे, एकीकृत अध्ययन सम्पन्न करना: प्रकाशन निकालना: प्रदर्शनियां व्याख्यान, परिचर्चाएं, आदि आयोजित करना: और संदर्भ तथा स्रोत सामग्रियों का संग्रह करना। इस अवधि में केन्द्र के उल्लेखनीय कार्यकलापों में शामिल थे : भूतभूत विज्ञानों, मीमांसात्मक विचारों तथा सांस्कृतिक परम्पराओं से संबंधित बीजभूत संकल्पनाओं से लेकर पुरातत्त्व, मानवविज्ञान, कला-इतिहास और से संबंधित समकालीन अध्ययनों तक के विभिन्न विषयों पर अनुसंधान, अंतरविषयक/शास्त्रीय पारिभाषिक शब्दावली का संकलन : कार्यशालाओं व्याख्यानों, शिक्षाप्रद प्रदर्शनियों, पुत्तलिका तथा फिल्म प्रदर्शनों का आयोजन, जिससे विद्वान-वर्ग तथा जनसाधारण के बीच सर्जनात्मक संवाद की व्यवस्था हो ताकि विभिन्न सामाजिक, सांस्कृतिक स्तरों पर ज्ञान के प्रसार को योगदान मिल सके। केन्द्र ने अनेक संस्थाओं तथा विद्वानों के साथ सहयोगात्मक कार्यक्रम प्रारम्भ करके अपने कार्याधार को और अधिक व्यापक तथा गहरा बनाने के प्रयास बराबर जारी रखें ताकि राष्ट्रीय तथा अंतराष्ट्रीय स्तर पर विद्वान व्यक्तियों तथा निकायों के साथ जुड़े संबंध-तंत्र में और घनिष्ठता तथा व्यापकता लाई जा सके। प्रमुख कार्यक्रमों के ब्यौरे नीचे दिए गए हैं।

संग्रह

इस वर्ष 1989-99 में भी, संदर्भ पुस्तकालय इतिहास, पुरातत्त्व, धर्म, दर्शन, भाषा, साहित्य, कला, मानव विज्ञान, मानव-जाति विज्ञान आदि विषयों से संबंधित पुस्तकें, पत्र-पत्रिकाएं, माइक्रोफिल्मांकित पाण्डुलिपियों, स्लाइडों, फोटोग्राफी, फिल्में, दृश्य -श्रव्य सामग्री आदि प्राप्त करता रहा। उसने अपने भंडार में मुद्रित पुस्तकों के 3,950 खंड जोड़े। इनमें से 3,143 पुस्तकें विख्यात महानुभावों तथा संस्थाओं द्वारा उपहार स्वरूप दी गई और कुछ पुस्तकें आदान-प्रदान के आधार पर भी प्राप्त हुई। इस प्रकार 31

मार्च, 1999 तक पुस्तकालय में पुस्तकों की संख्या कुल मिलाकर 1,13,033 हो गई ।

इसके अतिरिक्त इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र को मास्को में श्री देव मुरारका का निधन हो जाने के बाद, उनकी पुस्तकों तथा पत्र-पत्रिकाओं का संग्रह प्राप्त हुआ। इस 'देवमुरारका संग्रह' में कला और साहित्य विषयों की 6,750 पुस्तकें और कला, साहित्य, इतिहास तथा सामाजिक विज्ञान विषयों की लगभग 11,000 पत्र-पत्रिकाएं, रूसी तथा अंग्रेजी भाषाओं में हैं।

वर्ष के दौरान प्राप्त हुई सामग्री को अवाप्ति रजिस्टर में चढ़ाने, उनका वर्गीकरण करने, कैटलॉग तैयार करनें, प्रलेखन तथा कम्प्यूटर में भरने का काम भी चालू रहा। आलोच्य अवधि में, पुस्तकों के 6,000 खंडों की जिल्दबंदी करवाई गई: इस प्रकार जिल्दबंद खंडों की संख्या कुल मिलाकर 51,380 हो गई।

माइक्रोफिल्म तथा माइक्रोफिश कार्यक्रम के अन्तर्गत, भिन्न-भिन्न लिपियों में लिखी, संस्कृत, तथा अन्य भाषाओं की 7, 749 पाण्डुलिपियों की 727 कुंडलियां (रोल) संस्कृत की 404 पाण्डुलिपियों की 34 कुण्डलियां बेयरिश स्ताश बिब्लियोथीक, म्यूनिक (जर्मनी) से तथा संस्कृत की पांडुलिपियों की 49 पाण्डुलिपियों की 7 कुंडलियां तुबिंजन विश्वविद्यालय, तुबिंजन (जर्मनी) से और सामाजिक विज्ञानों के वैज्ञानिक सूचना संस्थान 'इनियन', मास्को से रूसी भाषा में ऐतिहासिक स्रोत सामग्री की 131 माइक्रोफिशों संदर्भ पुस्तकालय के सामग्री भंडार से जोड़ी गई। विभिन्न संग्रहों से संबंधित माइक्रोफिल्म कुंडलियों की प्रतिकृतियां भी केन्द्र के आंतरिक उत्पादन दल द्वारा तैयार की गई और पांडुलिपियों के विभिन्न धारकों के साथ हुए समझौतों के अनुसार उन्हें दी गई।

कला तथा स्थापत्य विषयक स्लाइडों का संग्रह तैयार करने के कार्यक्रम के अन्तर्गत, 1,311 रंगीन स्लाइडें केन्द्र के भंडार में और जोड़ी गई: इनमें अन्य स्रोतों के अलावा, लघुचित्रों की अल्पज्ञात कश्मीरी कलम (स्कूल) की ही 343 स्लाइडें थीं। इसके अलावा, केन्द्र के आंतरिक दल द्वारा 968 स्लाइडें और तैयार की गई ।

इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र के सांस्कृतिक अभिलेखागार में, संथालों के जीवन तथा बंगाल की समकालीन दृश्यकलाओं से संबंधित दो वीडियो प्रलेख, भागवत पुराण की एक पांडुलिपि के चित्रों की 2000 से अधिक स्लाइडें: कुमारस्वामी संग्रह की चीजें, मुखौटे, राजस्थानी फड आदि वस्तुएं प्राप्त की गई।

जनपद-सम्पदा प्रभाग ने भी अपने अभिलेखागारीय संग्रह को समृद्ध बनाना जारी रखा। उसने भारत के भिन्न-भिन्न प्रदेशों से 26 परम्परागत मुखौटे और विदेशों से 28 मुखौटे प्राप्त किए। इसके अलावा, अपने दैनिक जीवन तथा जीवन शैली में नारियों की सर्जनशीलता के कार्यक्रम के अन्तर्गत, चिकन कसीदाकारी की 38 पोशाकें खरीदी गई।

कार्यक्रम

भारतीय कला और संस्कृति की ग्रंथ-परम्पराओं के अवगाहन तथा उनमें छिपे गूढ़ ज्ञान को प्रकाश में लाने के विशिष्ट उद्देश्य से इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र के कलाकोश प्रभाग ने अनुसंधान,

शब्दकोश-निर्माण, और संगीत, नृत्य, स्थापत्य, मूर्तिकला, चित्रकला, कर्मकांड, परम्पराओं तथा ऐसे की अन्य विषयों के क्षेत्र से संबंधित मूलग्रंथों के समालोचनात्मक संस्कार निकालने के विभिन्न कार्यक्रम प्रारम्भ किए थे। तदनुसार, यह प्रभाग शब्दकोशों, बीज-ग्रंथों के समालोचनात्मक संस्कार, अनुसंधान कार्य और गंभीर अध्ययनों पर आधारित प्रबंध ग्रंथों के प्रकाशन तथा विख्यात विद्वानों की सुप्रसिद्ध समालोचनात्मक कृतियों को, यथासंभव संशोधनों के साथ पुनर्मुद्रित करने के कार्य में संलग्न रहा। वर्ष 1998-99 में प्रकाशित उल्लेखनीय ग्रंथ हैं। (1)"कलातत्त्वकोश" - खंड-4, संपादक : डा० कपिला वात्स्यायन: (2) "लाट्यायन-श्रौत सूत्र" - खंड-1,2 और 3: सम्पादक एवं अनुवादक : एच. जी रानाडे: (3) "संगीतोपनिषत् सारोद्धार", सम्पादक एवं अनुवादक : एलिन माइनर: (4) "नर्तन-निर्णय", खंड-3, सम्पादक एंव अनुवादक : आर. सत्यनारायण: (5) ए. के. कुमारस्वामी कृत "हिन्दुइज्म एंड बुद्धिज़्म", सम्पादक के. एन. अय्यंगार: (6) "बाराबुदुर", लेखक : पॉल मूस: अंग्रेजी में अनुवादक : ए. डब्ल्यू. मैक्डोनैल्ड और (7) "प्रो० एन. के. बोस मेमोरियल लेक्चर" (श्रृंखला में 3) व्याख्याता: एम. के. ढाकी।

एशियाई अध्ययन कार्यक्रम के अन्तर्गत, शोधपत्रों के दो प्रबन्ध ग्रंथ प्रकाशित किए गए. उनके शीर्षक हैं : (1) "एक्रॉस दि हिमालयन गैप: एन इंडियन क्वेस्ट फॉर अंडर स्टैंडिंग चाइना": और (2) "इन दि फुटस्टेप्स ऑफ जुआन जांग : ह्वान युनशान एंड इंडिया"। दक्षिण-पूर्व एशियाई धरोहर के विषय पर डा० एच. बी. सरकार द्वारा लिखित शोधपत्रों का एक संकलन मुद्रण के लिए अंतिम रूप से तैयार किया जा चुका है।

जनपद-सम्पदा प्रभाग द्वारा भी वर्ष 1998-99 में ऐसे ही महत्वपूर्ण प्रकाशन निकाले गए जिनमें संगोष्ठियों/सम्मेलनों में प्रस्तुत किए गए शोधपत्र तथा विभिन्न विद्वानों द्वारा किए गए शोधकार्य मुद्रित किए गए है।

आलोच्य अवधि में प्रकाशित उल्लेनीय ग्रंथ हैं : "दि यूज़ ऑफ कल्चरल हैरिटेज़ ऐज ए टूल फॉर डिवलेपमेंट"। लेखक: वैद्यनाथ सरस्वती: (2) "कंजर्वेशन ऑफ रॉकआर्ट", सम्पादक : डा० बंसीलाल मल्ला, और (3) "ध्वनि", सम्पादक : प्रो० एस. सी. मलिक।

इसके अतिरिक्त, कलानिधि प्रभाग ने भी छाया-पुत्तलिका तथा जरतुश्ती अध्ययन विषयों पर दो महत्वपूर्ण ग्रंथसूचियां प्रकाशित कीं।

"भारत के महान गुरूजन श्रृंखला" के अन्तर्गत, इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र ने जुलाई, 1998 में सुश्री जोहरा सहगल और अगस्त, 1998 में श्री बी. सी. सान्याल की भेंटवार्ताएं विस्तार से रिकार्ड की। सुश्री जोहरा सुप्रसिद्ध अभिनेत्री और रंगकर्म विशेषज्ञा हैं और श्री सान्याल एक विख्यात चित्रकार हैं और उनकी आयु 90 वर्ष से ऊपर है।

कलानिधि प्रभाग ने वर्ष 1998-99 में लगभग नब्बे कार्यक्रमों की ऑडियो/वीडियो रेकार्डिंग या निश्चल फोटोग्राफी तैयार की जिनमें हिमाचल प्रदेश के गद्दी लोगों के जीवन तथा तंजावूर के बृहदीश्वर मंदिर में कुम्भाभिषेकम् के दृश्य अंकित किए गए थे।

आलोच्य अवधि में, जनपद-सम्पदा प्रभाग ने तीन प्रायोगिक परियोजना पूरी कीं : (1) "शमनिज्म एंड हीलिंग : ए स्टडी अमंग दि इंडो-टिबेटन्स ऑफ स्पिति" शमनवाद और चंगाई : स्पिति के भारतीय तिब्बतियों के बीच एक अध्ययन : श्री श्रीश जैन द्वारा; (2) "दि गुरुवायुर टेम्पल : इट्स रोल इन सोशो-रिलीजस मूवमेंट्स एंड कल्चरल नेटवर्क्स ऑफ केरल" (गुरुवायुर मंदिर : केरल के सामाजिक धार्मिक आन्दोलनों तथा सांस्कृतिक संपर्क सूत्रों की स्थापना में उसकी भूमिका): डा० पी. आर. जी. माथुर द्वारा, और (3) "बेसिक साउण्ड्स : ए स्टडी ऑफ साउण्ड सिम्बफिज्म ऑफ सन्थाल्स" (संथालों के ध्वनि प्रतीकवाद का अध्ययन): प्रो० सगेश्वर महापात्र द्वारा। इनके बाद तीन नई परियोजनाएं, अर्थात् (1) "वाटर कॉस्मोलजी एण्ड पॉपुलर कल्चर : एन. एन्थ्रोपोलॉजिकल स्टडी ऑफ इंडियन सिविलाइजेशन" (जलीय ब्रह्मांड विज्ञान और लोक संस्कृति भारतीय सभ्यता का मानववैज्ञानिक अध्ययन) (2) "दि हीलिंग चेंट्स" (व्याधिहर मंत्र) और (3) "दि कैलेंड्रिकल राइट्स एंड रिच्युअल्स ऑफ दि मैतेईज (ऑफ मणिपुर)" (मणिपुर मैतेई लोगों के तिथ्यानुसार धार्मिक अनुष्ठान और क्रियाकर्म) क्रमशः डा० गोविन्द रथ, डा० डेसमाण्ड एल, करमौफ्लांग और डा० एन. देवेन्द्र सिंह को सौंपी गई हैं।

आगन्तुक महानुभाव

अंतर्राष्ट्रीय परामर्शदाताओं सहित बड़ी संख्या में विषय विशेषज्ञ तथा विशिष्ट विद्वान इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र में पधारे।

उनमें से कुछ अधिक उल्लेखनीय थे : डा० सिंगेहारू सुगिता, उप-निदेशक, राष्ट्रीय मानव जाति विज्ञान संग्रहालय, ओसाका, जापान: डा० मिशल लॉरब्लांश, एक जाने माने फ्रांसीसी मानवजाति, पुरातत्वज्ञ: प्रो० जॉन एमिग, ब्राउन विश्वविद्यालय, संयुक्त राज्य अमेरिका: श्री इस्माइल सीरागेलि वाइस-प्रेजिडेंट, विश्व बैंक: डा० मिकाइल माइस्तर, प्रोफेसर पेनासिलवेनिया विश्वविद्यालय, संयुक्त राज्य अमेरिका,: डा० फरीद खान, भूतपूर्व प्रोफेसर पुरातत्व विभाग, पेशावर विश्वविद्यालय, पाकिस्तान : प्रो० ग्रेगरी पॉसेल, पुरातत्वविद्, सं. रा. अ.: डा० क्रिश्चियन लुक्जैनिट्स, तिब्बती अध्ययन संस्थान, वियाना विश्वविद्यालय: प्रो० फरजन्द अली दुर्रानी, भूतपूर्व वाइस चांसलर, पेशावर विश्वविद्यालय, पाकिस्तान : डा० वी. पी. पंचमुखी, महानिदेशक, गुटनिरपेक्ष तथा अन्य विकासशील देशों के लिए अनुसंधान तथा सूचना प्रणाली: डा० अहमद हसन दानी, एक जाने-माने संस्कृतविद् और पुरातत्वज्ञ, पाकिस्तान : डा० ऐण्डर्स हैलनग्रेन, हवाई विश्वविद्यालय: प्रो० दिलीप बसु, कैलिफोनिया विश्वविद्यालय: सं. रा. अ.: श्री पॉल सिंप्सन, ग्लासगो कला विद्यालय: श्री मार्क जॉन्स, निदेशक, राष्ट्रीय संग्रहालय, स्काटलैंड: डा० आर. के. जोशी, भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान, मुंबई: डा० एच. जी. रानाडे, भूतपूर्व प्रोफेसर, पूणे विश्वविद्यालय पुणें: श्री दादी पदुमजी मुखौटा विशेषज्ञ: नई दिल्ली: डा० एस. सी. गुप्त, वरिष्ठ तकनीकी निदेशक, राष्ट्रीय सूचनाविज्ञान केन्द्र, नई दिल्ली: श्री जगमोहन, संचार मंत्री, भारत सरकार: डा० (श्रीमती) सरोजिनी महिषी, उपाध्यक्ष, राष्ट्रीय संस्कृत संस्थान, नई दिल्ली: प्रो० पी. के. मुखोपाध्याय, दर्शन शास्त्र के सुप्रसिद्ध विद्वान जादवपुर, विश्वविद्यालय, श्री वी. एन. नारायण, सम्पादक, हिन्दुस्तान टाइम्स, नई दिल्ली: डा० नामवर सिंह, जवाहर लाल नेहरू विश्वविद्यालय, नई दिल्ली: और प्रो० सत्यरंजन चैनर्जी, कलकत्ता।

अकादमिक सहयोजन

इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र ने वर्ष 1998-99 के दौरान पाँच विदेशी और दो भारतीय अध्येताओं को अकादमिक सहयोजन प्रदान किया।

संगोष्ठियां/सम्मेलन

वर्ष 1998-99 के दौरान निम्नलिखित आठ संगोष्ठियां/सम्मेलन/कार्यशालाएं आयोजित की गई :

1. **"14 वें अंतराष्ट्रीय मानव विज्ञान तथा मानवजाति विज्ञान कांग्रेस में इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र का विशेष सत्र"**

इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र ने विलियमम्सबर्ग, वर्जीनिया, सं. रा. अ. में 25 जुलाई से 1 अगस्त, 1998 तक हुए 14 वें अन्तर्राष्ट्रीय मानव विज्ञान तथा मानवजाति विज्ञान महासम्मेलन/कांग्रेस में मानव विज्ञान में वैकल्पिक प्रतिमान" विषय पर एक विशेष अकादमिक सत्र का आयोजन किया ।

इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र के इस सत्र का उद्देश्य अध्येताओं/विद्वानों तथा शोधकर्ताओं को केन्द्र के परिप्रेक्ष्य, उद्देश्यों, कार्यों तथा उपलब्धियों से परिचित करना था। इस सत्र में पाश्चात्य/यूरोपीय भाषा विज्ञान के आधिपत्य को चुनौती दी गई और भिन्न-भिन्न संस्कृतियों के भीतर से व्युत्पन्न कार्यविधियों को विकसित करने पर ध्यान केन्द्रित किया गया। सम्मेलन में, इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र का प्रतिनिधित्व प्रो॰ बी. एन. सरस्वती, प्रो॰ एस. सी. मलिक और डा॰ मौलि कौशल ने किया।

केन्द्र के इस सत्र में संयुक्त राज्य अमेरिका, कोरिया, मेक्सिको, वेनेजुएला, इथोपिया, यूरोप और भारत के सुप्रसिद्ध मानव वैज्ञानियों ने बड़ी संख्या में भाग लिया और आयोजन का स्वागत किया।

2. **" राजभाषा : सांस्कृतिक संदर्भ "**

" राजभाषा : सांस्कृतिक संदर्भ " विषय पर 13.8.1998 को एक संगोष्ठी का आयोजन किया गया। इसमें संस्कृति के संदर्भ में राजभाषा के रूप में हिन्दी की भूमिका पर मुख्य रूप से चर्चा की गई। अनेक हिन्दी लेखकों, पत्रकारों और विद्वानों ने इसमें भाग लिया।

3. **" मानविकी विषयों के लिए मल्टीमिडिया"**

इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कलाकेन्द्र में 5-7 अक्तूबर, 1998 को "मानविकी विषयों के लिए मल्टीमीडिया" विषय पर एक अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन का आयोजन किया गया। इसमें मानविकी विषयों में कम्प्यूटर के प्रयोजन की संभावनाओं के विषय में विचार किया गया। देश-विदेश के लगभग पचहत्तर (75) प्रतिनिधियों ने इस सम्मेलन में भाग लिया।

4. " तीर्थयात्रा और जटिलता "

इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कलाकेन्द्र में 5 से 9 जनवरी, 1999 तक "तीर्थयात्रा और जटिलता" विषय पर एक अद्वितीय अंतर्राष्ट्रीय संगोष्ठी हुई, जिसमें देश-विदेश के लगभग 50 जाने-माने विद्वानों ने भाग लिया। संगोष्ठी में प्रस्तुत किए गए शोधपत्रों में तीर्थयात्रा की संकल्पना, प्रयोजन, उद्भव, विकास और वर्तमान पद्धतियों तथा जटिलताओं और उसके प्रतीकार्थ एंव खगोलीय ताराभंडल के साथ उसके संबंधों के विषय में विवेचन किया गया।

5. " भारत थाई कला "

इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कलाकेन्द्र में 30 मार्च, 1999 को "भारत थाई कला" विषय पर एक-एक दिवसीय संगोष्ठी आयोजित की गई। इस संगोष्ठी का उद्घाटन प्रो० लोकेशचन्द्र, अध्यक्ष, अंतर्राष्ट्रीय भारतीय सांस्कृतिक अकादमी, नई दिल्ली द्वारा किया गया। भारत तथा थाइलैंड के लगभग 40 विद्वानों ने इस संगोष्ठी में भाग लिया।

कार्यशालाएं

6. " पुरालिपिशास्त्र और पांडुलिपि विज्ञान "

"पुरालिपिशास्त्र और पांडुलिपि विज्ञान" विषय पर एक कार्यशाला इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कलाकेन्द्र द्वारा केरल विश्वविद्यालय के सहयोग से 8 से 27 मार्च, 1999 तक तिरूवनन्तपुरम (केरल) में आयोजित की गई। इस कार्यशाला में 39 युवा अध्येताओं और 22 विशेषज्ञों ने भाग लिया।

इस कार्यशाला का उद्देश्य युवा संस्कृत अध्येताओं को प्राचीन तथा मध्यकालीन पांडुलिपियों का अर्थ निकालने और उनके समालोचनात्मक संस्करण तैयार करने की विधि का प्रशिक्षण देना था।

7. " अभिकल्पन और प्रकाशन"

" अभिकल्पन और प्रकाशन" विषय पर एक ढाई-दिवसीय व्याख्यान प्रशिक्षण कार्यशाला का संचालन श्री अभय मोहन लाल द्वारा केन्द्रीय सचिवालय पुस्तकालय, शास्त्री भवन के परिसर में 22-23 जुलाई, 1998 को किया गया। इसमें भाग लेने वाले प्रशिक्षणार्थियों को गीतगोविन्द मल्टीमीडिया प्रस्तुतियां और शैलकला विषयक फिल्म दिखाने के साथ-साथ इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कलाकेन्द्र के कार्यक्रमों की रूपरेखा भी प्रदर्शित की गई।

8. " भारत की सांस्कृतिक धरोहर की पहचान और वृद्धि विकास के प्रबन्ध में एक आन्तरिक आवश्यकता"

इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र ने यूनेस्को के सहयोग से उक्त विषय पर एक कार्यशाला यूनेस्को प्रपीठ कार्यक्रम के अन्तर्गत 19-24 नवम्बर, 1998 को आयोजित की। भारत के प्रमुख सांस्कृतिक प्रदेशों से

जीवन-शैली के क्षेत्र में कार्यरत कोई 20 अध्येताओं ने इसमें भाग लिया और विकास के उपकरण के रूप में सांस्कृतिक सम्पदा/धरोहर के विभिन्न पक्षों पर विचार-विमर्श किया।

9, " प्रसार : योजनाएं, समस्याएं और संभावनाएं"

इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र ने 20-12-1998 को संगीत नाटक अकादमी के सहयोग से "प्रसार : योजनाएं, समस्याएं विषय पर एक कार्यशाला का आयोजन किया। इसमें इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र और संगीत नाटक अकादमी से लगभग 45 प्रशिक्षणार्थियों ने भाग लिया।

प्रदर्शनियां

वर्ष 1998-99 के दौरान, कलादर्शन प्रभाग ने कुल मिलाकर ये छह प्रदर्शनियां आयोजित की। (1) पंचतंत्र: (2) जल: जीवन संधारक,: (3) हमारी स्थापत्य धरोहर/सम्पदा: (4) नाद: एक ध्वन्यात्मक अनुभूति: (5) घंका : स्टोक, पैतेस म्यूजियम, लद्दाख से बौद्ध चित्रकारियां: और (6) लोकातीत उत्कर्ष। इनके अलावा, अनेक फिल्म शो, बैले और पुत्तलिका प्रदर्शन प्रस्तुत किए गए।

1. पंचतंत्र

26 वें विश्व बाल पुस्तक मेले के अवसर पर, संस्कृत में प्राचीन कहानियों के प्रसिद्ध संग्रह ग्रंथ 'पंचतंत्र' के विषय पर, एक प्रदर्शनी इन्दिरा गांधी/राष्ट्रीय कला केन्द्र में, बाल लेखक तथा चित्रकार संघ के सहयोग से 19 सितम्बर से 30 अक्तूबर, 1998 तक आयोजित की गई।

इस प्रदर्शनी के कालाहस्ती (आंध्र प्रदेश)के परम्परागत कलमकारी कलाकारों द्वारा पंचतंत्र की कहानियों पर आधारित चित्र, पुस्तकें, श्री हकू शाह की कोलाज-चित्रकारियों और पंचतंत्र की विषय-वस्तु पर आधारित मल्टी मीडिया प्रस्तुतियां प्रदर्शित की गई।

2. जल: जीवन संधारक

इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र ने 16 अक्तूबर से 29 अक्तूबर, 1998 तक "जल : जीवन संधारक" शीर्षक से एक प्रदर्शनी लगाई जिसमें श्री अशोक दिलवाली के चुने हुए फोटोग्राफ प्रदर्शित किए गए। इस प्रदर्शनी में ओस, झील, नदियां, बर्फ, जलप्रपात, पाला, पहाड़ी झरने, ओलावृष्टि, बादल, कोहरा, कुहासा आदि विभिन्न रूपों में जल की उपस्थिति में प्रकृति के करिश्मों को चित्रित करने का प्रयास किया गया।

3. हमारी स्थापत्य धरोहर

इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र द्वारा अनिल दवे के छायाचित्रों की एक अन्य रोचक प्रदर्शनी हमारी स्थापत्य धरोहर/सम्पदा शीर्षक के अन्तर्गत 3 से 21 नवम्बर, 1998 तक आयोजित की गई। इन फोटोग्राफों में श्री दवे ने भारत के प्राचीन, सुन्दर तथा प्रभावशाली भवनों को छायांकित करने का प्रयास

किया था। प्रत्येक फोटोग्राफ वस्तुतः स्थापत्य सौन्दर्य के साथ-साथ प्यार-मोहब्बत और शौक की कहानी कहता है।

4. नाद: एक ध्वन्यात्मक अनुभूति

ध्वनि प्रस्तुतियों की एक अद्वितीय प्रदर्शनी - "नाद : एक ध्वन्यात्मक अनुभूति", मैक्समूलर भवन के सहयोग से 10 से 15 दिसम्बर, तक आयोजित की गई।

5. थंका : स्टोक पैलेस म्यूजियम, लद्दाख से बौद्ध चित्रकारियां

नामग्याल लद्दाखी कला एंव संस्कृति शोध (निरलैक) के सहयोग से इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र ने अपने परिसर में 10 से 27 फरवरी, 1999 तक "थंका" शीर्षक से बौद्ध चित्रकारियों की प्रदर्शनी का आयोजन किया। पांच शताब्दी पहले के लद्दाखी चित्रकारों की कलात्मक परिपक्वता का उदाहरण प्रस्तुत करने वाले पैंतीस "थंका" चित्र इस प्रदर्शनी में प्रस्तुत किए गए। कहा जाता है कि ये चित्रकारियां लद्दाख के राजा ताशी नामग्याल के शासन-काल (1500-1530) में बनाई गई थी।

6. लोकातीत उत्कर्ष

"लोकातीत उत्कर्ष" (ट्रान्सैंडेन्स) नामक यह प्रदर्शनी जिसमें श्री सुनील आदेसरा के द्वारा खींचें गए शानदार फोटों प्रदर्शित किए गए थें, इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र के परिसर में स्थित माटीघर में 9 से 21 मार्च, 1999 तक लगाई गई थी। ये छायाचित्र प्रकृति की अत्यन्त सर्जनात्मक प्रक्रिया में ऊर्जा की प्रचुरता तथा प्रफुल्लता को प्रतिबिंबित करते हैं।

प्रस्तुतियां

1. कल्पवृक्ष

बाल नाटक : "कल्पवृक्ष" नामक एक बाल नाटक 18 अप्रैल, 1998 को गांधी दर्शन, राजघाट में और 20 अप्रैल, 1998 को दिल्ली हाट, नई दिल्ली में प्रस्तुत किया गया। इस नाटक में गांधी जी के सत्य और अहिंसा के सिद्धातों को उजागर किया गया था। दिल्ली में भिन्न-भिन्न स्कूलों के बच्चों ने इस कार्यक्रम में भाग लिया।

2. पंचतंत्र पर बैले (नृत्यनाटिका)

इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र ने भोपाल के रंगश्रीतिटिल बैले ट्रूप द्वारा प्रस्तुत एक बैले का आयोजन किया। पंचतंत्र की कहानी "मित्रताभ" (दि विनिंग ऑफ फ्रैंड्स) पर आधारित यह कार्यक्रम 23 सितम्बर, 1998 को नई दिल्ली में प्रस्तुत किया गया। बाल लेखक तथा चित्रकार संघ के आतिथ्य में आयोजित 26 वें "इब्बी"(अंतर्राष्ट्रीय नवयुवा पुस्तक बोर्ड) सम्मेलन में आए लगभग 275 प्रतिनिधियों तथा अन्य स्थानीय अतिथियों ने इस कार्यक्रम का रसास्वादन किया।

फिल्म प्रदर्शन

इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र ने बाल भवन, नई दिल्ली के ग्रीष्म कालीन शिविर में आयोजित संगीत तथा नृत्य की कक्षाओं में भाग लेने वाले लगभग 1000 बच्चों के लिए 20-21 मई, 1988 को एक दो-दिवसीय फिल्म-शो का आयोजन किया। इस अवसर पर 28 व 29 जुलाई, 1998 को भोपाल के लिटिल बैले ट्रूप द्वारा निर्मित "रामायण" नामक वीडियों फिल्म नई दिल्ली नगरपालिका स्कूलों के बच्चों को नई दिल्ली के विभिन्न स्कूलों में दिखलाई गई। 26 अगस्त, 1998 को, नीलगिरि के "टोडा" लोगों के जीवन और लद्दाख के "हेमिस" उत्सव पर बनी 98 फिल्में भी इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र के परिसर में दिखलाई गई।

इसके अतिरिक्त, आलोच्य अवधि में, कला, स्थापत्य, पुरातत्व, संस्कृति, कला-इतिहास, सौन्दर्यशास्त्र, संगीत, दर्शन और विज्ञान के भिन्न-भिन्न पक्षों पर 28 व्याख्यान/निरूपणात्मक भाषण आयोजित किए गए।

स्मारकीय व्याख्यान

1. आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी स्मारकीय व्याख्यान

इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र ने 15 वां आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी स्मारकीय व्याख्यान आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी स्मृति न्यास के सहयोग से 19 अगस्त, 1998 को नई दिल्ली में आयोजित किया।

इस वर्ष का व्याख्यान जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय, नई दिल्ली के सुप्रसिद्ध विद्वान डा० नामवर सिंह द्वारा "कबीर का आक्रोश" विषय पर दिया गया। विद्वान, लेखक तथा जनसाधारण बड़ी संख्या में इस आयोजन में उपस्थित हुए।

2. डा० सुनीति कुमार चटर्जी स्मारकीय व्याख्यान

इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र ने नई दिल्ली में 23 और 24 नवम्बर, 1998 को डा० सुनीति कुमार चटर्जी स्मारकीय व्याख्यान का आयोजन किया। यह व्याख्यान कलकत्ता के प्रो० सत्यरंजन बैनर्जी द्वारा दो भागों में दिया गया। व्याख्यान के पहले भाग का विषय था : "भारत-यूरोपीय भाषा विज्ञान के प्रति डा० सुनीतिकुमार चटर्जी का दृष्टिकोण" और दूसरा भाग "भारत-यूरोपवासियों के भाषा वैज्ञानिक चिंतन एंव विचारों का उद्भव और विकास" विषय था। इस आयोजन में बड़ी संख्या में विद्वान, पत्रकार और विश्वविद्यालयीन छात्र उपस्थित हुए।

दूरदर्शन पर इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र के कार्यक्रम

आलोच्य अवधि में इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कलाकेन्द्र के बाईस (22) महत्वपूर्ण कार्यक्रम दूरदर्शन पर दिखाए गए।

विशेष समारोह

1. भारत के भूतपूर्व राष्ट्रपति श्री आर. वेंकटरामन ने इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र में 26 सितम्बर, 1998 को आयोजित एक विशेष समारोह में, टी. के. गोविन्द राव की कृति "ट्रिनिटी ऑफ कर्नाटक म्यूजिक" (कर्नाटक संगीत की त्रिमूर्ति) के तीन खंडों का विमोचन किया। विमोचन की औपचारिकता के बाद श्री टी. के. गोविन्द राव ने कर्नाटक गान प्रस्तुत किया। इस समारोह में संगीत प्रेमी, विद्वान, पत्रकार आदि बड़ी संख्या में उपस्थित हुए।

2. राष्ट्रपति भवन, नई दिल्ली के अशोक हॉल में 14 दिसम्बर, 1998 को आयोजित एक महत्त्वपूर्ण समारोह में इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र द्वारा विभिन्न विषयों पर हाल में प्रकाशित लगभग 31 ग्रंथों, "जीवन शैली अध्ययन" और "परदे के पीछे श्रृंखला" के पांच वीडियों (प्रलेखन/फिल्में और "देवदासी मुरई", "मानव और मुखौटा" और "एलिजाबेथ ब्रूनर की चित्रकारियां" शीर्षक तीन सी. डी. रोम भारत के राष्ट्रपति माननीय श्री के. आर. नारायण को भेंट किए गए। इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र की इस उपलब्धि की विशिष्ट अतिथियों, विद्वानों पत्रकारों तथा अन्य उपस्थित महानुभावों ने भूरि-भूरि प्रशंसा की।

इन्दिरा गांधी स्मारकीय अध्येतावृत्ति

इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र ने वर्ष 1998 के लिए इन्दिरा गांधी स्मारकीय अध्येतावृत्ति/फैलोशिप दो चुने हुए विद्वानों, (1) डा० पद्मा एम सारंगपाणि, बंगलौर और (2) श्री बामबांग सुनार्तो, सुरकर्ता विश्वविद्यालय, इंडोनेशिया को प्रदान की।

यू. एन. डी. पी.

सी. डी. रोम के माध्यम से जन-साधारण को प्रस्तुत करने के लिए तैयार की जा रही आठ महत्वपूर्ण मल्टीमीडिया परियोजनाएं निर्माण की भिन्न-भिन्न अवस्थाओं में है।

सांस्कृतिक सूचना-विज्ञान प्रयोगशाला के अधिकारियों और इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र के अकादमिक कार्मिकों को, अध्ययन यात्राओं, अध्येता-कार्यक्रमों संगोष्ठियों, सम्मेलनों, कार्यशालाओं, परिचर्चाओं तथा आंतरिक प्रशिक्षण कार्यक्रमों के माध्यम से, भारत के भीतर और विदेश में उपलब्ध मल्टीमीडिया प्रौद्योगिकी से अवगत कराया गया और समुचित प्रशिक्षण दिया गया।

इंटरनेट और वेबसाइट सुविधाएं

दो इंटरनेट सेवाएं - एक सांस्कृतिक सूचना-विज्ञान प्रयोगशाला में और दूसरी संदर्भ पुस्तकालय में स्थापित की गई हैं।

केन्द्र की एक वेबसाइट सुविधा राष्ट्रीय सूचना-विज्ञान केन्द्र के माध्यम से भी स्थापित की गई है।

सहयोगात्मक कार्यक्रम

आलोच्य अवधि में, इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र ने भारत में और विदेशों में, नानाविध विषय-क्षेत्रों में कार्यरत अकादिमक निकायों तथा विद्यावरेण्य संस्थाओं के साथ घनिष्ठ सम्पर्क बनाए रखा।

न्यास की निधियों का निवेश

न्यास की निधियों के सुचारू तथा कुशल निवेश के लिए इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र ने दो समितियां स्थापित की हैं : (1) इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र की निधियों के दीर्घावधिक निवेश के लिए समिति और (2) अधिशेष ब्याज की आय के अल्पावधिक निवेश के लिए समिति।

आलोच्य अवधि में दीर्घावधिक निवेश समिति की दो बैठकें 10 फरवरी, 1999 और 16 मार्च, 1999 को हुई। अल्पावधिक निवेश समिति की बैठक आवश्यकतानुसार होती रही, अथवा उसका अनुमोदन परिपत्र-प्रक्रिया से प्राप्त कर लिया गया।

वर्ष 1998-99 के दौरान, दीर्घावधिक निवेश और अल्पावधिक निवेश संबंधी समितियों की सिफारिशों पर क्रमश: 22.70 करोड़ रूपये दीर्घावधिक आधार पर सार्वजनिक क्षेत्र के उपक्रमों तथा बैंकों में निवेश किए गए।

वार्षिक कार्य योजना

इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र की कार्यकारिणी समिति और न्यास ने वर्ष 1999-2000 की वार्षिक कार्ययोजना का अनुमोदन किया। गत वर्ष अनुमोदित कार्यक्रमों की परिधि में जो भी लक्ष्य निर्धारित किए गए थे, उन्हें अधिकांश मामलों में भिन्न-भिन्न प्रभागों ने प्राप्त कर लिया। वर्ष 1998-1999 के दौरान प्रत्येक प्रभाग के कार्यकलापों का ब्यौरा आगे के पृष्ठों में दिया गया है।

कलानिधि

(पुस्तकालय, सूचना प्रणालियों, सांस्कृतिक अभिलेखागार तथा क्षेत्र अध्ययन का प्रभाग)

कलानिधि प्रभाग के मुख्य घटक हैं : एक उत्कृष्ट संदर्भ पुस्तकालय और सूचना प्रणालियों तथा मल्टीमीडिया डेटाबेस की सुविधाओं के साथ सांस्कृतिक अभिलेखागार। संदर्भ पुस्तकालय के पास मुद्रित पुस्तकों के अलावा, भारतीय तथा विदेशी स्रोतों से प्राप्त माइक्रोफिल्मांकित पाण्डुलिपियों का अद्वितीय संग्रह है और इसके अभिलेखागार में स्थापत्य, चित्रकला, मूर्तिकला संबंधी फोटोग्राफ, स्लाइडें तथा अन्य वस्तुएं और काफी बड़ी संख्या में ऑडियो/वीडियो रेकार्डिंग तथा अन्य सामग्रियों संगृहीत हैं।

कार्यक्रम क : संदर्भ पुस्तकालय

नई प्राप्तियां

मुद्रित सामग्री

अलोच्य वर्ष में, संदर्भ पुस्तकालय में मुद्रित पुस्तकों के 3,950 खंड जोड़े गए। इनमें वे 3,143 पुस्तकें शामिल है जो विशिष्ट व्यक्तियों तथा संस्थाओं से उपहारस्वरूप मिली हैं या आदान-प्रदान के आधार पर प्राप्त की गई हैं। वर्ष की अंतिम तिमाही में, पुस्तकों तथा पत्र-पत्रिकाओं के एक विशाल संग्रह के रूप में एक महत्त्वपूर्ण उपहार (स्व) श्री देव मुरारका की अंतिमेच्छा के अनुसार पुस्तकालय में प्राप्त हुआ: श्री मुरारका एक जाने-माने भारतीय पत्रकार थे जो मास्को में रहते थे। और उनका निधन भी मास्को में ही हुआ था। इस संग्रह में रूसी इतिहास, कला तथा संस्कृति विषयक 6,750 पुस्तकें और पत्र-पत्रिकाओं के लगभग 11000 अंक हैं। इनमें से 511 खंडों को अवाप्ति रजिस्टर में चढ़ा लिया गया है। शेष पुस्तकों को भी रजिस्टर में दर्ज करके संग्रह में जोड़ा जा रहा है।

इस वर्ष के महत्वपूर्ण दाताओं में से कुछ उल्लेखनीय हैं : श्रीलंका की सरकार के उप-संस्कृति मंत्री प्रो० ए. वी. शूरवीर: श्रीमती कृष्णा रिबाउड: पेरसि, फ्रांस: बौद्ध अध्ययन संस्थान टोकियो, जापान: पूर्वी कला का फ्रेंच होंप म्यूजियम: बुडपिस्ट: तिब्बती अध्ययन केन्द्र पेइचिंग (चीन): नेहरू स्मृति संग्रहालय एंव पुस्तकालय, नई दिल्ली: रोएरिक अध्ययन परिषद, दिल्ली: विपासना शोध संस्थान, इगतपुरी, महाराष्ट्र: ईसाई धार्मिक अध्ययन संस्थान, बंगलौर: चीन का राजदूतावास, नई दिल्ली: और एच. वाई. शारदा प्रसाद, नई दिल्ली।

वर्ष के अंत में, पुस्तकालय में पुस्तक खंडों की संख्या कुल मिलाकर 1,13,033 थी।

पत्र-पत्रिकाएं

पुस्तकालय इस वर्ष भी उन अकादमिक और तकनीकी पत्र-पत्रिकाओं का ग्राहक बना रहा जिनका उल्लेख पिछले वर्ष की रिपोर्ट में किया गया था। ऐसी पत्र-पत्रिकाओं की संख्या अब 399 है। ये पत्र-पत्रिकाएं उन विषयों से सम्बंधित हैं : मानव विज्ञान, पुरातत्व, स्थापत्य, कलाएं, ग्रंथसूची, पुस्तक समीक्षा, कम्प्यूटर तथा सूचना विज्ञान, संरक्षण, संस्कृति, नृत्य, भाषा विज्ञान, साहित्य, संग्रहालय अध्ययन, संगीत, मुद्राटंकण शास्त्र, प्राच्य अध्ययन, प्रदर्शन कलाएं, पुत्तलिका कला, धर्म, विज्ञान सामाजिक ज्ञान, रंगमंच और क्षेत्र अध्ययन।

कैटलॉग कार्य

आलोच्य वर्ष में, 2,785 पुस्तक खंडों का वर्गीकरण और कैटलाग कार्य किया गया और 848 पुस्तकों के अभिलेख "लिबसिस" डेटाबेस में दर्ज किए गए। अमुद्रित सामग्री के कैटलॉग कार्य के अन्तर्गत, 258 ऑडियो कैसेटों का कैटलॉग में दर्ज किया गया। इंडोनेशिया के राष्ट्रीय पुस्तकालय की पाँच कुंडलियों (रोल्स) में शामिल की गई पाण्डुलिपियों के 50 शीर्षकों को कैटलॉग में दर्ज किया गया और मूलतः मौलाना आजाद अरबी और फारसी शोध संस्थान, टोंक, राजस्थान की माइक्रोफिल्मांकित पाण्डुलिपियों के पच्चीस अभिलेखों को "लिबसिस" डेटाबेस में भरा गया।

जिल्दबंदी

आलोच्य वर्ष में, 600 खंडों की जिल्दबंदी करवाई गई। इस प्रकार जिल्दबंद खंडों की संख्या कुल मिलाकर 51,380 हो गई हैं।

माइक्रोफॉर्म

आन्तरिक उत्पादन

प्रतिलिपिकरण

माइक्रोफिल्म कुंडलियों की प्रतिलिपियां तैयार करने का कार्यक्रम सामान्य परिपाटी के अनुसार चलता रहा और उनकी प्रतिकृतियां मूल पाण्डुलिपियों के मालिकों/अभिरक्षकों को और संदर्भ प्रयोजन के लिए पुस्तकालय को दी जाती रहीं। तदनुसार, इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र के आन्तरिक उत्पादन दल द्वारा अनेक संस्थाओं के संग्रहों की पाण्डुलिपियों की कुल मिलाकर 3,537 माइक्रोफिल्म कुंडलियों की प्रतिलिपियां तैयार की गईं। ये संस्थाएं है : (1) गवर्नमेंट ओरियंटल मैनुस्क्रिप्ट्स लाइब्रेरी, चेन्नई; (2) ओरियंटल रिसर्च इन्स्टिट्यूट और मैनुस्क्रिप्ट्स लाइब्रेरी; तिरुवनन्तपुरम; (3) सरस्वती भवन

पुस्तकालय, वाराणसी: (4) भारत इतिहास संशोधन मंडल, पूणे: (5) भंडारकर प्राच्य शोध संस्थान, पूणे: (6) राजस्थान प्राच्य शोध संस्थान, जोधपुर: (7) रामपुर रजा लाइब्रेरी, रामपुर: (8) भारतीय सांस्कृतिक संबंध परिषद, नई दिल्ली: (9) भोगीलाल लहरचन्द भारतविद्या संस्थान, नई दिल्ली: (10) केलाड़ि म्यूजियम और ऐतिहासिक अनुसंधान ब्यूरो, केलाड़ि : और (11) प्राच्य शोध संस्थान, मैसूर।

माइक्रोफिल्मांकन

वर्ष के दौरान, संदर्भ पुस्तकालय को अध्येताओं के उपयोग के लिए, माइक्रोफिल्मों की कुल मिलाकर 1,237 पॉजिटिव कुंडलियां आन्तरिक उत्पादन दल से प्राप्त हुई। ब्यौरा इस प्रकार है : ओरियंटल रिसर्च इन्स्टिट्यूट और मैनुस्क्रिप्ट्स लाइब्रेरी, तिरूवनन्तपुरम के संग्रहों में से प्राप्त पाण्डुलिपिकों की माइक्रोफिल्मांकित प्रतियों की 220 कुंडलियां (रोल): भंडारकर प्राच्य शोध संस्थान, पूणे से 723 कुंडलियां: गवर्नमेंट ओरियंटल रिसर्च इन्स्टिट्यूट, चेन्नई से 61 कुंडलियां: भारतीय सांस्कृतिक संबंध परिषद से 63 कुंडलियां, रामपुर रजा लाईब्रेरी, रामपुर से। कुंडली: भोगीलाल लहरचन्द भारतविद्या संस्थान से। कुंडली: रामकृष्ण मठ से। कुंडली: प्राच्य शोध संस्थान, मैसूर से 5 कुंडलियां: सरस्वती भवन लाईब्रेरी, वाराणसी से 51 कुंडलियां: 3 केलाड़ि म्यूजिसम से 25 कुंडलियां, राजस्थान प्राच्य शोध संस्थान, जोधपुर से 37 कुंडलियां, और इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र के विशेष दुर्लभ संग्रह की 2 कुंडलियां।

इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र के आन्तरिक उत्पादन दल ने निम्नलिखित संग्रहों से प्राप्त पांडुलिपियों को नीचे दिए गए ब्यौरे के अनुसार माइक्रोफिल्मांकित किया :

क्र. सं०	परियोजना	पांडुलिपियों की संख्या	पन्नों की संख्या	भाषा/लिपि
1.	डा० यू. वी. स्वामिनाथ अय्यर लाइब्रेरी, चेन्नई	30	पांडु. 76 पन्ने -18,365	तमिल
2.	रामकृष्ण मठ, चेन्नई	02	पांडु. 4 पन्ने -1,597	अंग्रेजी
3.	विशेष दुर्लभ संग्रह लाइब्रेरी, चेन्नई	02	पांडु. 3 पन्ने -751	प्राचीन असमिया, संस्कृत/देवनागरी
4.	भारतीय सांस्कृतिक संबंध परिषद, नई दिल्ली	48	पांडु. 171 पन्ने -28,426	फारसी/अरबी/उर्दू/नस्तलीक

विभिन्न केन्द्रों से माइक्रोफिल्म संग्रह

आलोच्य वर्ष के दौरान, इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र द्वारा भिन्न-भिन्न केन्द्रों में इस प्रयोजन के लिए नियोजित भिन्न-भिन्न कार्यालयों के माध्यम से किए गए माइक्रोफिल्मांकन कार्य की प्रगति का ब्यौरा नीचे दिया गया है।

क्र. सं०	परियोजना 1998-99	पांडुलिपियों/पन्नों की संख्या	लिपि
1.	ओरियंटल रिसर्च इन्स्टिट्यूट और मैनुस्क्रिप्ट्स लाइब्रेरी, तिरुवनन्तपुरम	पांडु.- 279 पन्ने - 98,596	संस्कृत/मलयालम/ देवनागरी
2.	गवर्नमेंट मैनुस्क्रिप्ट्स लाइब्रेरी, चेन्नई	पांडु.- 1,823 पन्ने - 1,62,154	संस्कृत/तेलगु/ देवनागरी
3.	सरस्वती भवन पुस्तकालय, वाराणसी	पांडु.- 4,266 पन्ने - 2,14,701	संस्कृत/बंगला/ देवनागरी
4.	तंजावूर महाराजा सरफोजी की सरस्वती महल लाइब्रेरी, तंजावूर	पांडु.- 1,074 पन्ने - 9,627	संस्कृत/देवनागरी/ ग्रंथ/तेलुगु
5.	शंकर मठ, कांचीपुरम	पांडु.- 307 पन्ने - 73, 704	तमिल/संस्कृत/ ग्रंथ/देवनागरी

इसके अतिरिक्त, संस्कृत पांडुलिपियों की 41 कुंडलियां विदेश स्थित दो संस्थाओं से प्राप्त हुई है। इनमें तुबिंजन विश्वविद्यालय, तुबिंजन (जर्मनी) से प्राप्त 49 पांडुलिपियों की 7 कुंडलियां और बेरिश स्तासबिब्लियोथीक, म्यूनिक, जर्मनी से प्राप्त 404 पांडुलिपियों की 34 कुंडलियां शामिल है।

माइक्रोफिश

आलोच्य अवधि में, सामाजिक विज्ञान संस्थान, रूसी अकादमी (इनियन), मास्को से 131 माइक्रोफिशें भी प्राप्त हुई ।

पांडुलिपि डेटाबेस

वर्ष 1998-99 के दौरान, कैटलॉग कार्डों की 8000 कम्प्यूटर प्रविष्टियाँ ठीक हो गई और 400 अभिलेख कम्प्यूटर में संशोधित किए गए। कैटलॉग कार्डों के 26,500 अभिलेख कम्प्यूटर में भरे गए। इसके अतिरिक्त, कैटलॉग कार्डों के 3,000 अभिलेख रोमन लिपी से देवनागरी में लिप्यंतरित किए गए और डी. ए. वी. कालेज, चंडीगढ़ की 2,346 डेटाशीटें और विभिन्न कैटलॉगों से पंचतंत्र विषयक 210 पांडुलिपियों की डेटाशीटें तैयार की गई।

स्लाइडें

आलोच्य अवधि में, लघु चित्रों की कश्मीर कलम से संबंधित 343 स्लाइडें विभिन्न स्रोतों से पुस्तकालय संग्रह के लिए प्राप्त की गई।

राष्ट्रीय संग्रहालय, भंडारकर प्राच्य शोध संस्थान, हिमालयीन दृश्यावली संग्रह भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण, अलवर संग्रहालय से गीतगोविन्द की पांडुलिपियां और बालिसत्र भागवत पुराण से संबंधित कुल मिलाकर 1,025 अभिलेखागारीय स्लाइडों को अवाप्ति रजिस्टर में चढ़ाया गया।

आलोच्य अवधि में, 693 मुख्य प्रविष्टि कैटलॉग कार्ड स्लाइडों पर तैयार किए गए और 260 कार्ड शोधकर्ताओं के उपयोग के लिए कम्प्यूटर में भरे गए। रामपुर रजा लाइब्रेरी की चित्रमय पांडुलिपियों की स्लाइडों की 1500 प्रतिकृतियां तैयार की गई और रामपुर रजा लाइब्रेरी के सहायक पुस्तकाध्यक्ष को सौंपी गई। संदर्भ पुस्तकालय ने आवश्यक सूचना के साथ 5,766 स्लाइडें अध्येताओं को अध्ययन के लिए दी गई।

ग्रंथसूची

निम्नलिखित दो ग्रंथसूचियां तैयार की गई :

(1) छाया पुतलिका विषयक ग्रंथसूची : कुल ९१९ प्रविष्टियां

(2) जरतुश्ती अध्ययन विषयक सटिप्पणीक : कुल १६५ प्रविष्टियां ग्रंथसूची .

संरक्षण

समाधाधीन अवधि में, संरक्षण एकक ने कलाकृतियों, दुर्लभ ग्रंथों, तालपत्रों पर लिखी पांडुलिपियों, माइक्रोफिल्मों और माइक्रोफिशों के परिरक्षण का कार्य सम्पन्न किया।

कार्यक्रम ख : राष्ट्रीय सूचना प्रणाली तथा डेटा बैंक

कलानिधि (ख) प्रभाग की जिम्मेदारी है : अन्य सभी प्रभागों की कम्प्यूटरीकरण संबंधी आवश्यकताओं का पता लगाना, डेटा का विश्लेषण करना, सूचना प्रणालियों का डिजाइन व विकास करना, उनका अनुरक्षण तथा संचालन करना और इनका उपयोग करने वाले स्टाफ-सदस्यों को प्रशिक्षित करना।

प्रशिक्षण

आलोच्य वर्ष के दौरान, एम. एस. वर्ड/विन-95 के विषय में एक आन्तरिक कम्प्यूटर प्रशिक्षण कार्यक्रम अगस्त 1998 में आयोजित किया गया। इस कार्यक्रम में इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र के अकादमिक तथा सचिवालयिक स्टाफ सदस्यों को प्रशिक्षण दिया गया।

प्रलेख छवि अंकन प्रणाली

इस प्रणाली का उपयोग मूलरूप से, केन्द्र के उन सभी अभिलेखों को सुरक्षित रखने के लिए किया जाता है जो पिछले 10 वर्षों में अभिलेखागारीय डेटा बैंक में रखे गए हैं। आलोच्य वर्ष में, विभिन्न प्रभांगो से संबधित महत्वपूर्ण प्रलेखों के, 1430 पृष्ठों की प्रलेख छवि-अंकन प्रणाली में भरा गया। पांडुलिपि कैटलॉग कार्डों के 7,500 अभिलेखों को भी लिब्सिस सापटवेयर में दर्ज किया गया।

इंटरनेट वेबसाइट सुविधाएं

दो इंटरनेट सेवाएं - एक सांस्कृतिक सूचना विज्ञान प्रयोगशाला में और दूसरी पुस्तकालय में - स्थापित की गई हैं। इंटरनेट पते निम्नलिखित हैं :

(1) "सिल" इंटरनेट यूजर नाम : ignca@del2.vsnl.net.in

(2) लाइब्रेरीइंटरनेट यूजर नाम : ignca@del3.vsnl.net.in

सांस्कृतिक सूचना-विज्ञान प्रयोगशाला के माध्यम से कला केन्द्र का वेबसाइट निम्नलिखित पते और कुंजीशब्दों (की वर्ड्स) के साथ स्थापित किया गया :

वेबसाइट पता : http:/www.nic.in/ignca

कुंजीशब्द : INDIRA GANDHI NATIONAL CENTRE FOR THE ARTS
INDOLOGY
MULTIMEDIA,
INDIA ART AND CULTURE,
LIFESTYLE STUDIES,
MULTIDISCIPLINARY STUDIES

कार्यक्रम ग : सांस्कृतिक अभिलेखागार

भारत की सांस्कृतिक सम्पदा/धरोहर के अल्पज्ञात पक्षों के संबंध में संग्रहण, फोटो प्रलेखन, फिल्मांकन और अभिलेखन का काम कलानिधि प्रभाग के सांस्कृतिक अभिलेखागार एकक को सौंपा गया है। आलोच्य वर्ष के दौरान किए गए कार्य का ब्यौरा नीचे दिया गया है :

अभिलेखागारीय कैटलॉग कार्य

लांसडेन संग्रह से संबंधित, भारत, नेपाल और कम्बोडिया की कला तथा स्थापत्य विषयक 1300 स्लाइडों को और कर्नाटक तथा हिन्दुस्तानी शास्त्रीय संगीत के (वी.ए.के रंगाराव संग्रह के) 608 (78 आर. पी. एम.) संगीत रेकार्डों को कैटलॉग में दर्ज किया गया। आनन्द कुमारस्वामी संग्रह और षड्गोपन संग्रह के सद्गुरु का कांचिकामाकोटि मठ और अन्य वस्तुओं से संबंधित अमुद्रित सामग्री के प्रलेख अवाप्ति रजिस्टर में और कार्ड सूचक में दर्ज किए गए।

प्रलेखन

आन्तरिक रूप से तैयार किए प्रमुख प्रलेखन कार्यों में से कुछ हैं कला, साहित्य, संगीत तथा नृत्य के क्षेत्र में सुविख्यात धुरंधरों के साथ साक्षात्कार, जिनका ब्यौरा नीचे दिया गया है :

1. सुश्री जोहरा सहगल
   सुप्रसिद्ध अभिनेत्री और रंगकर्म विशेषज्ञा का
   डा० कपिला वात्स्यान द्वारा साक्षात्कार ।

2. श्री बी. सी. सान्याल,
   सुविख्यात चित्रकार का
   डा० कपिला वात्स्यान द्वारा साक्षात्कार ।

इसके अतिरिक्त, निम्नलिखित प्रलेखन कार्यक्रम प्रारम्भ किए जा चुके हैं और उत्पादन की विभिन्न अवस्थाओं में हैं :

1.	पांडवानी	(अनेक कलावृन्दों की प्रस्तुतियां)
2.	थांगन्ता	(मणिपुर की शौर्य कलाएं)
3.	म्यूरल्स आफ केरल	(केरल के भित्तिचित्र)
4.	मुडियेट्टु	(केरल की कर्मकाण्डीय लोक कला)
5.	कलमेझुक्तु	(केरल के लोकप्रिय कला रूप)

वर्ष 1998-99 के दौरान, "भागवत पुराण चित्रांकन" के 325 श्वेत-श्याम फोटो और 2000 मौलिक स्लाइडें, "कुमार स्वामी संग्रह" के 125 श्वेत-श्याम फोटो, और 75 मुखौटों के फोटो अभिलेखागारीय संदर्भ के लिए तैयार किए गए हैं। लांस डेन संग्रह की 7,000 स्लाइडों की भी प्रतिकृतियां तैयार की गई हैं।

आलोच्य अवधि के दौरान, ऑडियो/वीडियो तथा निश्चल फोटोग्राफी के माध्यम से अस्सी से भी अधिक आयोजनों का महत्वपूर्ण प्रलेखन कार्य किया गया जिनमें "नेहरू-शांतिदूत" विषयक कठपुतली प्रदर्शन, "वाराणसी का हस्तशिल्प" और भोपाल के रंगश्री बैले ट्रूप द्वारा प्रस्तुत "मित्रलाभ" (विनिंग ऑफ फ्रैंड्स) शामिल हैं।

वीडियो-फिल्मों का सम्पादन

निम्नलिखित वीडियो-फिल्मों का सम्पादन किया गया :

1. बृहदीश्वर मंदिर में कुम्भाभिषेकम् ,

2. वाराणसी का हस्तशिल्प ,

3. हिमाचल प्रदेश के गद्दी लोगों का जीवन,

4. मित्रलाभ - भोपाल के रंगश्री बैले ट्रूप द्वारा ।

इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र की महत्वपूर्ण फिल्मों का "दूरदर्शन पर प्रसारण-प्रदर्शन"

दूरदर्शन इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र की चुनी हुई फिल्मों और अन्य कार्यक्रमों को मार्च 1998 से, बिना किसी वाणिज्यिक प्रयोजन के, दिखा रहा है। वर्ष 1998-99 के दौरान दूरदर्शन पर निम्नलिखित 21 कार्यक्रम प्रसारित किए गए :

	कार्यक्रम	प्रसारण की तारीख
1.	री-डिफाइनिंग दि आर्ट्स (कलाओं की पुन: परिभाषा)	16-03-98
2.	वाड. ता	23-03-98
3.	भीष्म साहनी के साथ साक्षात्कार	30-03-98
4.	गोरिपुआ	06-04-98
5.	कुटियट्टम (बालि-वधम्) भाग-1	20-04-98
6.	कुटियट्टम (बालि-वधम्) भाग-2	27-04-98
7.	मोमेंट्स एंड मेमॉरीज (क्षण एवं स्मृतियां)	04-05-98
8.	नाद नगरना उजाड़ो	18-05-98
9.	लाई-हरौबा	01-06-98
10.	गोपी भट्ट का तमाशा	08-06-98
11.	चित्र-विचित्र	15-06-98
12.	इंटरव्यू विद राजाराव (राजाराव के साथ साक्षात्कार)	26-06-98
13.	छम नृत्य : भाग-1	06-07-98
14.	छम नृत्य : भाग-2	20-07-98
15.	बिदेसिया	27-07-98
16.	कथाकलि : भाग-1	03-08-98
17.	कथाकलि : भाग-2	10-08-98
18.	कथाकलि : भाग-3	31-08-98
19.	कथाकलि : भाग-4	29-10-98
20.	कथाकलि : भाग-5	05-11-98
21.	कथाकलि : भाग-6	12-11-98
22.	कथाकलि : भाग-7	19-11-98

कलाकोश

(अनुसंधान और प्रकाशन तथा क्षेत्र अध्ययन प्रभाग)

केन्द्र के मुख्य अनुसंधान तथा प्रकाशन स्कंध के रूप में कार्य करते हुए कलाकोश प्रभाग कलाओं से जुडी बौद्धिक तथा पाठ्य परम्पराओं का उनके बहुस्तरीय एंव विविधविद्यापरक संदर्भों में अनुसंधान करता है। यह शास्त्र को मौलिक के साथ, दृश्य को श्रव्य के साथ और सिद्धान्त पक्ष को व्यवहार पक्ष के साथ जोड़ते हुए, कलाओं को एक सांस्कृतिक प्रणाली के समग्र ढांचे के भीतर स्थापित करने का प्रयास करता है।

इन उद्देश्यों को दृष्टिगत रखते हुए इस प्रभाग ने (क) उन मूल अवधारणाओं का पता लगाया है, जो समग्र भारतीय चिन्तन की मूलाधार हैं और जो सभी विषयों/शास्त्रों तथा जीवन के आयामों में व्याप्त हैं; (ख) मूल ग्रंथों की स्रोत सामग्री को जो अब तक अज्ञात, अप्रकाशित और अप्राप्य थी, अनुवाद के साथ मूल भाषा में प्रकाशित करने के लिए निर्धारित किया है; (ग) उन विद्वानों तथा विशेषज्ञों की कृतियों के प्रकाशन की योजना बनाई है जो अपने ही समग्रवादी दृष्टिकोण के माध्यम से अन्तर-सांस्कृतिक पद्धति तथा विश्वविद्यापरक नीति के कलात्मक परम्पराओं को समझने में अग्रणी रहे हैं; और (घ) एक विशेष परियोजना के अन्तर्गत एक 21 -खंडीय विश्वकोश के निर्माण की कार्यक्रम प्रारम्भ करने के लिए योजना का प्रारूप तैयार किया है।

प्रभाग का कार्य मुख्य रूप से चार बड़ी श्रेणियों में विभाजित किया जा सकता है :-

क.	कलातत्त्वकोश	:	आधारभूत अवधारणाओं का कोश और पारिभाषिक शब्दावलियां।
ख.	कलामूलशास्त्र	:	उन आधारभूत ग्रंथों की श्रृंखला जो भारतीय कलात्मक परम्पराओं की बुनियाद है और मूल ग्रंथ जो किसी कला-विशेष से संबंधित है।
ग.	कलासमालोचन	:	समीक्षात्मक पाण्डित्य तथा अनुसंधान की ग्रंथमाला; और
घ.	कलाओं के रूपक	:	(1) भारतीय कलाओं के रूपकों पर एक बहुखंडीय कृति और : (2) भारत की मुद्रांकन कलाओं पर एक परियोजना।
ङ.	क्षेत्र अध्ययन	:	(क) दक्षिण-पूर्व एशिया अध्ययन ; (ख) पूर्व एशिया अध्ययन ; (ग) स्लाविक और मध्यएशिया अध्ययन।

कार्यक्रम क: कलातत्त्वकोश

(भारतीय कलाओं की आधारभूत अवधारणाओं/संकल्पनाओं का कोश)

कलाकोश प्रभाग का पहला कार्यक्रम भारतीय कलाओं की आधारभूत अवधारणाओं का कोश है। ऐसे लगभग 250 पारिभाषिक शब्दों की सूची तैयार की गई है जो अनेक शास्त्रों के मूल ग्रंथों में व्यवहृत हुए हैं और जिनका बीज कलाओं में दृष्टिगोचर होता है। प्रत्येक अवधारणा का अनुसंधान अनेक शास्त्रों के मूल ग्रंथों के माध्यम से किया जाता है जिससे एक पारिभाषिक शब्द को चुना जा सके जिसका एक मुख्य अर्थ और व्यापक स्वरूप हो, लेकिन कालान्तर में उसी शब्द के अनेक अर्थ विकसित हो गए हों। ऐसे संकलन, विश्लेषण तथा पुनः एकत्रीकरण के द्वारा भारतीय परम्परा की मूलभूत एकता और उसके अनिवार्य अन्योन्याश्रय शास्त्रपरक स्वरूप का पुनर्निर्माण किया जा सकेगा। जैसा कि इससे पूर्व के प्रतिवेदन में बताया गया है, कलातत्त्वकोश का प्रथम खंड 1988 में प्रकाशित किया जा चुका है। इसमें आठ पारिभाषिक शब्दों का विवेचन किया गया है। इसका द्वितीय खंड जो दिक् तथा काल से संबंधित 16 पारिभाषिक शब्दों के बारे में है, मार्च, 1992 में प्रकाशित किया गया। इस कोश का तीसरा खंड वर्ष 1996-1997 में प्रकाशित किया गया। इसमें मूल तत्त्वों अर्थात महाभूतों के विषय में आठ लेख हैं।

कलातत्त्वकोश के चतुर्थ खंड के विभिन्न शब्दों : "इन्द्रिय", "धातु", "गुण-दोष", "अधिभूत-अधिदैव-अध्यात्म", "स्थूल-सूक्ष्म-पर" और "सृष्टि-स्थिति-प्रलय" पर सात लेख हैं वर्ष 1998 में प्रकाशित किया गया। इसी श्रृंखला में अगले-खंड निकालने के प्रयास भी भली-भांति प्रगति पर हैं। कलातत्त्वकोश के पंचम खंड के लेखों में से 10 लेख, जो "आकार-आकृति", "सकल-निष्कल", "रूप-प्रतिरूप", "प्रतिमा", "मूर्ति", "विग्रह", "अर्चा", "रेखा", "विति-चैत्य-स्तूप", "अलंकार", "प्रसाद", और "बंध-प्रबंध" के बारे में हैं, प्राप्त हो चुके हैं।

कलातत्त्वकोश के षष्ठम खंड और सप्तम खंड के लिए संदर्भ इकट्ठे करने का कार्य भी आलोच्य अवधि में प्रारम्भ किया जा चुका है। षष्ठम खंड में 10 शब्द, अर्थात् "आभास", "छाया", "अभिनय", "बिम्ब-प्रतिबिम्ब", "सादृश्य-सारूप्य", "व्यक्त-अव्यक्त", प्रतीक, लिंग, "वृत्ति-रीति-प्रतिबिम्ब" और "अनुकरण" और सप्तम खंड में 17 शब्द अर्थात "कलश", "कुण्ड", "गर्भ", "पदम", "मण्डल", "मुद्रा", "यंत्र", "यूप", "योनि", लता", वृक्ष", "वेदी-स्थण्डिल", "संस्थान", "स्थान और स्वास्तिक नन्दयावर्त" हैं।

कलातत्त्वकोश के अगले खंडों के प्रणयन के लिए विशेषज्ञ समिति की वार्षिक बैठक 12 दिसम्बर, 1998 को हुई। बैठक में कलातत्त्वकोश के सप्तम तथा अष्टम खंडों में शामिल किए जाने वाले पारिभाषिक शब्दों के बारे में अंतिम रूप से निर्णय लिया गया। वाराणसी के प्रो० विद्यानिवास मिश्र और डा० आर. सी. शर्मा, पुणे के डा० एच. जी. रानाडे, मैसूर के डॉ० आर. सत्यनारायण जैसे विख्यात विद्वानों ने विचार-विमर्श में भाग लिया।

कार्यक्रम ख: कलामूलशास्त्र

(कलाओं से संबंधित आधारभूत ग्रंथों की शृंखला)

कलाकोश प्रभाग का दूसरा दीर्घकालिक कार्यक्रम है—वास्तुकला, मूर्तिकला, चित्रकला से लेकर संगीत, नृत्य, नाट्य आदि तक की भारतीय कलाओं से संबंधित आधारभूत ग्रंथों का पता लगाना और उनका समालोचनात्मक सम्पादन करके टीका-टिप्पणियों तथा अनुवाद के साथ उन्हें कलामूलशास्त्र ग्रंथमाला के रूप में प्रकाशित करना।

वर्ष 1988-89 में कुछ प्रकाशनों के विमोचन के साथ इस कार्यक्रम का प्रारंभ करते हुए इस प्रभाग ने कलामूलशास्त्र की ग्रंथमाला के अन्तर्गत मार्च, 1999 तक कुल मिलकार 25 ग्रंथ प्रकाशित किए हैं।

वर्ष 1998-99 के दौरान जो ग्रंथ प्रकाशित किए गए वे हैं : "नर्तन-निर्णय" (तृतीय खंड), संस्कृत में भारतीय संगीत तथा नृत्य विषयक असाधारण ग्रंथ है ; इसका सम्पादन तथा अनुवाद प्रो० आर. सत्यनारायण ने किया है। "संगीतोपनिषत्सारोद्धार", चौदहवीं शताब्दी में पश्चिमी भारत में प्रणीत संगीतशास्त्र का ग्रंथ है; एलिन भाइनर ने इसका सम्पादन तथा अनुवाद किया है और "ताट्यायन-श्रौत-सूत्र" (तीन खंडो में) एक महत्वपूर्ण सूत्र ग्रंथ हैं; इसका सम्पादन तथा अनुवाद डा० एच. जी. रानाडे ने किया है।

"रसगंगाधर", "रागलक्षण", विष्णुधर्मोत्तरपुराण" का "चित्रसूत्र", "ईश्वरसंहिता", "चतुर्दण्डीप्रकाशिका", "पुष्पसूत्र" और "काण्व-शतपथब्राह्मण" (तृतीय खंड) की पाण्डुलिपियां प्राप्त हो चुकी हैं। और वे सम्पादन तथा मुद्रण की विभिन्न अवस्थाओं में हैं।

"रागविबोध", "तंत्रसमुच्चय", "तंत्रसारसंग्रह", "शतसहस्त्रिका प्रज्ञापारमिता", "भावप्रकाशन", "सरस्वतीकण्ठाभरण", और "वास्तुमण्डन", जैसे अनेक प्राचीन तथा मध्यकालीन ग्रंथों के समालोचनात्मक संस्करण तैयार करने का काम भी प्रगति पर है।

कार्यक्रम ग: कला समालोचन

कलासमालोचन ग्रंथमाला के अन्तर्गत ऐसे ग्रंथ प्रकाशित किए जाते हैं जिनमें कलाओं तथा सौन्दर्यशास्त्र के विभिन्न पक्षों पर समालोचनात्मक सामग्री समाविष्ट हो। इस शृंखला के एक भाग के अन्तर्गत ऐसे विख्यात विद्वानों की कृतियों पर ध्यान केन्द्रित किया जाता है जिन्होंने आधारभूत संकल्पनाओं का विस्तारपूर्वक निरूपण किया है, चिरस्थायी स्रोतों का पता लगाया है और नानाविध परम्पराओं के बीच संपर्क-सेतुओं का निर्माण किया है। अक्सर उनकी कृतियां सुलभ नहीं होतीं, कारण यह होता है कि या तो उनकी सभी मुद्रित प्रतियां बिक चुकी होती हैं, अथवा अंग्रेजी में उपलब्ध नहीं होती। कलासमालोचन ग्रंथमाला के अन्तर्गत, इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र ने ऐसे कुछ अमूल्य योगदानों को साधारण मूल्य वाले प्रकाशनों के माध्यम से उजागर करने का प्रयास किया है। आमतौर पर, कुछ चुने हुए लेखकों की चुनी हुई कृतियों के संशोधित तथा विषयानुसार पुनःव्यवस्थित संस्करण और अनुवाद इस ग्रंथमाला में प्रकाशित किए जाते हैं।

इस योजना के अन्तर्गत कार्य 1988 में दो एक पुस्तकों के प्रकाशन के साथ प्रारंभ हुआ और वर्ष 1998-99 तक कुल मिलाकर 38 पुस्तकें प्रकाशित की जा चुकी हैं। आलोच्य अवधि के दौरान, "बाराबुदुर", लेखक : पॉल मूस, अंग्रेजी में अनुवादक : ए. डब्ल्यू. मैक्डानैल्ड, और ए. के. कुमारस्वामी कृत "हिंदुइज्म एण्ड बुद्धिज्म", सम्पादक : के. एन. आयंगर और डा० राम. पी. कुमारस्वामी, कलासमालोचन ग्रंथमाला के अन्तर्गत प्रकाशित की गई।

इनके अतिरिक्त, आया दर्जन से अधिक पुस्तकें प्रकाशन तथा सम्पादन की भिन्न-भिन्न अवस्थाओं में हैं। इनमें से कुछ हैं : "जैन टेम्पल्स ऑफ दितवाड़ा एण्ड रणकपुर", लेखक : प्रो० सहदेव कुमार, "आइकॉनोग्राफी ऑफ दि बुद्धिस्ट स्कल्पचर ऑफ ओड़िसा", लेखक : प्रो० डॉनाल्डसन, आनन्द के. कुमारस्वामी कृत "ऐसेज ऑन वेदान्त", "ऐसेज ऑन जैन आर्ट", "बारोक इंडिया", लेखक : प्रो० जोस परैरा, और "दि सिटी एण्ड स्टार्स : कॉस्मिक अर्बन ज्योमेट्रीज सम्पादक : प्रो० जे० एम. मैलविले और डा० ललित एम. गुजराल," "आनन्द के. कुमारस्वामीज" बिब्लियोग्रफीज", और "किताब-इ-तसबीर-इ-शीशा।गरान बगैरह व बयान -इ-अलात-इ-अन्ह", अनुवादक तथा सम्पादक : डा० मेहर अफशान फारूकी ।

अन्य प्रकाशन

इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र के प्रकाशनों का एक कैटलॉग (सूचीपत्र) वर्ष 1998-99 के दौरान प्रकाशित किया गया।

कार्यक्रम घ: भारतीय कलाओं के रूपक

(एक पंचखंडीय कोश)

भारतीय कलाओं के रूपक

"भारतीय कलाओं के रूपक" कोश एक बहु-खंडीय परियोजना है जिसमें कुछ बीजभूत रूपकों, जैसे "बीज", "पुरूष", "स्कंध", "बिन्दु", "शून्य", आदि पर शोधकार्य समाहित होगा। इस परियोजना के अन्तर्गत इसके "बीज" विषयक प्रथम खंड के लिए संगृहीत सामग्री का सम्पादन कार्य प्रारम्भ किया जा चुका है। "पुरूष", विषयक अगले खंड के लिए सामग्री संकलित की जा रही है।

भारत की मुद्रांकन कलाएं

भारतीय सिक्कों के ऐतिहासिक तथा कलात्मक पक्षों से संबंधित व्यापक जानकारी से परिपूर्ण खंड, जो प्रो० बी० एन० मुखर्जी द्वारा तैयार किया गया है, इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र को प्राप्त हो चुका है। इसमें निम्नलिखित विषय समाविष्ट हैं :

(1) भारतीय मुद्रांकन कला का प्रलेखन ;
(2) सिक्कों की तालिका और शब्दानुक्रमाणिका ;
(3) एक प्रबन्ध-लेख : भारत की मुद्रांकन कला 1835 तक ;
(4) भारतीय सिक्कों के उत्कृष्ट नमूनों का एलबम

कार्यशाला

"पुरालिपिशास्त्र और पाण्डुलिपि विज्ञान" विषय पर छठी कार्यशाला केरल विश्वविद्यालय, तिरुवनन्तपुरम के प्राच्य शोध संस्थान एवं पाण्डुलिपि पुस्तकालय के सहयोग से, 8 से 27 मार्च, 1999 तक आयोजित की गई। इस कार्यशाला का उद्देश्य युवापीढ़ी के संस्कृत तथा प्राकृत भाषाओं के अध्येताओं को पुरातन/मध्यकालीन लिपियों का अर्थ निकालने, उनमें उपलब्ध ग्रंथों की समालोचना करने और उनके समालोचनात्मक संस्करण तैयार करने की विधि का प्रशिक्षण देना था।

इस छठी कार्यशाला का समस्त कार्यक्रम, उद्घाटन तथा समापन सत्रों सहित, कुल मिलाकर 33 सत्रों में विभाजित किया गया था। उनचालीस (39) प्रशिक्षणार्थियों ने इसमें भाग लिया, जिनमें से बारह प्रशिक्षणार्थी देश की भिन्न-भिन्न शिक्षा संस्थाओं से, चार इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र से और तेईस प्रशिक्षणार्थी तिरुवनन्तपुरम के स्थानीय अकादमिक निकायों से आए थे। लखनऊ विश्वविद्यालय के पुरातन इतिहास तथा पुरातत्व विभाग के सेवानिवृत्त प्रोफेसर डा० के० के० अधल्याल; श्री गंगानाथ झा संस्कृत विद्यापीठ, इलाहाबाद के डा० प्रकाश पाण्डेय; श्री शंकराचार्य संस्कृत विश्वविद्यालय, केलडि, केरल के उप-कुलपति प्रो० एन० पी० उन्नी; कलकत्ता विश्वविद्यालय की संस्कृत विभागाध्यक्ष डा० रत्ना बसु, वी. वी. आर. आई होशियारपुर के भूतपूर्व निदेशक प्रो० के. वी. शर्मा; भारत विद्या फ्रांसीसी संस्थान, पांडिचेरी के डा० एस. ए एस शर्मा; और पुणे के वैदिक साहित्य के प्रकांड पंडित प्रो० टी. एन. धर्माधिकारी ने इस कार्यशाला में अपने व्याख्यान दिए जिनके विषय थे: संस्कृत भाषा की संरचना, सभ्यता और महत्ता; पाडुलिपि विज्ञान का इतिहास, वैदिक ग्रंथों के समालोचनात्मक संस्करणों के विभिन्न सूचक तैयार करना; भिन्न-भिन्न कालों के राजनीतिक और सांस्कृतिक इतिहास के पुनर्निर्माण के लिए उत्कीर्ण शिला लेखों आदि का पठन तथा सम्पादन; पांडुलिपियों में त्रुटियों/अशुद्धियों के कारण; पाठ्य समालोचन के नियम; शारदा, नेवारी और ग्रंथ लिपियों का उद्भव, विकास और अर्थान्वय।

अध्येताओं का प्रशिक्षण

इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र के कलाकोश प्रभाग में सेवारत संस्कृत विद्वान/अध्येता डा० वी. एस. शुक्ल और डा० एस. चट्टोपाध्याय को हैमबर्ग विश्वविद्यालय के भारतीय तथा तिब्बती संस्कृति संस्थान में वहाँ के निदेशक प्रो० ऐल्ब्रेख्ट वेल्जर के अधीन ग्रंथ समालोचना में प्रशिक्षण पाने के लिए यू. एन. डी. पी. की योजना के अन्तर्गत सितम्बर से नवम्बर, 1998 तक तीन महीने के लिए जर्मनी भेजा गया।

कार्यक्रम ड. : क्षेत्र अध्ययन

इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र के क्षेत्र अध्ययन कार्यक्रम के अन्तर्गत, कलाकोश प्रभाग कुछ ऐसे विशिष्ट क्षेत्रों जैसे दक्षिणपूर्व एशिया, पूर्व एशिया, मध्य एशिया आदि पर ध्यान केन्द्रित करता है, जिनके साथ भारत के घनिष्ठ एवं सक्रिय संबंध रहे हैं। इस क्षेत्र में वर्ष 1998-99 के दौरान हुई प्रगति का ब्यौरा नीचे दिया गया है।

दक्षिण-पूर्व एशियाई अध्ययन

दक्षिण-पूर्व एशियाई विषय के मूर्धन्य विद्वान (स्व.) प्रो० एच. बी. सरकार द्वारा दक्षिण-पूर्व एशिया के इतिहास और संस्कृति विषय पर लिखे गए शोध पत्रों के संकलन को प्रकाशन के लिए अंतिम रूप दिया जा चुका है।

"भारत थाई कला" विषय पर एक संगोष्ठी 30 मार्च, 1999 को इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र में आयोजित की गई। इस संगोष्ठी का उद्घाटन भारतीय संस्कृति की अंतराष्ट्रीय अकादमी, नई दिल्ली के अध्यक्ष प्रो० लोकेश चन्द्र ने किया। भारत तथा थाईलैंड से आए 40 कलाविदों ने इसमें भाग लिया।

कलानिधि प्रभाग के मुख्य घटक हैं : एक उत्कृष्ट संदर्भ पुस्तकालय और सूचना प्रणालियों तथा मल्टीमीडिया डेटाबेस की सुविधाओं के साथ सांस्कृतिक अभिलेखागार। संदर्भ पुस्तकालय के पास मुद्रित पुस्तकों के अलावा, भारतीय तथा विदेशी स्रोतों से प्राप्त माइक्रोफिल्मांकित पाण्डुलिपियों का अद्वितीय संग्रह है और इसके अभिलेखागार में स्थापत्य, चित्रकला, मूर्तिकला संबंधी फोटोग्राफ, स्लाइडें तथा अन्य वस्तुएं और काफी बड़ी संख्या में ऑडियो/वीडियो रेकार्डिंग तथा अन्य सामग्रियों संगृहीत हैं।

पूर्व एशियाई अध्ययन

पूर्व एशियाई अध्ययन एकक के अन्तर्गत निम्नलिखित दो पुस्तकें प्रकाशित की गई :-

(1) "इन दि फुटस्टेप्स ऑफ जुआनजांग : तान युन-शान एंड इंडिया (जुआनजांग के पदचिन्हों के अनुसरण में : तान युन-शान और भारत), सम्पादक : प्रो० तान चुंग;

(2) "एक्रॉस दि हिमालयन गैप : ऐन इंडियन क्वेस्ट फॉर अंडरस्टैंडिंग चाइना" (हिमालयी अन्तराल के आर-पार : चीन को समझने के लिए एक भारतीय अन्वेषण), सम्पादक : प्रो० तान चुंग।

पहली पुस्तक में अधिकांशत : चीन विषय के समकालीन भारतीय विशेषज्ञों द्वारा लिखे गए साठ लेखों के अतिरिक्त, इस विषय पर भारतीय विद्वानों के विचार और चीन के विश्वविद्यालयों में भारतीय नेताओं द्वारा दिए गए तीन भाषण भी प्रकाशित किए गए हैं। यह प्रकाशन चीन तथा भारत के पारस्परिक संबंधों के अध्ययन में रूचि रखने वाले पाठकों के लिए एक अच्छे स्रोत-ग्रंथ का काम दे सकता है। इस पुस्तक का चीन संस्करण भी, जो प्रो० तान चुंग द्वारा संपादित है, हांगकांग विश्वविद्यालय द्वारा प्रकाशित कर दिया गया है।

दूसरी पुस्तक में प्राचीन ऐतिहासिक तथा आधुनिक संदर्भों के दृष्टिगत रखते हुए चीन विषय के भारतीय विद्वानों द्वारा चीनी संस्कृति के विभिन्न पक्षों पर लिखे गए अनेक विद्वत्तापूर्ण शोध-लेख प्रकाशित किए गए है।

इन प्रकाशनों का विमोचन विश्वभारती, शांतिनिकेतन में चीन भवन के संस्थापक निदेशक प्रो० तान-चुंग-शान की जन्म-शती मनाने के अवसर पर शांतिनिकेतन (पश्चिम बंगाल) में आयोजित एक विशेष समारोह में भारत

के महामहिम राष्ट्रपति माननीय श्री के. आर. नारायणन् द्वारा 7 नवम्बर, 1998 को किया गया। इस अवसर पर माननीय राष्ट्रपति श्री के.आर.नारायण द्वारा लिखित एक अन्य पुस्तक का भी विमोचन किया गया जिसमें इन प्रकाशनों के लिए सद्भावपूर्ण संदेश दिया गया था।

इसके अतिरिक्त, "ए क्रॉनोलजी ऑफ इंडिया-चाइना इंटरफेस थ्रू दि एजिज" (युग-युग से भारत-चीन पारस्परिक संबंधों का कालक्रम) नामक एक पुस्तक तैयार की जा रही है। इसका सम्पादन कार्य पेइचिंग विश्वविद्यालय के प्रो० गेंग चिनजेंग के सहयोग से प्रो० तान चुंग द्वारा किया जाएगा।

सांस्कृतिक आदान-प्रदान कार्यक्रमों के अन्तर्गत, चीन की एक युवा चित्रकारी लिंक्सी, जिसे वहां प्यार से "अद्भुत बालिका" कहा जाता है, नवम्बर, 1998 में भारत भ्रमण के लिए आमंत्रित की गई। कु० लिंक्सी को एक अत्यन्त कठिन विषय "अमिताभ का स्वर्ग" (पैरेडाइज ऑफ अमिताभ) पर चित्रकारी बनाने का गौरव/श्रेय प्राप्त है। इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र की सहायता से, लिंक्सी ने इंडिया इंटरनेशनल सेंटर और शांतिनिकेतन में अपनी चित्रकारियों की प्रदर्शनियां लगाई। इस एकक ने इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र में मार्च, 1999 में हांगकांग विश्व-विद्यालय क वाइस चांसलर प्रो० वोंग सुई-तुन का सार्वजनिक भाषण भी कराया। उनके भाषण का विषय था : "चीन के राष्ट्रीय अल्पसंख्यक"।

स्लाविक तथा मध्य एशियाई अध्ययन

इस एकक की स्थापना मध्य एशिया, रूस तथा भारत के बीच ऐतिहासिक अन्योन्यक्रियाओं तथा प्रभावों का अध्ययन करने के लिए की गई थी। यह एकक इस विषय पर भारत के बाहर से महत्वपूर्ण अनुसंधान तथा संदर्भ सामग्री इकट्ठी करने के लिए प्रयास करता रहा है।

तदनुसार, रूसी भाषा में उपलब्ध शोध-सामग्री इन दो संस्थाओं से माइक्रोफिशों पर प्राप्त करने के लिए आर्डर बराबर भेजे जाते हैं : सामाजिक विज्ञान में वैज्ञानिक सूचना संस्थान (इनियन), मास्को और इंटर'-डॉक्यूमेंटेशन कंपनी (आई. डी. सी.), लीडन, नीदरलैंड। अब तक इनियन से प्राप्त 97,177 माइक्रोफिशें और आई. डी. सी. से प्राप्त 11,527 माइक्रोफिशें संदर्भ प्रयोजनों के लिए इंडेक्स सिरीज के रूप में अलग-अलग खंडों में जिल्दबंद की जा रही हैं। इसके अलावा, विदेश मंत्रालय ने ताशकंद, उजबेकिस्तान आदि से ऐतिहासिक पुरालेखों की प्रतिलिपियां तैयार करने की एक परियोजना प्रारम्भ की है, और इसके उपरान्त इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र के एक परामर्शदाता ने संग्रहों का पता लगाने के लिए ताशकंद की यात्रा की।

पुस्तकालय स्लाविक तथा मध्य एशियाई क्षेत्र अध्ययन से संबंधित लगभग 16 सामयिक पत्र-पत्रिकाएं मंगाता रहा है, जिनमें से तीन जर्मन भाषा की और एक फ्रेंच भाषा की है।

इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र ने इस एकक की ओर से एसोशिएट प्रो० डा० अरूप बैनर्जी को म्यूजियम संग्रह के विषय पर आयोजित एक सम्मेलन में भाग लेने के लिए मास्को भेजा, जो प्राचीन सभ्यताओं के तुलनात्मक अध्ययन केन्द्र (रूसी विज्ञान अकादमी) द्वारा सितम्बर, 1998 में आयोजित किया गया था। डा० बैनर्जी ने सम्मेलन में, राष्ट्रीय संग्रहालय, नई दिल्ली में उपलब्ध स्टीन संग्रह के विषय में एक शोध-पत्र प्रस्तुत किया।

जनपद-सम्पदा

(क्षेत्रीय संस्कृतियों के संबंध में जीवन शैली अध्ययन तथा अनुसंधान करने वाला प्रभाग)

जनपद-सम्पदा प्रभाग कलाकोश प्रभाग के कार्यक्रमों के पूरक के रूप में कार्य करता है। इसका ध्यान शास्त्र के बजाय लघुस्तरीय संसक्त समाजों की समृद्ध और विविध रूप-रंगों में उपलब्ध धरोहर की कलात्मक अभिव्यक्तियों पर केन्द्रित रहता है। बीच-बीच में अनेक छोटे-बड़े सांस्कृतिक आन्दोलनों से गुजरते हुए इन समुदायों ने कला और संस्कृति के क्षेत्र में निरंतरता एवं परिवर्तनशीलता बराबर बनाए रखी है, जिसके फलस्वरूप अधिक कठोर, निर्जीव, गतिहीन तथा संहिताबद्ध परम्पराओं को जिन्हे "शास्त्रीय" कहा जाता है, अपने कायाकल्प के लिए प्रेरणा मिलती रही है और इस प्रकार सम्पदा प्रभाग के अनुसंधान कार्यकलापों का उद्देश्य इन कलाओं को उनके पारिभाषिक सांस्कृतिक, सामाजिक-आर्थिक संदर्भों में पुनः स्थापित करना है। दैनन्दिन जीवन से जुड़े लोकप्रिय भारतीय शब्द, जैसे "जन", "लोक", "देश", "लौकिक", "मौखिक", कार्यक्रम तैयार करने के मामले में महत्वपूर्ण सिद्ध होते हैं।

इस प्रभाग के कार्यक्रमों को विभाजन इस प्रकार है :-

(क) **मानवजाति वर्णनात्मक संग्रह** : इन संग्रहों में मूल, अनुकृतियां तथा रिप्रोग्राफिक प्रतिलिपियां बुनियादी स्रोत सामग्री के रूप में एकत्र की जाती हैं।

(ख) **बहुमाध्यमिक प्रस्तुतियां तथा गतिविधियां** : इन कार्यक्रमों के अन्तर्गत दो दीर्घाओं की स्थापना की जा रही है : (।) आदि दृश्य, जिसमें भारत तथा अन्य देशों की पूर्व-ऐतिहासिक शैल कला और (।।) आदि श्रव्य जिसमें संगीत एवं संगीतेतर ध्वनि की अभिव्यक्ति होगी। दूसरे शब्दों में दृष्टि तथा ध्वनि की ज्ञानेन्द्रियों आंख एवं कान से संबंधित आधारभूत संकल्पनाएं प्रस्तुत की जाएंगी।

(ग) **जीवन शैली अध्ययन** : ये कार्यक्रम (1) लोक परम्परा और (2) क्षेत्र सम्पदा नामक दो भागों में बंटे हैं। लोक परम्परा के अन्तर्गत, भारत के भिन्न-भिन्न आर्थिक क्षेत्रों में मनुष्य की जीवन शैलियों का अध्ययन किया जाता है। क्षेत्र सम्पदा के अन्तर्गत विशेष स्थानों पर मंदिर परिसरों के ऐसे अध्ययन की कल्पना की गई है जिसमें उनके भक्ति विषयक, कलात्मक, भौगोलिक और सामाजिक पक्षों को परस्पर जोड़ने वाली प्रक्रिया को भी ध्यान में रखा जाता है।

(घ) **बाल जगत** : इस अनुभाग के कार्यक्रमों का उद्देश्य बच्चों को जनजातीय तथा लोक संस्कृतियों की समृद्ध परम्परा तथा तत्संबंधी वास्तविकताओं से उनके घरेलू तथा स्कूली वातावरण के माध्यम से परिचित कराना है, जिनसे वे अब तक अछूते रहे हैं।

वर्ष 1998-99 में जनपद सम्पदा विभाग के द्वारा विभिन्न कार्यक्रमों में की गई प्रगति का ब्यौरा नीचे दिया गया है :

कार्यक्रम क : मानवजाति वर्णनात्मक संग्रह

मानव जाति वर्णनात्मक संग्रह से संबंधित कार्यक्रम के अन्तर्गत, वर्ष 1998-99 में निम्नलिखित सामग्रियां प्राप्त की गई :

(i) इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र के मानवजाति वर्णनात्मक संग्रह को समृद्ध बनाने के लिए, असम से दो मुखौटे, उड़ीसा से चार मुखौटे, गढ़वाले से अट्ठारह और मणिपुर से दो धातु के मुखौटे प्राप्त किए जिनमें से बारह अंशुन मुखौटे चीन के थे, छह मुखौटे अमेरिका के उत्तर-पश्चिमी तट के, दो कनाडा के और आठ जापान के थे।

(ii) महिलाओं के दैनिक जीवन और उनकी जीवन शैली में उनकी सर्जनात्मकता के कार्यक्रम के अन्तर्गम, अड़तीस चिकन कसीदाकारी पोशाकें प्राप्त की गई।

कार्यक्रम ख : बहु-माध्यमिक प्रस्तुतियां और गतिविधियां

इस कार्यक्रम के अन्तर्गत आयोजित प्रस्तुतियों तथा गतिविधियों का उद्देश्य हजारों वर्षों के दौरान भारतीय समाज द्वारा प्रस्तुत की गई कला सामग्री से जनता को अवगत कराना है। इस योजना का मुख्य कार्यक्रम (1) आदि दृश्य तथा (2) आदि श्रव्य नाम की दो दीर्घाओं का निर्माण करना है। शैलकला संबंधी गहन अनुसंधान आदि दृश्य दीर्घा का महत्त्वपूर्ण अंग है। नाद की आद्य अनुभूति, संगीत तथा वाद्यों का विवेचन आदि श्रव्य दीर्घा का प्रमुख कार्य है।

आदि दृश्य

इस कार्यक्रम के अन्तर्गत, इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र की मल्टीमीडिश शैलकला परियोजना के यूनेस्को परामर्शदाता प्रो० लॉरब्लाशें के साथ 24 से 30 नवम्बर, 1998 तक अनेक बैठकें हुई। यूनेस्को परामर्शदाता के साथ निम्नलिखित विषयों पर चर्चा हुई :

(क) भिरी शैलकला स्थल के विषय में आगामी संयुक्त प्रकाशन (भारत-फ्रांस का) ;

(ख) शैलकला के अध्ययन के लिए और फिर उसे विद्वानों तथा व्यापक रूप से आम जनता को प्रस्तुत करने के लिए कम्प्यूटर का उपयोग कैसे किया जाए ;

(ग) शैलकला के अध्ययन की रीतियों के विषय में कम्प्यूटर के साथ कौन सा शिक्षण कार्यक्रम रखा जा सकता है ;

(घ) एक शैलकला सीडी-रोम की आयोजना ।

इस कार्यक्रम के अन्तर्गत, डा० बंसीलाल मल्ला द्वारा सम्पादित एक प्रबन्ध ग्रंथ "कंजर्वेशन ऑफ रॉक आर्ट" (शैलकला का संरक्षण) प्रकाशित किया गया है।

भू-मंडलीय शैलकला सम्मेलन (1993) में प्रस्तुत किए गए पचपन शोधपत्रों के सम्पादन का कार्य प्रगति पर हैं।

आदि श्रव्य

आदि श्रव्य कार्यक्रम के अन्तर्गत, प्रो० एस. सी. मलिक द्वारा संपादित "ध्वनि" संगोष्ठी विषयक शोधपत्रों को भी प्रकाशित कर दिया गया है। इस खंड में ऐसी प्रस्तुतियां शामिल की गई हैं जो ध्वनि के उन नानाविध एंव जटिल संकल्पनात्मक आयामों का अनुसंधान करती हैं जो इसके रहस्यात्मक और परम्परागत आध्यात्मिक संदर्भों से लेकर इसके अद्यतन स्वरूपों में व्याप्त हैं।

आदि श्रव्य दीर्घा के गठन की संकल्पनात्मक आयोजना विकसित करने के उद्देश्य से विद्वानों, संगीतज्ञों एंव कलामर्मज्ञों के साथ प्रारंभिक विचार-विमर्श किया गया।

कार्यक्रम ग : जीवन शैली अध्ययन

(लोक परम्परा)

अब तक लोक परम्पराओं और उनसे संबंधित संस्कृतियों पर जो भी अनुसंधान/अध्ययन हुआ है वह सब अधिकतर एक ही दिशा में और एकांगी ही हुआ है, चाहे वह मानवशास्त्रीय दृष्टि से किया गया हो अथवा समाज विज्ञान, अर्थशास्त्र, सामाजिक, राजनीतिक-इतिहास या कला इतिहास की दृष्टि से। इन विषयों ने जीवन अनुभव के कुछ अंगों या कुछ आयामों का ही ध्यान रखा है, जीवन अनुभव की सम्पूर्णता का नहीं। जनपद सम्पदा प्रभाग एक नया दृष्टिकोण, एक नई पद्धति अपनाना चाहता है, और वर्तमान पद्धतियों की जॉच करके जीवन शैलियों के अध्ययन के लिए वैज्ञानिक मॉडल तैयार करने का प्रयास कर रहा है। यह दृष्टिकोण इस धारणा पर आधारित है कि जीवन अलग-अलग आयामों या इकाइयों में बंटा हुआ नहीं है और न ही कोई एक मॉडल किसी समुदाय के सांस्कृतिक जीवन की संपूर्ण झांकी प्रस्तुत कर सकता है। यह दृष्टिकोण संस्कृति को एक सीमांकित या सुनिश्चित स्थान में बहु-आयामी प्रणाली मानता है।

इन अध्ययनों का उद्देश्य प्राकृतिक परिवेश, दैनिक जनजीवन, वार्षिक पंचांग तथा जीवन चक्र, विश्व दृष्टिकोण, ब्रह्मांड विज्ञान, खेती तथा अन्य आर्थिक कार्य, सामाजिक संरचना, ज्ञान व कौशल, पारंपरिक प्रौद्योगिकी और कला अभिव्यक्तियों के बीच कई प्रकार के संबंध जोड़ना है। ये अध्ययन स्वरूप में बहुविषयक हैं और कलाओं के क्षेत्र में कौशलों और तकनीकों के अन्योन्याश्रय, भिन्न-भिन्न क्षेत्रों पर एक दूसरे के असर और जनजातीय, ग्रामीण तथा शहरी परम्पराओं, मौखिक या लिखित के पारस्परिक प्रभाव को प्रकट करते हैं।

उपर्युक्त लक्ष्यों को सामने रखकर और बहुविषयक रीति अपनाते हुए कई प्रायोजित परियोजनायें प्रारंभ की गई हैं। इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र के विद्वान् देश की विभिन्न संस्थाओं से लिए गए बहुविषयक अध्ययन दलों के साथ सहयोग एवं समन्वय स्थापित कर रहे हैं। उन लोगों के साथ एक सार्थक संवाद स्थापित किया गया है जो जातीय वनस्पति विज्ञान, जातीय इतिहास, हिमालय परिशीलन, मौखिक परम्पराओं के क्षेत्रों में कार्य कर रहे हैं।

उपर्युक्त लक्ष्यों को प्राप्त करने के लिए, लोक परम्पराओं की प्रायोगिक परियोजनाओं के कार्यक्रम ने वर्ष के दौरान प्रगति की है, जिसका ब्यौरा नीचे दिया गया है:-

सहयोगात्मक परियोजनाएँ (वाह्य परियोजनाएं)

निम्नलिखित परियोजनाएं जो अन्य संस्थाओं के सहयोग से पिछले वर्षों में प्रारम्भ की गई थी अब पूरी की जा चुकी है :-

(i) "गुरूवायुर मंदिर : केरल के सामाजिक -धार्मिक आन्दोलनों तथा सांस्कृतिक तंत्र में उसकी भूमिका", डा० पी. आर. जी. माथुर द्वारा ;

(ii) "मूलभूत ध्वनियां : संथालों के ध्वनि प्रतीकवाद का अध्ययन", प्रो० खगेश्वर महापात्र द्वारा ।

वर्ष 1998 - 99 के दौरान निम्नलिखित नई "सहयोगात्मक परियोजनाएं" हाथ में ली गई :-

(i) "जलीय ब्रह्मांड-विज्ञान और जन-संस्कृति", भारतीय सभ्यता का मानव वैज्ञानिक अध्ययन", डा० गोविन्द रथ द्वारा ;

(ii) "रोगहारी मंत्र", श्री डेसमॉण्ड एल. कर्मोफ्लांग;

(iii) "मैतई लोगों के तिथ्यानुसार धार्मिक अनुष्ठान एंव कर्मकांड", श्री एन. देवेन्द्र सिंह द्वारा।

आन्तरिक परियोजनाएं

इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र के द्वारा हाथ में ली गई निम्नलिखित आन्तरिक परियोजनाओं का कार्य वर्ष 1998-99 में प्रगति पर रहा :

(i) "भरमौर, चम्बा (हिमाचल प्रदेश) के गद्दी लोगों में दिक् और काल की सांस्कृतिक श्रेणियां,'' विषय पर एक प्रबन्ध ग्रंथ डॉ. मौली कौशल द्वारा तैयार किया जा रहा है।

(ii) "शरीर, गर्भाशय तथा बीज के बारे में संथालों का बोध,'' नामक शब्द कोश डॉ. गीता माथुर द्वारा तैयार किया जा रहा है।

(iii) "गढ़वाल हिमालय के स्थानीय लोक रंगमंच के प्रतिपादक के रूप में पाण्डव नृत्य शैली और अंग्रेजी अवॉगार्डे थिएटर : एक तुलनात्मक अध्ययन" विषय पर कु. ऋचा नेगी का पी. एच. डी. थीसिस गढ़वाल विश्वविद्यालय, श्रीनगर, गढ़वाल को प्रस्तुत किया जा चुका है।

(iv) "मिथिला के लोक-गीतों की संरचना और बोध: संगीत के मानवविज्ञान का विश्लेषणात्मक अध्ययन" शीर्षक पी. एच. डी. परियोजना के अन्तर्गत, श्री कैलाशकुमार मिश्र ने एक सौ अठत्तर लोक-गीतों को प्रलेखबद्ध किया है और उनमें से लगभग पचपन लोकगीतों का लिप्यंतरण किया जा चुका है।

संगोष्ठी

1. "राजभाषा : सांस्कृतिक संदर्भ"

भारत की स्वतंत्रता के स्वर्ण जयन्ती समारोहों के अवसर पर, इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र ने 13 अगस्त, 1998 को एक संगोष्ठी- "राजभाषा : सांस्कृतिक संदर्भ - आयोजित की। हिन्दी, संस्कृत, मानवविज्ञान और पर्यावरण अध्ययन आदि विभिन्न विषयों के विशेषज्ञ तथा इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र के शोध संकाय के अधिकारी राजभाषा के रूप में हिन्दी के सांस्कृतिक आयाम के विषय में विचार-विमर्श करने के लिए आमंत्रित किए गए। संगोष्ठी में भाग लेने वाले विद्वानों ने सामाजिक तथा सांस्कृतिक परिस्थितियों पर ध्यान केन्द्रित करते हुए ऐतिहासिक तथा सामयिक संदर्भों में हिन्दी की स्थिति पर विस्तारपूर्वक चर्चा की।

2. "तीर्थयात्रा और जटिलता"

"तीर्थयात्रा और जटिलता" विषय पर 5 से 9 जनवरी, 1999 तक एक अंतरराष्ट्रीय संगोष्ठी का आयोजन किया गया, जिसमें कनाडा, जर्मनी, इटली, जापान, मेक्सिको, नेपाल, स्विटजरलैंड, यूनाइटेड किंगडम, संयुक्त राज्य अमेरिका और भारत से प्रतिनिधियों ने भाग लिया। इस संगोष्ठी में चर्चाएं विषय के इन तीन पक्षों पर केन्द्रित रहीं : (1) मानविकी विषयों और विज्ञानों का परस्पर संबंध; (2) तीर्थयात्रा के ऐतिहासिक आयाम, और (3) दिक् और काल में गतिशीलता ।

प्रकाशन

आलोच्य अवधि में निम्नलिखित प्रकाशन निकाले गए :

(1) प्रो० एम. ए. ढाकी द्वारा तृतीय निर्मल कुमार बोस स्मारकीय व्याख्यान, जिसमें "उड़ीसा के स्थापत्य के अध्ययन में बोस का योगदान" और "वैराचनी का लक्ष्य समुच्चय और कलिंग का मध्यकालीन स्थापत्य" पर विशेष रूप से प्रकाश डाला गया है।

(2) विहंगम (इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र की समाचारपत्रिका) खंड- 6

(3) "लाइफ-स्टाइल एंड ईकोलजी" (जीवन शैली और पारिस्थिति विज्ञान) सम्पादक प्रो० वैद्यनाथ सरस्वती।

क्षेत्र-सम्पदा (प्रादेशिक धरोहर)

कतिपय प्रदेश/क्षेत्र समय के साथ-साथ सांस्कृतिक केन्द्रों के रूप में विकसित होते गए हैं और उनसे आकर्षित होकर संसार के सभी भागों से लोग वहां आते रहे हैं। वे आवागमन के मुख्य केन्द्र रहे हैं। वहां लाने और ले जाने वाली दोनों तरह की शक्तियां काम करती रही हैं और उन्होंने केन्द्र स्थान का काम किया है, स्थान की व्यवस्था करने के साथ-साथ उन्होंने गतिशीलता और पारस्परिक क्रिया व प्रभाव को

प्रेरित किया है। अक्सर कोई मंदिर या मस्जिद यहां का भौतिक या भावात्मक आकर्षण रहा है। अब तक ऐसे केन्द्रों का अध्ययन, काल निर्णय, इतिहास, धर्म या अर्थशास्त्र जैसे किसी एक विषय तक ही सीमित या एकांगी रहा है, सर्वसम्पूर्ण नहीं, जिससे सृजनात्मक कलाओं के क्षेत्र मे बहुविध कार्यकलाप संचालित होते हैं। इसलिए क्षेत्र सम्पदा प्रभाग के अन्तर्गत किसी स्थान विशेष या मंदिर और उसकी "इकाइयों" के अध्ययन की ही कल्पना नहीं की गई बल्कि एक केन्द्र विशेष के भवित विषयक, कलात्मक, भौगोलिक या सामाजिक पक्षों को परस्पर जोड़ने की प्रक्रिया को भी कार्यक्रम में शामिल किया गया है। इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र ने दो ऐसे केन्द्रों को अध्ययन के लिए चुना है जो इस प्रकार हैं उत्तर भारत में ब्रज और दक्षिण भारत में बृहदीश्वर मंदिर।

१. ब्रज प्रकल्प

इस क्षेत्र के दस मंदिरों का स्थापत्य संबंधी प्रलेखन कार्य पूरा हो चुका है। और चुने हुए अन्य मंदिरों में यह कार्य प्रगति पर है।

इस परियोजना के अन्तर्गत, मोनिका हॉर्स्टमैन द्वारा तैयार किया गया प्रबन्ध ग्रंथ "इन फेवर ऑफ गोविन्द देव जी" (गोविन्द देव जी के अनुग्रह में) प्रकाशन की अंतिम अवस्था में है। इस ग्रंथ में गोविन्द देव मंदिर से संबंधित, विशेष रूप से भूमि अनुदान तथा तत्संबंधी अन्य मामलों से संबंधित अनेक महत्वपूर्ण ऐतिहासिक प्रलेख दिए गए है।

डा० प्रेमलता शर्मा की हिन्दी टीका के साथ "भक्तिरसामृत सिन्धु" का द्वितीय खंड प्रेस में है।

२. बृहदीश्वर

मंदिर में कर्मकांड में प्रयुक्त होने वाले तेवरम मंत्रों का साठ मिनट का टेप रिकार्ड तैयार किया जा चुका है।

पांडिचेरी के फ्रांसीसी संस्थान के स्व. डा० एफ. एल. हीयनल्ट द्वारा बृहदीश्वर मंदिर का प्रतिमा विज्ञान (दि आइकॉनोग्राफी ऑफ बृहदीश्वर टेम्पल) विषय पर तैयार किए गए खंड का सम्पादन किया जा रहा है। इस मंदिर के "कुम्भाभिषेकम्" उत्सव की फिल्म अंतिम रूप से संपादित की जा चुकी है।

कार्यक्रम घ : बाल जगत

इस कार्यक्रम का उद्देश्य पुत्तलियों, पहेलियों तथा खेलों जैसे विभिन्न क्रियाकलापों के माध्यम से बच्चों को परम्परागत कलाओं की समृद्ध धरोहर से परिचित कराना है, जो आमतौर पर स्कूली पाठ्यक्रम में शामिल नहीं है।

पंचतंत्र विषयक प्रदर्शनी के संबसंध में, इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र द्वारा सितम्बर-अक्तूबर, 1998 में स्कूली बच्चों के लिए प्रदर्शनी स्थल पर ही चित्रकारी तैयार करने की प्रतियोगिता आयोजित की गई।

रंगश्री लिटिल बैले ट्रूप ने "दि विनिंग ऑफ फैंड्स" शीर्षक अपनी प्रस्तुति द्वारा "पंचतंत्र" प्रदर्शनी को सम्पूर्णता प्रदान की। पंचतंत्र की "मित्रलाभ" कथा पर आधारित यह कार्यक्रम 23 सितम्बर, 1998 को लिटिल थिएटर ऑडिटोरियम (गई दिल्ली) में प्रस्तुत किया गया।

बच्चों के लिए एक अन्य उल्लेखनीय कार्यक्रम था : चाचा नेहरू पर एक पुत्तलिका प्रदर्शन, जो श्रीराम इन्स्टिट्यूट ऑफ शैडो थिएटर (अंगुल, उड़ीसा) द्वारा इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र, गांधी दर्शन तथा बाल भवन में भी आयोजित किया गया।

कलादर्शन
(प्रचार-प्रसार एवं प्रस्तुतिकरण प्रभाग)

कलादर्शन प्रभाग इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र का चौथा प्रभाग है। यह विभिन्न संस्कृतियों, विषयों/शास्त्रों, समाज के भिन्न-भिन्न स्तरों एवं नानाविध कलाओं के बीच रचनात्मक संवाद को सुकर बनाने के लिए स्थान एवं मंच की सुविधा उपलब्ध कराता है। अपने कार्यक्रमों के माध्यम से इस प्रभाग ने अभिव्यक्ति तथा प्रस्तुति की एक अद्भुत शैली विकसित की है। यह प्रभाग इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र के उद्देश्यों को बढ़ावा देने के लिए एकीकृत विषयों तथा संकल्पनाओं पर प्रदर्शनियों, अन्तर्विषयक संगोष्ठियों और प्रस्तुतियां आयोजित करता है।

कार्यक्रम क : संग्रह

इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र की ओर से उसकी संकल्पनात्मक परिधि के भीतर रहते हुए प्रदर्शनियां आयोजित करने का दायित्व इस कलादर्शन प्रभाग पर है। इन प्रदर्शनियों के आयोजन से पहले व्यापक रूप से शैक्षिक/अकादमिक तथा अनुसंधान कार्य किया जाता है। प्रदर्शनी के बाद उससे संबंधित पाठ्यसामग्री, चित्रफलक तथा उसमें प्रदर्शित वस्तुएं प्रदर्शनी अभिलेखागार में रख दी जाती है, जहां से उनका उपयोग उन विद्वानों/अध्येताओं तथा संस्थाओं द्वारा संदर्भ तथा स्रोत सामग्रियों के रूप में किया जाता है जो इन अकादमिक जानकारियों का लाभ उठाना चाहते हैं। प्रदर्शनियों में प्रदर्शित वस्तुएं तथा सहायक सामग्रियां प्रदर्शनी अभिलेखागार से समय-समय पर उधार दी जाती हैं। वर्ष 1998-99 के दौरान आयोजित प्रदर्शनियों, संगोष्ठियों और व्याख्यानों के माध्यम से संग्रही नानाविध सामग्रियों का वर्गीकरण करने, उन्हें अवाप्ति रजिस्टर में चढ़ाने और उन्हें पुनः व्यवस्थित करने के प्रयत्न जारी रहे।

कार्यक्रम ख : संगोष्ठियां और प्रदर्शनियां

1. संगोष्ठियां

कलादर्शन प्रभाग ने (1) "भारत की सांस्कृतिक धरोहर/सम्पदा की पहचान और वृद्धि : विकास के प्रबन्ध में एक आन्तरिक आवश्यकता" विषय पर 19 से 24 नवम्बर, 1998 तक ; (2) "प्रसार : योजनाएं, समस्याएं और संभावनाएं" विषय पर 21-2-1998 को : (3) "तीर्थयात्रा तथा जटिलता" विषय पर 5 से 9 जनवरी, 1999 को और (4) "भारत-थाई कला" विषय पर 30 मार्च, 1999 को आयोजित संगोष्ठियों के लिए अन्य प्रभागों को संभारतीय तथा अन्य सहायता प्रदान की।

प्रदर्शनियां

वर्ष 1998-99 के दौरान, कलादर्शन प्रभाग ने कुल मिलाकर ये छह प्रदर्शनियां आयोजित की (1) पंचतंत्र; (2) जल: जीवन संधारक; (3) हमारी स्थापत्य धरोहर/सम्पदा; (4) नाद : एक ध्वन्यात्मक अनुभूति; (5) थंका : स्टोक पैलेस म्यूजियम, लद्दाख से बौद्ध चित्रकारियां, और (6) लोकातीत उत्कर्ष। इनके अलावा, अनेक फिल्म-शो और पुत्तलिका प्रदर्शन किए गए।

(I) पंचतंत्र

पंचतंत्र विषयक बहु-भाषी पुस्तकों, चित्रकारियों और मल्टीमिडिया प्रस्तुतियों की एक प्रदर्शनी इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र द्वारा 20 से 24 सितम्बर, 1998 तक नई दिल्ली में आयोजित नौवें विश्व पुस्तक मेले के अवसर पर अखिल भारतीय लेखक तथा चित्रकार संगम "आइविआ" के सहयोग से आयोजित की गई। इस प्रदर्शनी का प्रमुख आकर्षण था : पंचतंत्र की कहानियों की कलाकारी चित्रकारियों में प्रस्तुति, जो सिकंदराबाद (आन्ध्र प्रदेश) के कलाकारों द्वारा विशेष रूप से इस प्रदर्शनी के लिए ही बनाई गई थी; और गुजरात के प्रसिद्ध चित्रकार हकूशाह द्वारा इसी विषयपर आकर्षक रंगों में बनाई गई समकालीन चित्रकारियां। पंचतंत्र की कहानियों पर आधारित पेपरमैशी (कागज की कुट्टी) के भित्तिचित्र भी इस प्रदर्शन में प्रस्तुत किए गए। अपने आधुनिक स्वरूप में, पंचतंत्र की कहानियां सी.डी.रोम और वीडियो के माध्यम से भी प्रस्तुत की गई। इसी विषय पर स्कूली बच्चों द्वारा प्रदर्शनी स्थल पर ही तत्काल चित्रकारी बनाने की प्रतियोगिता में भाग लेने वालों की बड़ी संख्या के कारण प्रदर्शनी में सक्रियता आ गई। इस प्रतियोगिता के माध्यम से 600 से भी अधिक चित्रकारियां एकत्रित की गई।

इस प्रदर्शनी का अच्छा स्वागत हुआ। कुछ दर्शकों का टीका-टिप्पणियां नीचे दी गई हैं :

"आबालवृद्ध सभी को समान रूप से "पंचतंत्र" से परिचित कराने के इस उत्कृष्ट एंव अभिनव उपक्रम से मैं अत्यनत प्रभावित हुई हूँ ।"

-- गीता गुजरात

"अभिनन्दन; बच्चों के लिए अच्छा कार्य देखने को बहुत कम मिलता है। इसलिए भी इस कार्य का महत्व बहुत बढ़ जाता है।"

--- हकू शाह

"बच्चों और बड़ों को समान रूप से बुनियादी और आवश्यक शिक्षा देने की दिशा में, निस्सन्देह, यह एक सफल प्रयास है।"

-- वाई. के. गुप्त

"यह एक बहुत ही बढ़िया प्रदर्शनी है और स्कूलों में भी दिखलाई जानी चाहिए।"

-- वैशाली गुप्ता

"यह अपनी तरह की एक अनुपम प्रदर्शनी है; ऐसी प्रदर्शनी मैंने पहले कभी नहीं देखी। जीवन-निर्माण के प्रारंभिक वर्षों में बच्चे इसे देखकर बहुत लाभान्वित होंगे। इसे व्यापक रूप में दिखाया जाना चाहिए। आयोजकों को हार्दिक बधाइयां।

-- श्रीमती शान्ता कृष्णन्
जवाहर लाल नेहरू विश्वविद्यालय

"शानदार ! कलमकारी चित्रकारियां तो गज़ब की थीं। सी. डी. रोम भी बहुत अच्छा था।"

-- गीता अहूजा

"अति उत्तम। एक बहुमूल्य संग्रह और एक प्रशंसनीय प्रयास"।

-- डी सौगेया

(II) "जल : जीवन संधारक" : छायाचित्रों की एक प्रदर्शनी

इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र ने 16 से 29 अक्तूबर, 1998 तक "जल : जीवन संधारक" शीर्षक से एक और प्रदर्शनी लगाई जिसमें श्री अशोक दिलवाली के चुने हुए फोटोग्राफों को प्रदर्शित किया गया। इस प्रदर्शनी में ओस, झीलें, नदियों, बर्फ, जलप्रपात, पाला, पहाड़ी, झरने, ओलावृष्टि, बादल, कोहरा, कुहासा आदि विभिन्न रूपों में जल की उपस्थिति में प्रकृति के करिशमों को चित्रित करने का प्रयास किया गया।

कला प्रेमियों तथा समालोचकों में इस प्रदर्शनी का अच्छा स्वागत हुआ। कुछ दर्शकों की टीका-टिप्पणियां नीचे दी गई हैं :

"चुटकी भर में "ब्लेक" की शाश्वतता चिरंतन हो गई। विस्मयकारी और आह्लादक। बधाइयां ।

-- वी. एन. नारायण,
हिन्दुस्तान टाइम्स

"दाहिनी आंख की पकड़ और एकाग्रता महान एंव कल्पनातीत है। धन्यवाद अशोक दिलवाली।

-- एस. के. तेरोटिया
183, सैनिक फार्म, नई दिल्ली

"अतिउत्तम फोटोग्राफ" ।

-- शरत कुमार

"बढ़िया फोटो और बहुत अच्छी छपाई। "फ्यू ड्राप्स इन ए वेब" और "मैल्टिंग स्नो - सिक्किम" चित्र स्वाभाविकता से परिपूर्ण हैं।"

-- डी. जे. राय

"दितवाली के कैमरा ने प्रकृति के ऐसे-ऐसे दृश्यों को कैद कर लिया है जिन्हें वास्तविक जीवन में नंगी आखें देखकर भी नहीं देख सकतीं।"

-- सुरेन्द्र स्वैन

"फोटोग्राफर ने अनेक फोटों में हमारे प्राकृतिक तत्व "जल" के वस्तुपूरक भावों को चित्रित करने के लिए पर्याप्त [illegible] धैर्य रखा है। कैमरा द्वारा प्रदर्शित रंग-संयोजन काफी अद्भुत है। ऐसा आश्चर्यजनक संयोजन देखने को बहुत कम मिलता है।"

--रामानी स्वर्णा

"अद्भुत। ये फोटोग्राफ होने के साथ-साथ और भी बहुत कुछ हैं। इनमें से प्रत्येक फोटोग्राफ अत्यन्त सतर्कतापूर्वक बनाई गई चित्रकारी है। ऐसे सुन्दर प्रर्दशन के लिए अनेकों धन्यवाद ।"

-- बारेन राय

"फोटोग्राफ जल के विभिन्न परिप्रेक्ष्य प्रस्तुत करते हैं। श्री दितवाली को राजस्थान तथा केरल में जल के परिप्रेक्ष्य को भी छायांकित करना चाहिए।"

-- एम. एच. जी. कुमार

(III) हमारी स्थापत्य धरोहर

इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र द्वारा छायाचित्रों की ही एक अन्य प्रर्दशनी 3 से 21 नवम्बर, 1998 तक लगाई गई। इसका शीर्षक था : "हमारी स्थापत्य धरोहर सम्पदा" ये फोटोग्राफ श्री अनिल दवे द्वारा खींचे गए थे। इन फोटोग्राफों में श्री दवे ने भारत के सुन्दर तथा प्रभावशाली भवनों को छायांकित करने का प्रयास किया था। प्रत्येक फोटोग्राफ, वस्तुतः, स्थापत्य सौन्दर्य के साथ-साथ प्यार मौहब्बत और शौक की कहानी कहता है।

प्रदर्शनी को बहुत अधिक पसंद किया गया। कुछ दर्शकों की टीका-टिप्पणी नीचे दी गई है : -

"यह एक उच्चस्तरीय शानदार एवं उत्प्रेरक प्रदर्शनी है। धन्यवाद।"

-- ए. पी. कनविंदे

"यह भारत के बीते युग की स्पष्ट एंव सच्ची प्रस्तुति है जिसमें स्थापत्य सौन्दर्य के साथ-साथ भीतरी साज-सज्जा का विविधतापूर्ण चित्रण किया है।"

-- हरि सिंह

"फोटोग्राफ उत्कृष्ट कोटि के हैं। हमारी स्थापत्य संपदा पर इस शानदार प्रदर्शनी के लिए इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र निश्चय ही प्रंशसा का पात्र है।"

-- डा० बी. एल. नगायच

"यह एक अत्यन्त अर्थपूर्ण प्रर्दशनी है; इसमें पुरानी संस्कृति एंव परम्परा का चित्रण है। फोटोग्राफ यथार्थता से परिपूर्ण होने के साथ-साथ अत्यन्त प्रदर्शनीय हैं। यह प्रदर्शनी बहुत ही आकर्षक एंव रुचिकारक है।"

-- सीमा शर्मा
भारतीय राष्ट्रीय अभिलेखागार

"अत्युत्तम प्रस्तुति। भारत की स्थापत्य संपदा को बहुत सोच विचारकर प्रस्तुत किया गया है। श्री दवे अपने कलात्मक एवं अत्यन्त कल्पनाशील कार्य के लिए बधाई के पात्र है। उन्होंनें ऐसी चीजों में सौन्दर्य को अवलोकन किया है जो शीघ्र ही लुप्त होने वाली हैं।"

-- के. पी. सिंह

"ऐसी चीजें जिन्हें लेते हुए हम सोचते -विचारते नहीं कभी-कभी बहुत आनन्द देती हैं। मैं वास्तव में अत्यन्त सावधानीपूर्वक सोच-विचारकर किए गए कार्य का प्रंशसक हूँ।"

-- आर. के. जैन

"फोटो अच्छे हैं मगर आकाश को अनावश्यक रूप में बदल दिया गया है।"

-- सुनीता मोदी

"यह तो आकाशीय नाटक की भारतीय संकल्पना का ही एक बलवर्द्धक कोश है।"

-- सोनाल साहनी

(IV) नाद : एक ध्वन्यात्मक अनुभूति

ध्वनि प्रस्तुतियों की एक अद्वितीय प्रदर्शनी "नाद- एक ध्वन्यात्मक अनुभूति" - मैक्समूलर भवन के सहयोग से 10 से 25 दिसम्बर, 1998 तक आयोजित की गई।

कुछ दर्शकों की टीका-टिप्पणियां नीचे दी जा रही हैं :

"मैंने सोचा था उससे कहीं ज्यादा अच्छी निकली; इसका अधिक प्रचार होना चाहिए ताकि दूसरे लोग भी इसका अनुभव कर सकें।

-- सीतू सिंह

"यह ध्वनि प्रतिष्ठापन पहाड़गंज या इंडिया गेट जैसे किसी शोरगुल भरे इलाके में होगा।"

-- अतुल मुटाटकर

"ध्वनि और मौन एक दूसरे के पूरक हैं। यह एक चामत्कारिक अनुभव है। आप मुझे इन सभी फलकों के पाठ का एक सैट देने की कृपा करेंगे। धन्यवाद।"

-- एच. एस. सिद्धू

"आज की दुनिया में ध्वनि रूपों का एक उत्कृष्ट अनुभव । यह हमें दुनिया के एक बिल्कुल अलग पहलू का बोध कराता है। उत्तम विचार! बधाइयां।

-- वाईस. ए. वाइकीम

"यह अपने किस्म की एक बेजोड़ प्रदर्शनी है। इससे मुझे आध्यात्मिक प्रसन्नता और शांति मिली है। मैं इसकी प्रशंसा इसलिए भी करता हूं क्योंकि यह प्राचीन हिन्दूधर्म के आधारभूत दर्शन पर आधारित है जिसमें मुक्ति और मानसिक शांति का विशद विवेचन किया गया है। मंत्रों और "ओम्" का उच्चार अत्यन्त आनन्दायक और हृदयंगम करने योग्य है। मैं उत्तम मार्गदर्शन के लिए अभिनन्द और अभिनव मेनन का आभारी हूं।"

-- आनन्द बर्द्धन

"यह दिल्लीवासियों के लिए एक नया अनुभव है। हम एक ऐसे क्षेत्र में रह रहे हैं जो इतना अधिक ध्वनि प्रदूषित है कि वहां पक्षियों, प्राकृतिक स्वरों की सूक्ष्म ध्वनियों को सुना ही नहीं जा सकता। मैं इस प्रतिष्ठापन द्वारा बहुत अभिप्रेरित हुआ हूं।"

-- मनीष मोहन

"एक विलक्षण संकल्पना; मूलपाठ को घटाकर कम किया जा सकता था; फिर भी इस अद्भुत प्रयास के लिए धन्यवाद।"

-- उपाति नन्दा

(V) थंका-स्टोक पैलेस म्यूजियम, लद्दाख से बौद्ध चित्रकारियां

इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र ने नामग्याल लद्दाखी कला एवं संस्कृति शोध संस्थान (निरलैक) के सहयोग से अपने परिसर में 10 से 27 फरवरी, 1999 तक "थंका" शीर्षक से बौद्ध चित्रकारियों की प्रदर्शनी का आयोजन किया। पांच शताब्दी पहले के लद्दाखी चित्रकारियों की कलात्मक परिपक्वता का उदाहरण प्रस्तुत करने वाले पैंतीस "थंका" चित्र इस प्रदर्शनी में प्रस्तुत किए गए। कहा जाता है कि ये चित्रकारियां लद्दाख के राजा ताशी नामग्याल के शासन काल (1500-1530) में बनाई गई थीं। ये उत्कृष्ट चित्र आज परम्परागत थंका चित्रकारियों की दुनिया के बेजोड़ नमूने हैं।

कुछ दर्शकों की टीका-टिप्पणियां नीचे दी गई हैं :

"एक महान कलात्मक धरोहर। हमारा सौभाग्य है कि हमें यहां देखने को मिली। इन चित्रकारियों की गहराइयों को समझने के लिए इन्हें तीन-चार बार देखना होगा।"

-- डी. एन. चौधरी

"लद्दाख की प्राचीन थंका चित्रकारियों को एक अद्वितीय एवं विस्मयकारी प्रदर्शन। इससे सदियों पहले के लद्दाखियों की महान सौन्दर्योपलब्धि का पता चलता है। इस शानदार प्रदर्शनी के लिए मैं नामग्याल संस्थान तथा इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र दोनों को बधाई देता हूं।"

-- कर्ण सिंह

"यह संग्रह बहुत संभालकर रखा गया है। इसके अभिरक्षक प्रशंसा के पात्र हैं।"

-- ओ. पी. टंडन

"मनमोहक ! मैंने देखा कि कुछ कहानियां जातकों से संबंधित हैं और कथाएं संस्कृत में हैं।"

-- चन्दा राजन

"चित्रकारियों में परिपूर्णता और यथार्थता की चरमावस्था दृष्टिगोचर होती हैं।"

-- अजय कुमार

"1500-1530 के 35 थंका चित्रों को देखकर मन आनन्द विभोर हो गया। यह सोचकर वास्तव में बड़ा आश्चर्य होता है कि इन चित्रकारियों में इस्तेमाल किए गए विस्मयकारी रंगों को स्थानीय रूप से इस्तेमाल किए गए विस्मयकारी रंगो को स्थानीय रूप से उपलब्ध साधारण चीजों से बनाया गया था। इन थंका चित्रों को सुरक्षित रखने का तरीका भी निस्संदेह बहुत ही उन्नत रहा होगा। प्रदर्शनी में मेरा हर पल आनन्ददायक था। अब मैं निकट भविष्य में स्टोक पैलेस भी देखना चाहूंगा।"

-- अरविन्द कुमार

"हमारे लद्दाख प्रदेश की महान कलात्मक धरोहर को भव्य रूप से सुविचारित योजना के साथ सुन्दरतापूर्वक प्रदर्शित किया गया है।"

-- एयर वाइस मार्शल कपिल काक

(VI) लोकतीत उत्कर्ष

"लोकातीत उत्कर्ष" (ट्रान्सैंडेन्स) नामक यह प्रदर्शनी, जिसमें श्री सुनील आदेसरा के द्वारा खींचे गए शानदार फोटोग्राफ प्रदर्शित किए गए थे, इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र के परिसर में स्थित माटीघर में 9 से 21 मार्च, 1999 तक लगाई गई थी। ये छायाचित्रों प्रकृति की अव्यक्त सर्जनात्मक प्रक्रिया में ऊर्जा की प्रचुरता तथा प्रफुल्लता को प्रतिबिंबित करते हैं।

कुछ दर्शकों की टीका-टिप्पणियां नीचे दी गई हैं :

"सुनील जी ने हममें से बहुतों को जो दृश्य रूप से अन्धे हैं, देखने की विलक्षण रीति दिखलाई है। यदि हम उनकी तरह ही प्रकृति का अवलोकन कर सकें तो उससे हमारे जीवन को एक नया आयाम मिलेगा और वह अधिक "दृष्टि" मिले, यही मेरी मनोकामना है। आप बहुत सुन्दर काम कर रहे हैं, कृपया जारी रखिए।"

-- अशोक दिलवाली

"वाह ! क्या जगह पाई है। और वह भी गुफा की दीवार जैसी, आदिकालीन, गारे की शक्ति से सुशोभित !

-- शान कादरी

"एक अति उत्तम प्रदर्शन, उच्च व्यावसायिक कौशल से सम्पन्न। भारत की समृद्ध धरोहर का एक शानदार नमूना; बस करते रहिए।"

-- कैप्टेन प्रवीन डावर

"आपने प्रकृति को अत्यन्त संवेदनाशीलता के साथ अभिव्यक्त किया है। बधाइयां।"

-- सिद्धार्थ [illegible]

"आपने जो सुन्दर चित्र छायांकित किए हैं, वे रहस्यवाद और जीवन दर्शन की विज्युअल/दृश्य अभिव्यक्ति हैं। जिन्हें हम कौवों के रूप में देखते हैं उन्हें यहां ठोस रूप दिया गया है। आपको अपने फोटो कार्य के लिए और इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र को आपके इस कार्य को हमारे लिए प्रदर्शित करने के लिए धन्यवाद।"

-- पी. जे. लवकरे

"गैलरी है तो सुन्दर पर रोशनी इतनी नहीं है कि कोई यहां बैठकर कुछ काम कर सके। फिर भी प्रदर्शनी तथा फोटोग्राफ वस्तुतः सुन्दर और "लोकातीत" हैं, जैसा कि छायाचित्रकार ने कहा है।"

-- जिगमत डब्ल्यू. नांगियाल

कलादर्शन प्रभाग ने ऐसे कार्यक्रमों को भी अपना समर्थन दिया जो अन्य संस्थाओं के सहयोग से जनता के लिए आयोजित किए गए थे। ऐसे दो कार्यक्रमों का नीचे उल्लेख किया गया है :

(1) पंचतंत्र प्रदर्शनी नवम्बर को बाल दिवस के अवसर पर आयोजित करने के लिए बाल भवन भेजी गई। बड़ी संख्या में बच्चों ने इस प्रदर्शनी को देखा।

(2) सड़क दुर्घटनाओं के शिकार व्यक्तियों पर "पेंट फॉर लाइफ" (जीवन के लिए चित्रांकन) नामक चित्रकारी प्रतियोगिता दिनांक 9.1.1999 को दिल्ली यातायात पुलिस और "आर्टिस्ट्स फॉर एन्वायरमेंट ग्रुप" के सहयोग से इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र में आयोजित की गई। दिल्ली के भिन्न-भिन्न स्कूलों के बच्चों ने इस प्रतियोगिता में भाग लिया।

कार्यक्रम ग : स्मारकीय व्याख्यान

इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र ने ऐसे विख्यात विद्वानों के सम्मान में जिनका अध्ययन के विभिन्न क्षेत्रों में महत्त्वपूर्ण योगदान रहा है, एक स्मारकीय व्याख्यानमाला प्रारम्भ की। इस वर्ष, केन्द्र ने निम्नलिखित दो स्मारकीय व्याख्यानों का आयोजन किया :

(1) आचार्य हजारी प्रसाद दिवेद्वी स्मारकीय व्याख्यान

इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र ने 15 वां आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी स्मारकीय व्याख्यान आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी स्मृति न्यास के सहयोग से 19 अगस्त, 1998 को आयोजित किया।

इस वर्ष का व्याख्यान केन्द्र की अकादमिक निदेशक डा० कपिला वात्स्यायन की अध्यक्षता में, "कबीर का आक्रोश" विषय पर जवाहर लाल नेहरू विश्वविद्यालय के हिन्दी के प्रोफेसर एवं सुप्रसिद्ध विद्वान डा० नामवर सिंह द्वारा नई दिल्ली में दिया गया ।

इस व्याख्यान आयोजन में बड़ी संख्या में विद्वान, लेखक, समाजविज्ञानी, पत्रकार और अन्य बुद्धिजीवी उपस्थित हुए।

(2) डा० सुनीति कुमार चटर्जी स्मारकीय व्याख्यान

इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र ने नई दिल्ली में 23 और 24 नवम्बर, 1998 को डा० सुनीति कुमार चटर्जी स्मारकीय व्याख्यान का भी आयोजन किया।

यह व्याख्यान कलकत्ता विश्वविद्यालय के प्रो० सत्यरंजन बैनर्जी द्वारा दो भागों में दिया गया। व्याख्यान से पहले भाग का विषय था "भारत-यूरोपीय भाषा विज्ञान के प्रति डा० सुनीति कुमार चटर्जी का दृष्टिकोण" और दूसरा भाग "भारत-यूरोप वासियों के भाषा वैज्ञानिक चिन्तन एवं विचारों का उद्भव और विकास" विषय पर था।

इन दोनों व्याख्यान समारोहों की अध्यक्षता राष्ट्रीय संस्कृत संस्थान की उपाध्यक्ष डा० सरोजिनी महिषी द्वारा की गई।

कार्यक्रम घ : अन्य कार्यक्रम

फिल्म प्रदर्शन

इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र ने भिन्न-भिन्न अवसरों पर अपने सांस्कृतिक अभिलेखागार में से अनेक फिल्में प्रदर्शित की। ब्यौरा नीचे दिया गया है :

बाल भवन के ग्रीष्मकालीन शिविर में भाग लेने के लिए आए हुए 5000 बच्चों के लिए 19-20 मई, 1998 को विशेष फिल्म शो आयोजित किए गए। इस अवसर पर दिखाई गई फिल्में थी : "भीलों के गीत और नृत्य" और "शिव का ब्रह्मांड नृत्य"।

एक अन्य सत्र में, लिटिल बैले ट्रूप (एल. बी. टी.) द्वारा प्रस्तुत रामायण बैले की वीडियो फिल्म नई दिल्ली नगर-पालिका के स्कूलों में 28 और 29 जुलाई, 1998 को दिखाई गई। लगभग 2000 छात्रों ने इस वीडियो फिल्म को देखा।

बप्पा राय द्वारा टोडा समुदाय पर निर्मित वृत्त-चित्र और एम. के. रैना द्वारा तैयार की गई "हेमिस उत्सव" की फिल्म इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र के परिसर में 26 जुलाई, 1998 को आम दर्शकों को दिखाई गई।

पुस्तक विमोचन और संगीत समारोह

सुप्रसिद्ध संगीतज्ञ और कलाविंद श्री टी. के. गोविन्दराव द्वारा कर्नाटक संगीत पर रचित तीन पुस्तकों को, भारत के भूतपूर्व राष्ट्रपति श्री आर. वेंकटरामन् द्वारा 26 सितम्बर, 1998 को विमोचन किया गया। विमोचन की औपचारिकता के बाद, स्वयं श्री टी. के. गोविन्द राव ने गान प्रस्तुत किया जो तत्काल विमोचित तीन खंडों मे से चुनी गई उनकी संगीत रचनाओं पर आधारित था। इस समारोह में बड़ी संख्या में संगीत प्रेमी, विद्वान, पत्रकार आदि उपस्थित हुए।

इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द के प्रकाशनों, वीडियो फिल्मों और सी. डी. रोम की भेंट

(2) राष्ट्रपति भवन (नई दिल्ली) के अशोक हॉल में 14 दिसम्बर, 1998 को आयोजित एक विशेष समारोह में इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र द्वारा नानाविध विषयों पर प्रणीत 31 नए प्रकाशन और "जीवन शैली अध्ययन" तथा "परदे के पीछे" श्रृंखला के पांच वीडियो प्रलेख और "देवदासी मुरई", "मैन एण्ड मास्क" (मानव एंव मुखौटा), और "एलिजाबेथ बूनर की चित्रकारियां शीर्षक तीन सी.डी. रोम भारत के राष्ट्रपति माननीय श्री के. आर. नारायण को भेंट किए गए। विशिष्ट अतिथियों, विद्वानों, पत्रकारों तथा अन्य उपस्थित महानुभावों ने केन्द्र की इस उपलब्धि की भूरि-भूरि प्रशंसा की।

सार्वजनिक व्याख्यान

वर्ष 1998-99 के दौरान, विश्व के अनेक भागों से पधारे विद्वानों/विशेषज्ञों ने नानाविध विषयों पर कुल मिलाकर उनत्तीस (29) व्याख्यान दिए। उनमें से विशेष रूप से उल्लेखनीय है : (1) "दक्षिणी राज्य और विजयनगर की कला परम्पराएं "विषय" पर डा० जॉर्ज मित्तल की वार्त्ता : (2) "गांधार कला मे नई खोजें" विषय पर प्रो० फरीद खान का व्याख्यान; और (3) "अफ्रीकी कला का परिचय" और "पश्चिमी अफ्रीकी की विभिन्न कला संस्कृतियां : एक मूल्यांकन" विषयों पर श्रीमती उमेबे एन. औमेजेक्वे का भाषण।

इसके अतिरिक्त, पेशावर विश्वविद्यालय के पुरातत्व विभाग के भूतपूर्व अध्यक्ष प्रो० फरजन्द दुर्रानी ने "पाकिस्तान में हाल में हुई पुरातात्विक खोजें" विषय पर भाषण दिया; हूकोका विश्वविद्यालय, जापान के प्रो० संतोषी इहारा ने "प्रोद्योगिकीय विकास और उसकी सामाजिक आवश्यकताएं, जापान के मामले में" विषय पर एक रोचक वार्त्ता प्रस्तुत की और संयुक्त राज्य अमेरिका के प्रो० दिलीप बसु ने "सत्यजित राय की देवी : पिता-पुत्र

संवाद" विषय पर व्याख्यान दिया। डा० आर. नरसिंहन ने" कलाओं तथा मानविकी विषयों में मल्टीमिडिया का भविष्य" विषय पर एक चटकीली वार्त्ता प्रस्तुत की; डा० कमला चौधरी ने "आध्यात्मिकता और संधारणीयता" विषय पर एक विचारोत्तेजक व्याख्यान दिया और प्रो० वी. के. मुखोपाध्याय ने "भाषा दर्शन का न्याय परिप्रेक्ष्य : इसे अप्रत्यक्ष रूप में जानना" विषय पर भाषण दिया। श्रोताओं द्वारा इन सभी व्याख्यानों का स्वागत किया गया।

वर्ष 1998-99 के दौरान आयोजित व्याख्यानों की तालिका अनुबंध 8 पर दी गई है।

अन्तर्राष्ट्रीय संवाद

इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र अपने सांस्कृतिक आदान-प्रदान कार्यक्रमों समेत भारत सरकार द्वारा अनुमोदित अनेक अन्तरसांस्कृतिक कार्यक्रमों तथा गतिविधियों के माध्यम से, भिन्न-भिन्न राष्ट्रों तथा संस्कृतियों में उपलब्ध कलाओं के बीच सक्रिय संवाद को पोषण एवं प्रोत्साहन देता है। इसके लिए वह भारत आने वाले विशेषज्ञों के अतिरिक्त विदेशी सांस्कृतिक तथा अकादमिक/शैक्षिक निकायों के साथ संपर्क बनाए रखता है। इस अंतर्राष्ट्रीय संवाद को केन्द्र के सदस्यों द्वारा अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलनों, अधिवेशनों, संगोष्ठियों आदि में भाग लिए जाने से और भी बढ़ावा मिलता है। सांस्कृतिक आदान प्रदान कार्यक्रम एक ऐसा माध्यम है जिसके द्वारा इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र माइक्रोफिल्म, माइक्रोफिश, प्रकाशन ग्रंथसूचियां, फोटोग्राफ और स्लाइडें प्राप्त करने और विद्वानों के आदान-प्रदान जैसे समान हित के कार्यक्रम बनाने के उद्देश्यों को पूरा करने का प्रयास करता है।

सांस्कृतिक आदान-प्रदान कार्यक्रम

आलोच्य वर्ष में, इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र द्वारा निम्नलिखित देशों के साथ सांस्कृतिक आदान-प्रदान कार्यक्रमों के अन्तर्गत विषय शामिल किए गए :

1 भारत-श्रीलंका सांस्कृतिक आदान-प्रदान कार्यक्रम - 1996-98

2 भारत रोमानिया सांस्कृतिक आदान-प्रदान कार्यक्रम - 1996-98

3 भारत बंगलादेश सांस्कृतिक आदान-प्रदान कार्यक्रम - 1997-98

4 भारत-चेकोस्लोवाकिया सांस्कृतिक आदान-प्रदान कार्यक्रम - 1997-99

5 भारत-मिस्र सांस्कृतिक आदान-प्रदान कार्यक्रम, 1997-2000

6 भारत-ब्राजील सांस्कृतिक आदान-प्रदान कार्यक्रम, 1997-2000

7. भारत-दक्षिण अफ्रीका सांस्कृतिक आदान-प्रदान कार्यक्रम -1997-99

8. भारत-रूस सांस्कृतिक आदान-प्रदान कार्यक्रम - 1998-2000

9. भारत-इंडोनेशिया सांस्कृतिक आदान-प्रदान कार्यक्रम -1997-1999

10. भारत-बेल्जियम सांस्कृतिक आदान-प्रदान कार्यक्रम -1996-1998

11. भारत-कोरिया गणराज्य (दक्षिण-कोरिया) सांस्कृतिक आदान-प्रदान कार्यक्रम -1996-1998

12. भारत-फ्रांस सांस्कृतिक आदान-प्रदान कार्यक्रम - 1993-1995 (1998 तक मान्य)

13. भारत-किर्गिजस्तान सांस्कृतिक आदान-प्रदान कार्यक्रम -1993-1994 (31.12.1998 तक विस्तारित)

14. भारत-तुर्कमेनिस्तान सांस्कृतिक आदान-प्रदान कार्यक्रम -1992-1994 (31.12.1998 तक विस्तारित)

वर्ष के दौरान निम्नलिखित देशों के साथ सांस्कृतिक आदान-प्रदान कार्यक्रमों में शामिल करने के लिए विकल्प प्रस्तावित किए गए हैं :

1. भारत-साइप्रस सांस्कृतिक आदान-प्रदान कार्यक्रम, 1997-1999

2. भारत-मेक्सिको सांस्कृतिक आदान-प्रदान कार्यक्रम, 1999-2000

3. भारत-नीदरलैंड सांस्कृतिक आदान-प्रदान कार्यक्रम, 1998-2000

4. भारत-चीन सांस्कृतिक आदान-प्रदान कार्यक्रम, 1998-2000

5. भारत-स्लोवाक सांस्कृतिक आदान-प्रदान कार्यक्रम, 1997-2000

6. भारत-मैडागास्कर सांस्कृतिक आदान-प्रदान कार्यक्रम, 1997-1999

7. भारत-जर्मनी सांस्कृतिक आदान-प्रदान कार्यक्रम, 1997-1999

8 भारत-पेरू सांस्कृतिक आदान-प्रदान कार्यक्रम, 1997-1999

9. भारत-स्लोवाक सांस्कृतिक आदान-प्रदान कार्यक्रम, 1997-1999

10. भारत उज्बेकिस्तान सांस्कृतिक आदान-प्रदान कार्यक्रम, 1997-2000

11. भारत- स्लोवेनिया सांस्कृतिक आदान-प्रदान कार्यक्रम, 1997-1999

12. भारत-बोट्सवाना सांस्कृतिक आदान-प्रदान कार्यक्रम, 1999-2000

13. भारत-क्यूबा सांस्कृतिक आदान-प्रदान कार्यक्रम, 1998-2000

14 भारत- यूनान सांस्कृतिक आदान-प्रदान कार्यक्रम, 1998-2000

15. भारत-हालैंड सांस्कृतिक आदान-प्रदान कार्यक्रम, 1998-2000

16. भारत-ईरान सांस्कृतिक आदान-प्रदान कार्यक्रम, 1998-2000

17. भारत-मैक्सिको सांस्कृतिक आदान-प्रदान कार्यक्रम, 1999-2000

18. भारत-तुर्की सांस्कृतिक आदान-प्रदान कार्यक्रम, 1998-2001

19. भारत-फिनलैंड सांस्कृतिक आदान-प्रदान कार्यक्रम, 1996-1998

20. भारत-सिसिली सांस्कृतिक आदान-प्रदान कार्यक्रम, 1998-2000

21. भारत- सेनेगल सांस्कृतिक आदान-प्रदान कार्यक्रम, 1998-2000

22. भारत-बोलीविया सांस्कृतिक आदान-प्रदान कार्यक्रम, 1998-2001

अकादमिक सहयोजन

1. विदेश मंत्रालय के अनुरोध पर, निम्नलिखित तीन चेकोस्लावाकियाई भारतविदों को इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र के साथ सहयोजन की अनुमति दी गई। विदेश मंत्रालय द्वारा अपने "आईटेक" कार्यक्रम के अन्तर्गत उनकी अध्ययन यात्रा प्रायोजित की गई।

(1.) प्रो० जैरोस्लाव हॉल्मैन : अध्ययन विषय - "भारत संघ की जड़ें"

(2.) प्रो० जैरोस्लाव स्ट्रैंड : अध्ययन विषय - "कोशकला और मुद्राशास्त्र"

(3.) डा० (श्रीमती) रेनाता स्वोबोदोवा : अध्ययन विषय "आधुनिक भारतीय इतिहास और हिन्दी कोशकला में अनुसंधान"

2. डा० एन. मैरी गैल्टन जो कि एक स्व-नियोजित नृत्यांगना और ओटावा (कनाडा) के कार्लटन विश्वविद्यालय के कला तथा सांस्कृतिक अध्ययन विद्यालय की अनुसंधान सहयोगी (संगीत) है, जो शास्त्री भारत-कनाडा संस्थान द्वारा प्रदत्त अध्येतावृत्ति (फैलोशिप) के अन्तर्गत, "भरतनाट्यम, ओडिसी तथा कथाकलि में अभिनय का तुलनात्मक अध्ययन" विषय पर शोधकार्य करने के लिए इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र के साथ संबद्ध किया गया है।

3. अलीगढ़ मुस्लिम यूनिवर्सिटी में संस्कृत के भूतपूर्व प्रो० डा० एस. आर. शर्मा को "भारतीय खगोलीय और कालमापी यंत्रों की वर्णनात्मक सूची (कैटलॉग)" नामक उनकी अनुसंधान परियोजना के संबंध में इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र के साथ सहयोजित किया गया। यह परियोजना भारतीय राष्ट्रीय विज्ञान अकादमी द्वारा अनुमोदित की जा चुकी है जो इस परियोजना के लिए धनराशि भी उपलब्ध करा रही है। वे इस परियोजना पर कार्य प्रारंभ कर चुके हैं।

4. कु० रीना सिन्हा, जो एक नृत्यांगना, नृत्यकलाविद और प्रशिक्षक हैं, को शास्त्री भारत-कनाडा संस्थान द्वारा प्रदत्त अध्येतावृत्ति के अन्तर्गत, "बाइबिल के परिदृश्य के लिए कत्थक तथा अन्य नृत्य शैलियों का अनुकूलन" विषय पर अनुसंधान कार्य करने के लिए केन्द्र के साथ सहयोजित किया गया है।

5. जापानी अध्येता कु० मियुकी निनोमिया को भी उनकी अनुसंधान परियोजना "भारत का स्वदेशी बुनकर" के लिए इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र के साथ सहयोजित किया गया है।

विदेशों से अनुदान

यूनेस्को प्रपीठ कार्यक्रम

वर्ष 1998-99 के दौरान, यूनेस्को प्रपीठ कार्यक्रम के अन्तर्गत, "सांस्कृतिक धरोहर की पहचान और वृद्धि : विकास के प्रबन्ध में एक आंतरिक आवश्यकता" विषय पर अध्ययन प्रारम्भ किया गया। इस परियोजना के

अन्तर्गत भारत की मूर्त एंव अमूर्त दोनों प्रकार की धरोहर का अध्ययन तथा विश्लेषण किया जाता है। इस परियोजना के उद्देश्यों पर चर्चा करने के लिए 10 अगस्त, 1998 को यूनेस्को भवन में परामर्शदाताओं की एक बैठक हुई। इस बैठक में देश के जाने-माने मानव -विज्ञानियों तथा समाज विज्ञानियों ने भाग लिया।

कार्यशाला

उपयुक्त परियोजना के शोध अभिकल्प को अंतिम रूप देने के लिए 19 से 24 नवम्बर, 1998 तक एक पांच-दिवसीय कार्यशाला का आयोजन किया गया। इस कार्यशाला का में परियोजना की रूपरेखा, समय-सारणी और कार्य-योजना पर अनन्य रूप से विचार किया गया। यह निर्णय लिया गया कि पहले ऐसे दो गांवो का प्रायोगिक अध्ययन किया जाए जिनमें एक उत्तर में और दूसरा दक्षिण में हो। यह अध्ययन कार्य संतोषजनक रूप से प्रगति पर है।

"सांस्कृतिक धरोहर की पहचान और वृद्धि" कार्यक्रम के लिए दिसम्बर, 1998 में यूनेस्को से 7,37,975 रुपए की राशि प्राप्त हुई है।

प्रकाशन

आलोच्य अवधि में इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र द्वारा दो प्रबन्ध ग्रंथ प्रकाशित किए गए है जिनके नाम हैं : (I) "दि कल्चरल डाइमेन्शन ऑफ ईकॉलजी" (पारिस्थितिकी का सांस्कृतिक आयाम) और (II) "दि यूज ऑफ कल्चरल हेरिटेज ऐज़ ए टूल फॉर डेवलपमेंट" (विकास के लिए उपकरण के रूप में सांस्कृतिक धरोहर का उपयोग)। दोनों ग्रंथों का सम्पादन प्रो० बी. एन. सरस्वती द्वारा किया गया है।

संयुक्त राष्ट्र विकास कार्यक्रम (यू. एन. डी. पी.)

सांस्कृतिक संसाधनों के परस्पर सक्रिय बहु-माध्यमिक प्रलेखन की सुविधा को सुदृढ़ बनाना

इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र यह परियोजना संयुक्त राष्ट्र विकास कार्यक्रम की सहायता से कार्यान्वित करता रहा है। इस परियोजना का प्राथमिक उद्देश्य मल्टीमीडिया प्रौद्योगिकी के माध्यम से विभिन्न संस्कृतियों के व्यापक एंव समेकित अध्ययन, प्रलेखन तथा प्रसार के लिए राष्ट्रीय क्षमता विकसित करना है। इस प्रकार निर्मित क्षमता से यह आशा भी की जाती है कि वह एक ऐसी धरोहर को, जो भिन्न-भिन्न हो चुकी है अथवा लुप्त होने के कगार पर है, उसके असली रूप में पुन: निर्मित करने में सहायता प्रदान करेगी।

इस हेतु 39.5 करोड़ रुपए मूल्य के हार्डवेयर और सॉफ्टवेयर प्राप्त किए जा चुके है, और " सांस्कृतिक सूचना-विज्ञान प्रयोगशाला" (सिल) नाम की, नेटवर्क से जुड़ी, मल्टीमीडिया कम्प्यूटर प्रयोगशाला स्थापित कर दी गई हैं इस प्रयोगशाला मे परियोजना से संबंधित कार्मिक, जिनमें कम्प्यूटर व्यावसायिकए ग्रफिक डिजाईनर, कलाकार आदि शामिल हैं, कार्यरत हैं।

बहु-माध्यमिक परियोजनाएं

सी. डी. रोम के माध्यम से मल्टीमीडिया प्रस्तुतियां तैयार करने के लिए ग्यारह प्रायोगिक परियोजनाएं हाथ में ली गई हैं। वे हैं : (1) कैटकैट एंव मैनुस डेटाबेस, (2) मल्टीमीडिया डिजीटल लाइब्रेरी, (3) बृहदीश्वर मंदिर परियोजना, (4) मुक्तेश्वर मंदिर (5) अग्निचयन, (6) विश्व रूप, (7) एलिजाबेथ ब्रूनर की चित्रकारियां, (8) देवदासी मुर्राई, (9) देवनारायण का मौखिक महाकाव्य, (10) शैलकला, और (11) मानव और मुखौटे। इनमें से "देवदासी मुरई", जो कि बृहदीश्वर मंदिर के कर्मकाण्डीय संघटक के लिए एक आदर्श होगी, "मानव और मुखौटे" जो कि विश्व भर में मुखौटों की परम्पराओं के अध्ययन को समर्थन देने के लिए एक परस्पर सक्रिय बहु-माध्यमिक प्रस्तुति है, और "एलिजाबेथ ब्रूनर की चित्रकारियां" परियोजनाओं पर मल्टीमीडिया डेटाबेस तैयार किए जा चुके है। एलिजाबेथ ब्रूनर हंगारी देश की एक चित्रकार थीं जो कई दशकों तक भारत में रही थीं। ये परियोजनाएं प्रकाशित हो चुकी हैं और सी. डी. रोम की प्रतियां बिक्री के लिए उपलब्ध हैं। अन्य परियोजनाएं तैयार की विभिन्न अवस्थाओं में हैं।

अनेक अंतर्राष्ट्रीय परामर्शदाताओं ने पिछले कई वर्षों में इन यूएनडीपी परियोजनाओं में अपना योगदान दिया है। कुछ परामर्शदाताओं ने अपनी परामर्श अवधि में परियोजना कार्मिकों तथा अध्येताओं के लिए कार्यशालाएं भी चलाई हैं। वर्ष 1998-99 के दौरान निम्नलिखित अंतराष्ट्रीय परामर्शदाताओं ने यूएनडीपी कार्यक्रमों में सहायता दी :

(1) डा० शिंगेहारू सुगिता, उप-निदेशक, राष्ट्रीय मानवजाति विज्ञान संग्रहालय, ओसाका, जापान

(2) डा० माइकेल लॉरब्लशि, निदेशक अनुसंधान, एयूसीएनआरएस रॉक डेस मॉसिज 46200, सैंट सोजी, फ्रांस;

(3) प्रो० टी. एन. मैनसबैल, निदेशक, भारत-विद्या विभाग, दक्षिण एशिया संस्थान, हीडलबर्ग विश्वविद्यालय, जर्मनी ;

(4) डा० आदित्य मलिक, भारत-विद्या विभाग, दक्षिण एशिया संस्थान, हीडलबर्ग विश्वविद्यालय, जर्मनी

राष्ट्रीय स्तर के आठ विशेषज्ञों को परियोजना पर राष्ट्रीय व्यावसायिक परियोजना कार्मिक के रूप में 1998 से नियुक्त किया गया है। राष्ट्रीय स्तर के निम्नलिखित चार विशेषज्ञों ने आलोच्य अवधि में यूएनडीपी परियोजना में सहायता दी :

1. डा० एच.जी रानाडे, भूतपूर्व प्रो०, दकन विश्वविद्यालय, पूणे;
2. श्री दादी चदुमजी, मुखौटा, विशेषज्ञ, बी. 2/2211, वसंतकुंज, नई दिल्ली;
3. डा० एस. सी. गुप्त, तकनीकी निदेशक, राष्ट्रीय सूचना विज्ञान केन्द्र, लोदी रोड़, नई दिल्ली;

4. श्री बी. एम. पाण्डेय, पुरातत्वज्ञ, वाई-81, हौजखास, नई दिल्ली;

5. डा० आर. नागस्वामी, परामर्शदाता, 22-22 बी. क्रास स्ट्रीट, बैसेंट नगर, चेन्नई;

6. प्रो० पिएर सिलवैन फिलियोजा, 125 विवेकानन्द रोड क्रॉस, यादवगिरी, मैसूर।

सम्मेलन/कार्यशाला

(1) परियोजना प्रबन्धक श्री अभय मोहन लाल द्वारा केन्द्रीय सचिवालय पुस्तकालय, शास्त्री भवन ने 22 वे 23 जुलाई, 1998 को "अभिकल्पन तथा प्रकाशन" विषय पर एक ढाई दिन की व्याख्यान प्रशिक्षण कार्यशाला का संचालन किया गया। इस अवसर पर प्रशिक्षणार्थियों के लिए शैलकला विषयक प्रस्तुति और गीतगोविन्द मल्टीमिडिया प्रस्तुतियों के साथ-साथ इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र के परस्पर-सक्रिय स्वरूप का भी प्रदर्शन किया गया।

(2) "मानविकी विषयों के लिए मल्टीमीडिया" विषय पर 5 से 7 अक्तूबर, 1998 तक इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र में एक अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन का आयोजन किया गया। इस सम्मेलन का मुख्य उद्देश्य मानविकी विषयों तथा शिक्षा के क्षेत्र में मल्टीमीडिया प्रौद्योगिकी के उपयोग के प्रति जागरूकता में वृद्धि करना था। भारत के विभिन्न भागों से तथा विदेशों से आए प्रतिनिधियों ने इस सम्मेलन में भाग लिया।

(3) संगीत नाटक अकादमी ने "प्रसार : योजनाएं, समस्याएं और संभावनाएं" विषय पर आयोजित अपनी कार्यशाला के अंतर्गत, 21 दिसम्बर, 1998 को इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र में एक एक-दिवसीय कार्यशाला एंव निरूपण कार्यक्रम का आयोजन किया। इस कार्यक्रम में इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र में काम करने वाले मल्टीमीडिया विशेषज्ञों ने व्याख्यान दिए।

अनुसंधान

इस प्रयास ने मानविकी विषयों तथा कम्प्यूटर प्रौद्योगिकी के बीच सहक्रिया उत्पन्न करने का एक उत्तम अवसर प्रदान किया। दोनों ज्ञानधाराओं के विद्वान तथा विशेषज्ञ अनेक परियोजनाओं पर रचनात्मक सहयोग करने में समर्थ हुए। एक शैक्षणिक उपकरण के रूप में कम्प्यूटरों का उपयोग करने के लिए नए मॉडल विकसित किए जा रहे हैं। शैक्षणिक मल्टीमीडिया प्रणालियां विकसित करने के लिए एक कार्यविधि के विकास पर भी अनुसंधान चल रहा है।

सहभागिताएं

(1) विदेश मंत्रालय की ओर से 3 और 4 सितम्बर, 1998 को पूणे के "सी-डैक" द्वारा मल्टीमीडिया विषय पर आयोजित "सार्क" सम्मेलन में इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र एक प्रायोजक था। यूएनडीपी परियोजना के तीन वरिष्ठ अधिकारियों ने इस सम्मेलन में वक्ता के रूप में भाग लिया।

(2) परियोजना प्रबन्धक श्री अभय मोहन लाल को स्टटगार्ट, जर्मनी में 9-10 सितम्बर, 1998 को "प्रभावी तथा उपयोज्य मल्टीमीडिया प्रणालियों का अभिकल्पन" विषय पर हुए आईएफआईपी सम्मेलन में और ब्रिस्टल (यू.के.) में 12 से 16 सितम्बर, 1998 तक हुए एसीएम अंतराष्ट्रीय मल्टीमीडिया सम्मेलन में प्रतिनिधि के रूप में भाग लेने के लिए भेजा गया।

(3) परियोजना प्रबन्धक श्री संजय गोयल ने वरिष्ठ प्रोग्रामर श्री हरिओम शर्मा के साथ मिलकर, केन्द्रीय माध्यमिक शिक्षा बोर्ड की पाठ्यचर्या पुनरीक्षण समिति को स्कूली पाठ्यचर्या के पुनरीक्षण में सहायता दी।

(4) भिन्न-भिन्न व्यावसायित कालेजों के सात छात्रों ने प्रयोगशाला में प्रशिक्षणार्थी के रूप में कार्य किया।

(5) परियोजना प्रबन्धक श्री संजय गोयल को इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय खुला विश्वविद्यालय के देश-व्यापी कक्षा कार्यक्रम के अन्तर्गत, एम. लिब. छात्रों के लिए दूरदर्शन पर व्याख्यान देने के लिए आमंत्रित किया गया।

प्रशिक्षण

सांस्कृतिक सूचना-विज्ञान प्रयोगशाला के अधिकारियों को, देश-विदेश में, अध्ययन यात्राओं, अध्येतावृत्ति कार्यक्रमों, संगोष्ठियों, कार्यशालों परिचर्चाओं और आन्तरिक प्रशिक्षण कार्यक्रमों के माध्यम से समुचित प्रशिक्षण दिया गया और मल्टीमीडिया प्रौद्योगिकी से अवगत कराया गया।

निम्नलिखित स्टाफ सदस्यों को यूएनडीपी परियोजना के अन्तर्गत अध्ययन यात्रा तथा अध्येतावृत्ति प्रशिक्षण भेजा गया।

(1) श्रीमती रेनू बाली, सहायक पुस्तकाध्यक्ष और श्रीमती आशा गुप्ता, ग्रंथसूचीकार को 2 जून से 11 जुलाई, 1998 तक मैंचेस्टर विश्वविद्यालय (यू. के.) भेजा गया।

(2) श्री श्रीधर राजामणि, वरिष्ठ सीएडी विशेषज्ञ को 17 अगस्त, 1998 से 5 जनवरी, 1999 तक वर्चुअल रीयलिटी लैबोरेटरी, मिशिगन विश्वविद्यालय, संयुक्त राज्य अमेरिका भेजा गया।

(3) श्री अभय मोहन लाल, परियोजना प्रबन्धक को 7 से 26 सितम्बर, 1998 तक जर्मनी, फ्रांस और यूनाइटेड किंगडम की अध्ययन यात्रा पर भेजा गया।

(4) डा० विजय शंकर शुक्ल और डा० सुकुमार चट्टोपाध्याय अनुसंधान अधिकारियों को 15 सितम्बर से 30 नवम्बर, 1998 तक भारतीय तथा तिब्बती संस्कृति संस्थान, हैम्बर्ग विश्वविद्यालय भेजा गया।

(5) कु० अशिमा हेलन, वरिष्ठ वीडियो सम्पादक को 27 सितम्बर से 31 अक्तूबर, 1998 तक अंतर्राष्ट्रीय फिल्म तथा टेलिविजन कार्यशाला, रॉकपोर्ट, मैन, संयुक्त राज्य अमेरिका भेजा गया।

(6) सर्वश्री उमेश कुमार बत्रा, प्रोग्रामर और जी. चामुंडीश्वरन, तकनीकी सहायक को 2 जनवरी से 30 अप्रैल, 1998 तक अध्येतावृत्ति प्रशिक्षण पर नोर्थ केरोलिना वियवविद्यालय भेजा गया।

इंटरनेट और वेबसाइट सुविधाएं

दो इंटरनेट सेवाएं – एक संस्कृत सूचना विज्ञान प्रयोगशाला में और दूसरी पुस्तकालय में – स्थापित की गई। इंटरनेट पतें निम्नलिखित हैं :

सांस्कृतिक सूचना-विज्ञान प्रयोगशाला	:	ignca@del2.vsnl.net.in
पुस्तकालय इंटरनेट प्रयोक्ता नाम	:	ignca@del3.vsnl.net.in

"निक" के माध्यम से एक आईजीएनसीए वेबसाइट स्थापित किया गया है; उसका पता और कीवर्ड (कुंजीशब्द) निम्नलिखित हैं :

वेबसाइट पता	:	http:/www.nic.in/ignca
कुंजीशब्द	:	INDIRA GANDHI NATIONAL CENTRE FOR THE ARTS INDOLOGY, MULTIMEDIA, INDIA ART AND CULTURE, LIFESTYLE STUDIES, MULTIDISCIPLINARY STUDIES

बजट और व्यय

इस परियोजना के लिए यूएनडीपी का अंशदान 22,25,460 अमरीकी डालर है। यूएनडीपी ने अब तक 5,23,46,500 रुपए की अग्रिम राशि रूपयों में किए जाने वाले भुगतानों के लिए स्वीकार की है। इस अग्रिम राशि में से 5,18,76,300 रुपए 31.3.1999 तक खर्च किए जा चुके हैं। परियोजना के विदेशी मुद्रा संघटक का भुगतान सीधे यूएनडीपी और येनेस्को द्वारा किया जाता है।

फोर्ड फाउंडेशन

फोर्ड फाउंडेशन ने कलाओं और मानविकी विषयों के लिए राष्ट्रीय अनुसंधान तथा संसाधन सुविधाएं विकसित करने के उद्देश्य से इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र को सितम्बर, 1992 में 2,25,000 अमरीकी डालर का अनुदान अनुमोदित किया था। यह अनुदान उपस्कर तथा सामग्रियों की प्राप्ति और अपने कार्मिकों के प्रशिक्षण तथा परामर्शदाताओं की सेवाएं प्राप्त करने के लिए था। "उपस्कर" संघटक के अन्तर्गत, वीडियों संपादन स्टूडियो स्थापित और परिचालित किया जा चुका है। इस प्रयोजन के लिए अनुमोदित बजट का पूर्ण रूप से उपयोग हो चुका है। "सामग्रियों" की प्राप्ति" संघटक के अन्तर्गत, मुखौटे, शैलकला प्रतिकृतियां और माइक्रोफिल्म/माइक्रोफिश प्राप्त की जा चुकी हैं। 31 दिसम्बर, 1998 तक, 75,000 अमरीकी डालर के आवंटन में से कुल मिलाकर 71,029.03 अमरीकी डालर की राशि खर्च की जा चुकी है। "परामर्शदाता" संघटक के अन्तर्गत, 35,000 अमरीकी डालर के

आवंटन में से 31.12.1998 तक 30,140 अमरीकी डालर की राशि खर्च की गई है। शेष राशि का उपयोग चालू वर्ष में विद्वानों को इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र में बुलाने और अन्य विनिर्दिष्ट प्रयोजनों के वित्तपोषण के लिए करने के प्रयास किए जा रहे हैं।

वर्ष 1998-99 में निधियों के उपयोग का ब्यौरा नीचे दिया जा रहा है :

(1) प्रो० बैद्यनाथ सरस्वती और डा० मौलि कौशल ने विलियमबर्ग, वर्जीनिया, संयुक्त राज्य अमेरिका में आयोजित 14 वें अंतर्राष्ट्रीय मानव विज्ञान तथा मानवजाति-विज्ञान महासम्मेलन (कांग्रेस) में भाग लेने और उसमें क्रमश: "मानव विज्ञान में वैकल्पिक प्रतिमानों की खोज-ब्रह्मण्डीय मानव वैज्ञानिक सिद्धान्त के विषय में भारतीय दृष्टिकोण" और "दिक् और काल की सांस्कृतिक संकल्पनाएं" विषयों पर अपने-अपने शोधपत्र प्रस्तुत करने के लिए 26.7.1998 से 1.8.1998 तक संयुक्त राज्य अमेरिका की यात्रा की।

(2) डा० अरूप बनर्जी ने 11.9.1998 से 21.9.1998 तक मास्को का दौरा किया और वहां "रूस के संग्रहालयों से प्राचीन प्राच्य शास्त्रीय तथा प्रारंभिक ईसाई संग्रह" विषय पर आयोजित सम्मेलन में भाग लिया।

(3) कैलिफोर्निया विश्वविद्यालय, शांताकुज, कनाडा के प्रो० दितीप बसु को "वाल्मिकि भागवती पुराण" के प्रकाशन के संबंध में परामर्शदाता के रूप में नियुक्त किया गया।

(4) "मन, मानव और मुखौटा" विषय पर फरवरी, 1998 में आयोजित प्रदर्शनी तथा संगोष्ठी के संबंध में ब्राउन विश्वविद्यालय, संयुक्त राज्य अमेरिका के जोन एमिरा, प्रो० मिकाइल मेशके तथा श्रीमती उमीबे एम. ओनियीजैन्वत की भारत यात्रा का खर्च इसी अनुदान से पूरा किया गया।

जापान फाउंडेशन

वित्तीय वर्ष 1998-99 के लिए, "संस्कृति तथा प्रौद्योगिकी" विषय पर एक सम्मेलन बुलाने, टोकियो में "गीतगोविन्द मल्टीमीडिया अनुभव" आयोजित करने और वित्तीय वर्ष 1998-99 के लिए पुस्तकालय समर्थन कार्यक्रम के अन्तर्गत 79 शीर्षकों की पुस्तकें मंगाने के प्रस्ताव प्रस्तुत किए गए थे। किन्तु जापान फाउंडेशन ने हाल ही में सूचित किया है कि पुस्तकालय समर्थन कार्यक्रम के अन्तर्गत भेजा गया प्रस्ताव स्वीकार नहीं किया गया है।

वित्तीय वर्ष 1999-2000 के लिए, जापान फाउंडेशन के पुस्तकालय समर्थन कार्यक्रम के अन्तर्गत, 7,95,456 येन मूल्य की 68 शीर्षकों की पुस्तकों के लिए भी एक अनुरोध जापान फाउंडेशन को भेजा गया है।

सूत्रधार

(प्रशासन एवं वित्त प्रभाग)

इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र का सूत्रधार प्रभाग जो इसका प्रशासनिक स्कंध है, केन्द्र के अन्य सभी प्रभागों तथा एककों को प्रशासनिक, प्रबंधकीय तथा संगठनात्मक सहायता एवं सेवाएं प्रदान करता रहा और संस्था के लेखों के अनुरक्षण तथा प्रबन्ध के साथ-साथ केन्द्र की समस्त गतिविधियों के समन्वय, प्रशासन तथा नीति-निर्धारण के लिए भी एक प्रमुख ऐजेंसी के रूप में कार्य करता रहा।

क. कार्मिक

वर्ष 1998 - 99 के दौरान, केन्द्र में विभिन्न महत्त्वपूर्ण पदों पर कार्य करने के लिए कुछ नए अधिकारी नियुक्त किए गए। 31 मार्च, 1999 की स्थिति के अनुसार केन्द्र के महत्त्वपूर्ण अधिकारियों, शोध अध्येताओं आदि की सूची अनुबन्ध 3 और 4 पर दी गई है।

ख. आपूर्ति एवं सेवाएं

आपूर्ति एवं सेवाएं एकक केन्द्र के सभी अकादमिक प्रभागों को भण्डारतंत्रीय तथा संबंधित सहायता प्रदान करता रहा। इस एकक ने वर्ष के दौरान अनेक राष्ट्रीय तथा अंतर्राष्ट्रीय संगोष्ठियों, सम्मेलनों, कार्यशालाओं और प्रदर्शनियों की व्यवस्था में भी सहायता दी। इसने सभी सम्बद्ध मंत्रलयों/विभागों और अन्य संगठनों के साथ समन्वय बनाए रखा ताकि केन्द्र का कार्य सुचारु रूप से कुशलतापूर्वक चलता रहे।

ग. शाखा कार्यालय

वाराणसी

वाराणसी का शाखा कार्यालय, जो 1988 में स्थापित किया गया था, कलाकोश प्रभाग के एकक के रूप में, एक अवैतनिक समन्वायक की देखरेख में अपने नियमित कर्मचारियों और अनुसंधानकर्ताओं के माध्यम से काम करता रहा। और उसने विशेषज्ञों की सहायता से इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र की परियोजनाओं के लिए व्याख्यान तथा परिचर्चाएं आयोजित करने के साथ-साथ, शोध संबंधी गतिविधियों तथा डेटा संग्रह का काम किया।

इम्फाल

इम्फाल कार्यालय 1991 में स्थापित किया गया था और यह जनपद-सम्पदा विभाग के अन्तर्गत एक अवैतनिक समन्वायक के देख रेख में कार्य कर रहा है। इस कार्यालय के कर्मचारी मुख्यतः मणिपुर क्षेत्र में डेटा संग्रह के काम के लिए लगाए गए हैं।

घ. वित्त एवं लेख

31 मार्च, 1999 को समाप्त हुए वित्तीय वर्ष के लेखों को इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र के न्यास द्वारा अपने घोषणा विलेख के अनुच्छेद 19.1 के अनुसार अनुमोदित और स्वीकृत किया जा चुका है।

भारत सरकार ने केन्द्र को निम्नलिखित लाभ/रियायतें प्रदान करते हुए अधिसूचनाएं जारी की हैं :-

(1) राष्ट्रीय गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र न्यास की आय को कर निर्धारण वर्ष 2000 - 2001 तक आयकर से मुक्त कर दिया गया है। आयकर अधिनियम की धारा 10 (23-ग) (V) के अन्तर्गत आवश्यक कर मुक्ति दे दी गई है। देखिए : 9 अप्रैल, 1997 की अधिसूचना संख्या 10337 (एफ. स0 197/39/97 आई. टी. ए.-1)

(2) न्यास को धारा-35 (I) (III) के अन्तर्गत, अधिसूचना संख्या 1884 एफ.सं डी.जी.आई.टी. (ई) कैत.एन. डी.-22/35 (I) (III) 90-91, दिनांक 8 दिसम्बर , 1998 के द्वारा 1.4.98 से 31.3.2000 तक की अवधि के लिए एक संस्था घोषित कर दिया गया है, जिससे सामाजिक विज्ञान आदि में अनुसंधान के लिए केन्द्र को दी गई कोई भी राशि आयकर अधिनियम की धारा 35 (I) (III) के अन्तर्गत दाता की आय में से कटौती की पात्र होगी। आयकर अधिनियम के अन्तर्गत इस छूट की पूर्वपीठिका के रूप में, विज्ञान तथा प्रौद्योगिकी मंत्रालय ने इस संगठन केन्द्र को आयकर नियम, 1962 के नियम 6 के अन्तर्गत एक वैज्ञानिक तथा अनुसंधान संस्थान के रूप में अपनी मान्यता प्रदान कर दी है। इस मान्यता के आधार पर केन्द्र को आयात पर सीमा शुल्क से भी छूट मिल सकती है और आयात प्रक्रिया में भी सुविधा प्राप्त हो सकती है।

(3) केन्द्र को किसी कलाकृति, पाण्डुलिपि, रेखाचित्र, छायाचित्र, मुद्रण आदि की बिक्री से किसी व्यक्ति को होने वाले पूंजीगत लाभ आयकर अधिनियम की धारा 47 IX के अन्तर्गत निर्धारण वर्ष 1999 -2001 तक के लिए आयकर से मुक्त कर दिए गए हैं: देखिए भारत सरकार, वित्त मंत्रालय (राजस्व विभाग) की दिनांक 28-10-1997 की अधिसूचना संख्या 10447 फा. सं. 207/5/93 आई.टी.ए.-II.

(4) व्यक्तियों द्वारा केन्द्र को किया गया कोई भी दान आयकर अधिनियम की धारा 80 (छ) के अन्तर्गत 50 प्रतिशत तक छूट का पात्र होगा। केन्द्र को यह छूट 31-3-2002 तक दी गई है : देखिए : आयकर निदेशक (छूट) का दिनांक 10 मई, 1993 का पत्र संख्या डी.आई.टी (छूट) /98-99/379/87/154.

(5) वित्त मंत्रालय (राजस्व विभाग) के केन्द्रीय प्रत्यक्ष कर बोर्ड ने अपने 17 मई, 1999 के आदेश संख्या: एफ. 199/2/99/ आई.टी.ए.-। के अन्तर्गत, आयकर अधिनियम, 1961 की धारा-10 के खंड (17-क) के उपखंड (I) के प्रयोजन के लिए इन्दिरा गांधी स्मारकीय अध्येतावृत्ति को कर-मुक्ति स्वीकार कर दी है।

ङ. आवास

केन्द्र का प्रधान कार्यालय जनपद स्थित सैंट्रल विस्टा मेस के भवनों और डॉ. राजेन्द्र प्रसाद मार्ग स्थित बंगलो संख्या 3 में स्थापित रहा। आशा की जाती है कि सैंट्रल विस्टा मेस भवन केन्द्र के विभिन्न प्रभागों तथा एककों के लिए पर्याप्त स्थान उपलब्ध करा सकेगा। डॉ. राजेन्द्र प्रसाद मार्ग के बंगलों संख्या 5 की इमारत अब तोड़ दी गई है और उस स्थल पर इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र के नये भवन का निर्माण कार्य 1993 में शुरु किया गया था। इस कार्य में वर्ष 1997-98 के दौरान अच्छी प्रगति हुई।

च. अध्येतावृत्ति योजनाएं

1 शोध अध्येतावृत्तियां

इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र की शोधवृत्ति योजना इस वर्ष भी चलती रही और वर्ष 1998 - 99 के दौरान शोध अध्येताओं की संख्या इस प्रकार रही:-

मुख्यालय	:	6
चेन्नई माइक्रोफिल्म एकक	:	30

(II) इन्दिरा गांधी स्मारकीय अध्येतावृत्तियां

कलाओं, मानविकी विषयों तथा संस्कृति के क्षेत्र में सृजनात्मक एवं समालोचनात्मक कार्य में अपने आप को स्वतंत्रतापूर्वक संलग्न रखने के लिए विख्यात एवं अत्यन्त प्रतिभाशाली व्यक्तियों को उपयुक्त अवसर प्रदान करने के उद्देश्य से, इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र ने श्रीमती इन्दिरा गांधी के नाम से स्मारकीय अध्येतावृत्तियों की एक योजना प्रारंभ की है। ये अध्येतावृत्तियां किसी भी विषय के ऐसे-विद्वानों/सृजनधर्मी कलाकारों के लिए उपलब्ध हैं जिनके पास सृजनात्मक परियोजनाएं हैं और जो बहु-विषयक, अंतर्विषयक अथवा संकुल सांस्कृतिक स्वरूप पर शोध कार्य करने को तत्पर हैं। आवेदकों को ऐसे सर्जनात्मक या समालोचनात्मक कार्य का प्रामाणिक अनुभव होना चाहिए जो विशुद्ध अकादमिक स्वरूप के संकीर्ण क्षेत्र तक ही सीमित न हो। अध्येताओं को भारत के भीतर अपनी पसंद के किसी भी स्थान में रह कर कार्य करने की पूर्ण स्वतंत्रता होगी। वृत्तिका प्राप्त कर रहे अध्येताओं की संख्या किसी भी समय छह से अधिक नहीं होगी। प्रत्येक अध्येता को मासिक रूप से 12,000 रुपए वृत्तिका के रूप में प्रतिमाह दिए जाएंगे। इसके अलावा उसे दो वर्ष की अवधि के लिए आकस्मिक तथा यात्रा व्यय दिया जाएगा।

वर्ष 1996 की अध्येतावृत्ति पुणे के विख्यात मराठी तथा अंग्रेजी लेखक श्री दिलीप चित्रे को दी गई है। वर्ष 1997 में, दो सुप्रसिद्ध महानुभावों अर्थात् मशहूर परम्परागत संगीतज्ञ उस्ताद आर.फहीमुद्दीन डागर और अंग्रेजी तथा मलयालम के विख्यात लेखक प्रो. के. अय्यप्पा पणिक्कर को इन अध्येतावृत्तियों के प्रदान की गई थी।

वर्ष 1998-99 में, दो सुपात्र अध्येताओं, अर्थात बंगलौर की मानवविज्ञानी (सुश्री) डा० पद्मा एम. सारंग पाणि को और इंडोनेशिया के सुराकार्ता विश्व-विद्यालय के श्री बामबंग सुनातों को जो कि इंडोनेशिया संगीत के विशेषज्ञ

हैं, इन अध्येतावृत्तियों के लिए चुना गया है। योजना के अन्तर्गत, डॉ० सारंगपाणि ने अपनी परियोजना "देशज ज्ञान और ज्ञान का प्रसारण : बैगा बच्चों का अध्ययन" पर और श्री बामबंग सुनार्तो ने अपनी परियोजना "इंडोनेशिया के शास्त्रीय संगीत गमलन (आर्केस्ट्रा) में भारतीय संगीत" पर शोधकार्य करने का प्रस्ताव किया है।

छ. राष्ट्रीय संस्थाओं के साथ संबंध स्थापन

इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र ने अपने विभिन्न प्रभागों के माध्यम से अनेक राष्ट्रीय संस्थाओं जैसे विश्वविद्यालयों, अनुसंधान संगठनों तथा सांस्कृतिक संस्थाओं के साथ काफी व्यापक रूप से संबंध स्थापित किए हैं।

कलानिधि

केन्द्र का कलानिधि पुस्तकालय भारतीय विशिष्ट पुस्तकालय संस्थान के सदस्य के रूप में अन्तर्पुस्तकालय (उधार) ऋण और कम्प्यूटरबद्ध आदान-प्रदान की अनेक प्रणालियों में भाग लेता रहा। केन्द्र ने अपनी माइक्रोफिल्म बनाने की योजना के कार्यान्वयन के लिए अनेक संस्थाओं के साथ सूचनाओं का आदान प्रदान करने, अध्येताओं/विद्वानों को सहायता देने और परस्पर शोध कार्य के लिए सुविधाएँ उपलब्ध कराने के लिए सुव्यवस्थित एवं नियमित कार्यक्रम स्थापित किए हैं। वर्ष 1998-99 के दौरान केन्द्र ने विभिन्न अकादमिक क्षेत्रों में जिन संस्थाओं से आदान प्रदान किया है उनमें प्रमुख हैं :

आनन्दोराम बरुआ कला, भाषा, एंव संस्कृति संस्थान, असम;

आनन्द आश्रम संस्था, पूणे;

असम विश्वविद्यालय पुस्तकालय, गुवाहटी;

भोगीलाल लहरचन्द इंस्टिट्यूट ऑफ इंडोलॉजी, नई दिल्ली;

डी. ए. वी. कालेज, चण्डीगढ़;

गुजरात विद्यापीठ, अहमदाबाद;

गंगानाथ झा केन्द्रीय संस्कृत विद्यापीठ, इलाहाबाद;

इंस्टिट्यूट ऑफ हिस्टोरिकल एंड एंटीक्वैरियन स्टडीज़, गुवाहाटी;

जैन बासादि मूडाबिदरी, धर्मस्थल, कर्नाटक;

कामरूप अनुसंधान समिति, गुवाहटी,

केलाड़ि संग्रहालय तथा ऐतिहासिक अनुसंधान केन्द्र, केलाड़ि;

एल. डी. भारतविद्या संस्थान, अहमदाबाद;

उस्मानिया यूनिवर्सिटी लाइब्रेरी, हैदराबाद;

ओरिएंटल इंस्टिट्यूट, बड़ोदरा;

ओरिएंटल रिसर्च इंस्टिट्यूट एण्ड मैनुस्क्रिप्ट्स लाइब्रेरी, तिरूवनन्तपुरम;

रज्जा लाइब्रेरी, रामपुर;

राजस्थान प्राच्य शोध संस्थान, जोधपुर;

रामकृष्ण मठ, माइलापुर, चेन्नई;

डॉ॰ यू. वी. स्वामिनाथ अय्यर लाइब्रेरी, चेन्नई;

असम राज्य संग्रहालय, गुवाहाटी;

सिंधिया प्राच्य शोध संस्थान, उज्जैन;

एस. बी. ओरिएंटल रिसर्च इंस्टिट्यूट, तिरूपति।

कलाकोश

समीक्षाधीन वर्ष में इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र का कलाकोश प्रभाग अपने शोध कार्यक्रमों, संगोष्ठियों तथा कार्यशालाओं और प्रकाशन की योजनाओं के माध्यम से अनेक राष्ट्रीय संस्थाओं से जुड़ा रहा और उसने देश के विभिन्न भागों तथा विदेशों में स्थित कई शोधकर्त्ताओं तथा विशेषज्ञों सहित अनेक राष्ट्रीय संस्थाओं तथा विद्वन्निकायों के साथ बराबर संबंध एवं सम्पर्क बनाए रखा।

इस संदर्भ में निम्नलिखित अकादमिक निकाय उल्लेखनीय हैं :

अमेरिकन इंस्टिट्यूट ऑफ इण्डियन स्टडीज, नई दिल्ली;

आनन्द आश्रम संस्थान, पुणे;

भारत का मानव वैज्ञानिक सर्वेक्षण, नई दिल्ली ;

भाण्डाकर प्राच्य शोध संस्थान, पुणे;

भारत कला भवन, बनारस हिन्दू विश्वविद्यालय, वाराणसी;

केन्द्रीय उच्चतर तिब्बती अध्ययन संस्थान, सारनाथ, वाराणसी;

केन्द्रीय मानव वैज्ञानिक पुस्तकालय, भारत का मानव वैज्ञानिक सर्वेक्षण, नई दिल्ली;

दकन कॉलेज, पुणे;

गंगानाथ झा केन्द्रीय संस्कृत विद्यापीठ , इलाहाबाद;

पांडिचेरी फ्रेंच संस्थान, पांडिचेरी;

भारतीय इस्लामिक अध्ययन संस्थान, हमदर्द नगर, नई दिल्ली;

गवर्नमेंट ओरिएंटल मेनुस्क्रिप्ट लाइब्रेरी, चेन्नई;

भारतीय संग्रहालय, कलकत्ता;

पांडिचेरी फ्रेंच संस्थान, पांडिचेरी;

भारतीय इस्लामिक अध्ययन संस्थान, हमदर्द नगर, नई दिल्ली;

भारतीय राष्ट्रीय विज्ञान अकादमी, नई दिल्ली;

काशी विद्यापीठ, वाराणसी;

प्रज्ञा पाठशाला, वाई महाराष्ट्र;

दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली;

ओरिएंटल रिसर्च इंस्टिट्यूट एंड मैनुस्क्रिप्ट्स लाइब्रेरी, केरल विश्वविद्यालय तिरुवनन्तपुरम;

रवीन्द्र भारती विश्वविद्यालय, कलकत्ता;

राष्ट्रीय संस्कृत संस्थान, नई दिल्ली ;

सम्पूर्णानन्द संस्कृत विश्वविद्यालय, वाराणसी;

श्री वेंकटेश्वर प्राच्य शोध संस्थान, तिरुपति;

श्री लाल बहादुर शास्त्री राष्ट्रीय संस्कृत विद्यापीठ, नई दिल्ली;

यू. वी. स्वामिनाथ अय्यर लाइब्रेरी, चेन्नई;

कलकत्ता विश्वविद्यालय, कलकत्ता;

भारत कला भवन, बनारस हिन्दू विश्वविद्यालय, वाराणसी।

जनपद-सम्पदा

अपने परियोजना निदेशकों तथा अनुसंधान कर्ताओं के माध्यम से भारत के भिन्न-भिन्न भागों में अपने कार्यक्रमों के अकादमिक कार्यान्वयन के संदर्भ में, जनपद सम्पदा प्रभाग ने विश्वविद्यालय तंत्र तथा उसके बाहर के विभिन्न शोध संगठनों के साथ अपने संबंध बनाए रखे। प्रभाग मूलभूत विज्ञानों तथा प्रौद्योगिकी के क्षेत्रों की अग्रणी संस्थाओं के साथ बराबर सम्पर्क तथा संवाद बनाए रखने में सफल रहा है। इन संस्थाओं में शामिल हैं . खगोल-भौतिकी

केन्द्र, पुणे; विज्ञान संस्थान, बंगलौर; और भारतीय विज्ञान अकादमी, नई दिल्ली। केन्द्र के अनुसंधान कार्यक्रमों में अनेक विश्वविद्यालयों के मानव-विज्ञान विभाग भी भाग ले रहे हैं। इनमें से कुछ विभाग जो इस संदर्भ में उल्लेखनीय हैं वे हैं : मानव विज्ञान विभाग, एच.एन. बहुगुणा विश्वविद्यालय, श्रीनगर, उत्तर प्रदेश; सामाजिक विज्ञान तथा विकास अनुसंधान, भुवनेश्वर; आनन्दोराम बरूआ कला, भाषा तथा संस्कृति संस्थान, गुवाहाटी; वनस्पति विज्ञान विभाग, भागलपुर विश्वविद्यालय, बिहार; मानव विज्ञान संस्थान, मानव-विज्ञान विभाग, दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली। जनजातीय अध्ययन विभाग, अरूणाचल विश्वविद्यालय, आइटानगर; तथा असम राज्य संग्रहालय, गुवाहटी के साथ भी परस्पर आदान-प्रदान तथा संपर्क-संबंध चल रहे हैं।

अपने क्षेत्र सम्पदा कार्यक्रम में, जनपद सम्पदा प्रभाग ने केन्द्रीय तथा राज्यों के पुरातत्त्व विभागों के साथ, और श्री चैतन्य प्रेम संस्थान, वृंदावन, भारतीय ऐतिहासिक अनुसंधान परिषद, भारतीय सामाजिक विज्ञान अनुसंधान परिषद, भारतीय दार्शनिक अनुसंधान परिषद; ऐतिहासिक उच्च अध्ययन केन्द्र, अलीगढ़ मुस्लिम विश्वविद्यालय, अलीगढ़, मुस्लिम विश्वविद्यालय, अलीगढ़, उत्तर प्रदेश; नियोजन तथा स्थापत्य विद्यालय, नई दिल्ली जैसी राष्ट्रीय संस्थाओं के साथ भी नियमित रूप से संपर्क-संबंध बनाए रखा है। सांस्कृति आदान-प्रदान कार्यक्रम के अन्तर्गत, जनपद सम्पदा प्रभाग बृहदीश्वर परियोजना पर पांडिचेरी के फ्रेंच संस्थान से सहयोग ले रहा है। कलाओं के क्षेत्र में अपने बालजगत के कार्यक्रमों, विशेष रूप से पुत्तलिका कला तथा संगीत में जनपद सम्पदा प्रभाग राष्ट्रीय स्तर की अनेक संस्थाओं के साथ सम्पर्क एवं सहयोग बनाए रखता है; इनमें से कुछ हैं : संगीत नाटक अकादमी; बाल लेखक तथा चित्रकार संघ ।

कलादर्शन

इसी प्रकार कलादर्शन प्रभाग ने अपनी प्रदर्शनियां तथा अन्य कार्यक्रम प्रस्तुत करने के लिए राष्ट्रीय स्तर की अनेक संस्थाओं जैसे भारत भवन, भोपाल, भारत कला भवन, बनारस हिन्दू विश्वविद्यालय, वाराणसी; लद्दाखी कला तथा संस्कृति विषयक नमग्याल शोध संस्थान, नई दिल्ली; राष्ट्रीय मंचनीय/प्रदर्शनीय कला केन्द्र, मुंबई; चिल्ड्रंस बुक ट्रस्ट; बाल भवन सोसायटी, नई दिल्ली; नगर निगम तथा नई दिल्ली के पब्लिक स्कूलों के साथ परस्पर सम्पर्क की व्यवस्था बना रखी है। इसके अलावा, राष्ट्रीय मंचनीय/प्रदर्शनीय कला केन्द्र, मुंबई; गैलरी आर्ट ट्रस्ट, चेन्नई; राष्ट्रीय डिजाइन संस्थान, अहमदाबाद; और संस्कृति प्रतिष्ठान; राष्ट्रीय नवकला वीथि; राष्ट्रीय संग्रहालय तथा भारतीय पुरातत्व सोसायटी, नई दिल्ली के साथ-साथ कुछ राजनयिक मिशनों के सांस्कृतिक केन्द्र, जापान फाउंडेशन, चीनी सांस्कृतिक एकक और मैक्समूलर भवन, नई दिल्ली के साथ भी नियमित आदान-प्रदान कार्यक्रम बना हुआ है।

भवन परियोजना

इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र की भवन परियोजना के पहले भवन का निर्माण कार्य, पुस्तकालय समाप्ति की उन्नत अवस्था में दिखाई दे रहा है। वर्ष के दौरान, 17 करोड़ रुपए मूल्य के निर्माण-कार्य सम्पन्न किए गए जिनमें ध्यान मुख्य रूप से पत्थर के काम पर और विभिन्न सहायक

सेवाओं संबंधी कार्य की समाप्ति पर केन्द्रित रहा। अब ये सेवाएं चालू की जा रही हैं। निर्माणाधीन डिजाइन के वास्तुविद प्रो० राल्फ लर्नर जो कि प्रिन्सटन विश्वविद्यालय में वास्तुशास्त्र के डीन हैं, के साथ व्यापक विचार-विमर्श के बाद, बाहरी भू-दृश्य संयोजन तथा अहाते की दीवार के डिजाइन सहित अन्य ब्यौरों को अंतिम रूप दे दिया गया है। यदि स्थानीय अधिकरणों द्वारा बिजली की आपूर्ति और अनुमति प्रदान करने के कार्य में कोई अप्रत्याशित देरी नहीं हुई तो आशा की जाती है कि पुस्तकालय भवन जून, 2000 तक उपयोग के लिए तैयार हो जाएगा। इस भवन पर 31 मार्च, 1999 तक लगभग 46 करोड़ रुपए खर्च हो चुके हैं।

2. लगभग चार वर्ष तक चले लम्बे संवाद के बाद, स्थानीय प्राधिकारियों ने "अन्य भवनों अर्थात् सूत्रधार, भूमिगत पार्किंग स्थल, "ख", जनपद-सम्पदा, प्रदर्शनी दीर्घाएं और आवासीय खंड के नक्शे भी अन्ततः अनुमोदित कर दिए हैं। इस भवन संकुल में से एक यानी सूत्रधार भवन का भौतिक कार्य प्रारंभ हो चुका है।

3. परियोजना निष्पादन की प्रणाली, उसके प्रशासन और तकनीकी ब्यौरों सहित उसकी प्रबन्ध परिपाटियों ने देश के भवन निर्माण के क्षेत्र में अभी से अपनी छाप लगा दी है। आशा की जाती है कि समय बीतने के साथ, इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र न केवल एक अद्वितीय भवन संकुल होगा। अपितु यह निर्माण के क्षेत्र में, विशेषतः संस्थागत भवनों के निर्माण में उल्लेखनीय सुधार के लिए उत्प्रेरक की भूमिका अदा करेगा।

अनुबन्ध

अनुबन्ध-1 पर इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र न्यास के सदस्यों की सूची, अनुबन्ध-2 पर इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र न्यास की कार्यकारिणी समिति के सदस्यों की सूची, अनुबंध-3 पर इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र के अधिकारियों की सूची, अनुबंध-4 पर केन्द्र के अनुसंधान अध्येताओं की सूची, अनुबन्ध-5 पर वर्ष 1998-99 के दौरान हुई प्रदर्शनियों की सूची, अनुबंध-6 पर वर्ष 1998-99 के दौरान केन्द्र में हुई संगोष्ठियों/कार्यशालाओं की सूची, अनुबंध-7 पर वर्ष 1998-99 के दौरान केन्द्र में हुए फिल्म तथा वीडियो प्रदर्शनों की सूची, अनुबंध-8 पर वर्ष, 1998-99 में हुई घटनाओं (व्याख्यानों) की तालिका और अनुबंध-9 पर 31 मार्च, 1999 तक इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र के प्रकाशनों की सूची संलग्न है।

अनुबन्ध - 1

इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र न्यास के सदस्य

1. श्रीमती सोनिया गांधी — न्यास अध्यक्ष
   10, जनपथ,
   नई दिल्ली-110 011

2. श्री आर. वेंकटरामन
   5, सफदरजंग रोड, नई दिल्ली-110011

3. श्री पी.वी. नरसिम्हाराव
   9, मोती लाल नेहरू मार्ग
   नई दिल्ली-110 011

4. माननीय मानव संसाधन विकास मंत्री
   शास्त्री भवन,
   नई दिल्ली (पदेन)

5. माननीय शहरी विकास एवं रोजगार कार्य मंत्री
   निर्माण भवन
   नई दिल्ली-110 001 (पदेन)

6. डा० (कु.) ए. एस. देसाई
   अध्यक्ष विश्वविद्यालय अनुदान आयोग,
   बहादुरशाह जफर मार्ग
   नई दिल्ली - 110 002
   (पदेन)

7. प्रो० वी. आर. गेहता
   उप-कुलपति, दिल्ली विश्वविद्यालय,
   विश्वविद्यालय मार्ग, दिल्ली-110 007 (पदेन)

8. श्री रमाकान्त रथ
   अध्यक्ष, साहित्य अकादमी
   रविन्द्र भवन, 35 फिरोजशाह रोड,
   नई दिल्ली-110 001
   (पदेन)

9. डा० मनमोहन सिंह
9 सफदरजंग लेन,
नई दिल्ली-110 011

10. श्री पी. एन. हक्सर (28.11.1998 को दिवंगत)
4/9, शांतिनिकेतन,
नई दिल्ली-110 021

11. श्री रामनिवास मिर्धा
के. -12, तारा अपार्टमेंट्स, अलकनन्दा एरिया,
ग्रेटर कैलास -2 के पास
नई दिल्ली-110 019

12. श्री एच. वाई शारदा प्रसाद
19, मैत्री अपार्टमेंट्स,
ए-3 पश्चिम विहार,
नई दिल्ली - 110 063

13. डॉ. कपिला वात्स्यायन,
डी-1/23, सत्यमार्ग,
नई दिल्ली-110 021

14. डॉ. एस. वरदराजन
4-ए गिरिधर अपार्टमेंट,
28, फिरोजशाह रोड़
नई दिल्ली-110 001

15. प्रो. ए. रामचन्द्रन
22 भारती आर्टिस्ट्स कालोनी, विकास मार्ग,
नई दिल्ली-110 092

सदस्य सचिव

16. श्री एम.सी. जोशी,
सी-2/64, शाहजहां रोड़,
नई दिल्ली-110 001
(पदेन)

अनुबन्ध - 2

इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र न्यास की कार्यकारिणी समिति के सदस्य

1.	श्री पी.वी. नरसिम्हाराव, 9, मोती लाल नेहरू मार्ग, नई दिल्ली-110 001	अध्यक्ष
2.	डॉ. मनमोहन सिंह 9 सफदरजंग लेन, नई दिल्ली 110 001	सदस्य (पदेन)
3.	प्रो. यशपाल, 11 बी. सुपर डीलक्स फ्लैटस, सैक्टर-15-ए, नोएडा, उत्तर प्रदेश	
4.	श्री एच. वाई. शारदा प्रसाद, 19, मैत्री अपार्टमेंटस, ए-3, पश्चिम विहार नई दिल्ली-110063	सदस्य
5.	डॉ. कपिला वात्स्यायन डी.-1/23, सत्यमार्ग, नई दिल्ली-110 021	सदस्य
6.	श्री प्रकाश नारायण, डी.-36, प्रथम तल, जंगपुरा एक्सटेंशन, नई दिल्ली-110 014	सदस्य (पदेन)
7.	श्री एम.सी. जोशी सी-2/64, शाहजहां रोड, नई दिल्ली-110 011	सदस्य सचिव (पदेन)

अनुबन्ध - 3

इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र के अधिकारियों की सूची

डॉ. कपिला वात्स्यायन, अकादमिक निदेशक/आचार्या
श्री एम.सी. जोशी, सदस्य सचिव

कलानिधि प्रभाग

1.	डा० आर. के. परती	विशेष कार्यधिकारी (कलानिधि)
2.	डॉ. टी.ए.वी. मूर्ति	पुस्तकालयाध्यक्ष
3.	डॉ. सम्पत् नारायण	विषय स्कॉलर
4.	सुश्री जय चंडीराम, कार्यकारी निदेशक	मीडिया प्रॉडक्शन
5.	श्री ऋषि पाल गुप्ता	मुख्य प्रशासन अधिकारी (कलानिधि)
6.	श्री आत्म प्रकाश गक्खड	उप-पुस्तकालयाध्यक्ष
7.	श्री प्रमोद किशन	अनुलिपिक अधिकारी

कलाकोश प्रभाग

मुख्यालय

1.	पं. सातकड़ि मुखोपाध्याय	समन्वायक
2.	श्री टी. राजगोपालन	प्रशासन अधिकारी
3.	डॉ. नारायण दत्त शर्मा	अनुसंधान अधिकारी
4.	डॉ. वी. एस. शुक्ल	अनुसंधान अधिकारी
5.	डॉ. अद्वैतवादिनी कौल	सहायक सम्पादक
6.	डॉ. राधा बनर्जी	अनुसंधान सहयोगी

वाराणसी कार्यालय

7.	डॉ. आर. सी. शर्मा	अवैतनिक समन्वायक
8.	डॉ. वी.एन. मिश्र	अवैतनिक सलाहकार
9.	डॉ. उर्मिला शर्मा	अनुसंधान अधिकारी
10.	डॉ. सुकुमार चट्टोपाध्याय	अनुसंधान अधिकारी

जनपद सम्पदा प्रभाग

1.	डॉ. बैद्यनाथ सरस्वती	वरिष्ठ अनुसंधान प्रोफेसर
2.	श्री वाई.पी. गुप्ता	प्रशासन अधिकारी (ज. स. व. क. द.)
3.	डॉ. मौलि कौशल	अनुसंधान अधिकारी
4.	डॉ. बंसीलाल मल्ला	अनुसंधान अधिकारी
5.	डॉ. नीता माथुर	अनुसंधान सहयोगी
6.	डॉ. रामाकर पंत	अनुसंधान सहयोगी

इम्फाल कार्यालय

7.	श्री अरिबाम श्याम शर्मा	अवैतनिक समन्वायक

कलादर्शन प्रभाग

1.	श्री बसंत कुमार	सलाहकार (क.द.)
2.	डॉ. मधु खन्ना	असोशिएट प्रोफेसर
3.	कु. सबीहा ए. जैदी	कार्यक्रम निदेशक

सूत्रधार प्रभाग

1.	श्रीमती नीना रंजन	संयुक्त सचिव(आई. डी.)
2.	श्री एस.एल. टक्कर	निदेशक (ए. एण्ड एफ.)
3.	श्री एस.पी. अग्रवाल	मुख्य लेखा अधिकारी
4.	श्री संजय गोयल	निदेशक (मल्टीमीडिया)
5.	श्री प्रतापानन्द झा	परियोजना प्रबन्धक
6.	श्री आर.सी. सहोत्रा	निजी सचिव
7.	श्री पी.पी. माधवन्	निजी सचिव
8.	श्री ओ.पी. डोगरा	अवर सचिव (एस. डी व आई.डी.)
9.	श्री एन.जे. थॉमस	अवर सचिव (आई.डी.पी.)
10.	श्री ओ. पी. शर्मा	अवर सचिव (आई.डी.पी.)

11.	श्री के. डी. खन्ना	प्रशासनिक अधिकारी (ए. डी. व एस. व एस.)
12.	श्री आर. हरप्रसाद	वरिष्ठ लेखा अधिकारी
13.	श्री एस. पी. मंगला	वरिष्ठ लेखा अधिकारी
14.	श्रीमती नीलम गौतम	वरिष्ठ लेखा अधिकारी
15.	श्री जे.पी. एस.त्यागी	वरिष्ठ लेखा अधिकारी

अनुबन्ध - 4

इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र में

वरिष्ठ अनुसंधान अध्येताओं/कनिष्ठ अनुसंधान अध्येताओं की सूची

कलानिधि (संदर्भ पुस्तकालय)

1. श्री जे. मोहन, कनिष्ठ माइक्रोफिल्म निर्माण परियोजना सहयोगी (मद्रास)
2. श्री पी.पी. श्रीधर उपाध्याय, कनिष्ठ माइक्रोफिल्म निर्माण परियोजना सहयोगी (मद्रास)
3. श्रीमती वी.पार्वतन, कनिष्ठ माइक्रोफिल्म निर्माण परियोजना सहयोगी (मद्रास)

चीनी-भारतीय अध्ययन कक्ष

4. सुश्री हेम कुसुम, कनिष्ठ अनुसंधान अध्येता

कलाकोश प्रभाग

1. डॉ. श्रीमती सुषमा जाडू, वरिष्ठ अध्येता
2. डॉ. श्रीमती संघमित्रा बसु, वरिष्ठ अध्येता
3. श्री सुधीर कुमार लाल, कनिष्ठ अध्येता
4. श्री अजय कुमार मिश्र, कनिष्ठ अध्येता

जनपद-सम्पदा प्रभाग

1. श्री कैलाश कुमार मिश्र, कनिष्ठ अध्येता

अनुबंध - 5

वर्ष 1998-99 के दौरान हुई प्रदर्शनियां

क्र सं.	प्रदर्शनी का शीर्षक	अवधि	प्रभाग का नाम
1.	"पंचतंत्र"	19 सितम्बर से 30 अक्तूबर, 1998	जनपद सम्पदा
2.	"जल-जीवन संग्रारक"	16 से 19 अक्तूबर, 1998	कलादर्शन
3.	"हमारी स्थापत्य धरोहर"	3 से 21 नवम्बर, 1998	कलादर्शन
4.	"नाद-एक ध्वन्यात्मक" अनुभूति	10 से 25 दिसम्बर, 1998	कलादर्शन
5.	"थंका - स्टोक पैलेस म्यूजियम, लद्दाख से बौद्ध चित्रकारियां"	10 से 27 फरवरी, 1999	कलादर्शन
6.	"लोकातीत उत्कर्ष"	9 से 21 मार्च, 1999	कलादर्शन

अनुबन्ध - 6

वर्ष 1997-98 के दौरान हुई संगोष्ठियां/कार्यशालाएं

क्र सं०	शीर्षक	दिनांक/अवधि	प्रभारी का नाम
1.	"मानवविज्ञान के वैकल्पिक प्रतिमान" विषय पर 14 वें अंतराष्ट्रीय मानव-विज्ञान तथा मानवजाति विज्ञान महासम्मेलन में एक अकादमिक सत्र रखा गया, नई दिल्ली में	26 जुलाई से 1 अगस्त 1998	जनपद सम्पदा
2.	"अभिकल्पन और प्रकाशन" विषय पर कार्यशाला, नई दिल्ली में	22-23 जुलाई, 1998	इ.गा.रा.क.के. और यू. एन. डी. पी.
3.	"राजभाषा : सांस्कृतिक संदर्भ" विषय पर संगोष्ठी, नई दिल्ली में	13 अगस्त 1998	कलाकोश
4.	"भारत की सांस्कृतिक धरोहर की पहचान और वृद्धि : विकास के प्रबन्ध में एक आंतरिक आवश्यकता" विषय पर एक कार्यशाला, नई दिल्ली में	19 से 24 नवम्बर, 1998	जनपद-सम्पदा
5.	"प्रसार : योजनाएं, समस्याएं तथा संभावनाएं" विषय पर संगोष्ठी, नई दिल्ली में	21 दिसम्बर, 1998	जनपद-सम्पदा
6.	"तीर्थयात्रा और जटिलता" विषय पर कार्यशाला, नई दिल्ली में	5 से 9 जनवरी, 1999	जनपद-सम्पदा
7.	"पुरालिपिशास्त्र तथा पाण्डुलिपि विज्ञान" विषय पर कार्यशाला, तिरूवतन्तपुरम, केरल में	8 से 27 मार्च, 1999	कलाकोश
8.	"भारत-धाई कला" विषय पर संगोष्ठी, नई दिल्ली में सहयोग से) मैसूर में	30 मार्च, 1999	कलाकोश

अनुबन्ध-7

फिल्म/वीडियों प्रलेखनों की सूची - (1998-99)

1. नृत्यनाटिका : "विनिंग ऑफ फ्रैंडस" (मित्रलाभ);
2. कठपुतली प्रदर्शन : नेहरू- अपोसल ऑफ पीस" (नेहरू : एक शांतिदूत);
3. नृत्यनाटिका : सम्पूर्ण
4. हिमाचल प्रदेश के गद्दी लोगों का जीवन
5. "कुम्भाभिषेकम्" बृहदीश्वर मंदिर में।

महान गुरूजन श्रृंखला

आंतरिक रूप से तैयार किए गए कुछ प्रमुख प्रलेखन कला, साहित्य, संगीत और नृत्य क्षेत्र के निम्नलिखित विख्यात महानुभावों के साथ किए गए साक्षात्कारों के विषय में हैं :

1. सुप्रसिद्ध अभिनेत्री और रंगमंच की विशेषज्ञा सुश्री जोहरा सहगल के साथ साक्षात्कार - डा० कपिला वात्स्यायन द्वारा;
2. विख्यात चित्रकार श्री बी. सी. सान्याल के साथ साक्षात्कार - डा० कपिला वात्स्यायन द्वारा।

अर्जन/प्राप्ति

(क) "चन्द्रबदनी" : चन्द्रबदनी संथाल अपने कठपुतली प्रदर्शनों द्वारा जो कि बंगाल की एक दृश्य प्रदर्शन कला है- मनोरंजन करते हैं।

(ख) "टाइगर एण्ड मून" : बंगाल की समकालीन दृश्य कलाओं के विषय पर। (बाघ और चन्द्रमा)

आन्तरिक प्रलेखन

इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र द्वारा आयोजित विभिन्न संगोष्ठियों/कार्यशालाओं/समारोहों के विषय में ऑडियो तथा विज्युअल प्रलेखन कार्य आंतरिक रूप में केन्द्र के ही तकनीशनों द्वारा किए गए। इनमें से कुछ अत्यन्त महत्वपूर्ण कार्य थे: नेहरू : एक शांतिदूत विषय पर कठपुतली प्रदर्शन और नृत्य नाटक "सम्पूर्ण" के वीडियो तथा निश्चल प्रलेखन। यू. एन. डी. पी. परियोजनाओं के लिए भी कुछ ऑडियो अभिलेखन का कार्य केन्द्र के तकनीशनों द्वारा ही किया गया।

अनुबन्ध–8

इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र में अप्रैल 1998 से 31 मार्च, 1999 तक आयोजित (व्याख्यानों) की तालिका

क्रम	विषय	दिनांक	वक्ता का नाम
1.	"दक्षिणी राज्य और विजयनगर की कला परम्पराएं	01-04-1998	डा० जॉर्ज मिशल
2.	"यूरोपवासियों का आगमन"	2-04-1998	डा० जॉर्ज मिशल
3.	"गांधार कला में नई खोजें"	03-04-1998	प्रो० फरीद खान
4.	"वे जीने के लिए मरे"	05-04-1998	श्री आर. नागस्वामी
5.	"भारतीय वास्तुशास्त्र परम्परा : आधुनिक इंजीनियरिंग के प्रकाश में"	23-04-1998	श्री सी. वी. कन्द
6.		01-05-1998	प्रो० एच. आर. रानाडे
7.	"अफ्रीकी मुखौटों की परम्पराएं"	5-05-1998	श्रीमती उमेबे एन ऑनयेजेक्वे
8.	"पश्चिमी अफ्रीकी की विभिन्न कला	6-05-1998	श्रीमती उमेबे एन. ऑनयेजेक्वे
9.	"ब्रह्मांड जीवन विज्ञान और मानव मन	28-05-1998	श्री पी. के. चूड़ामणि
10.	आंतरिक संगोष्ठी : ईश्वर संहिता"	18-06-1998	प्रो० एच. जी. रानाडे
11.	"पीपलखोड़ा"	27-07-1998	डा० एस. के. मिश्र
12.	"पाकिस्तान में हाल में हुई पुरातत्व खोजें	06-08-1998	प्रो० फरजन्द दुर्रानी
13.	"प्रोटोगिकीय विकास और उसकी"	21-08-1998	प्रो० संतोषी इहारा

14.	"लद्दाख", स्लाइड प्रस्तुति के साथ	28-09-1998	श्री क्रिश्चियन लुन्जैंटिस
15.	"कलाओं और मानविकी विषयों में"	06-10-1998	डा० आर. नरसिंहन
16.	"भारतीय शास्त्रीय संगीत में पटियाला कसूर घराने का अनोखापन"	09-10-1998	श्री जवाद और मजहर अलीखान
17.	"भारत के आर्थिक विकास के लिए वैदिक मॉडल"	14-10-1998	डा० वी. आर. पंचमुखी
18.	"भारतीय संस्कृति एंव सभ्यता की उत्पत्ति"	18-11-1998	श्री मनोहर लाल कौल
19.	"जातिवाद, दास प्रथा और स्वेडनबर्ग सोच"	21-10-1997	डा० ऐंडर्स हैलनग्रेन
20.	"सत्यजित राय की देवी : पिता-पुत्र संवाद"	16-12-1998	प्रा० दिलीप बसु
21.	"यूनानी कलादेवी नृत्य - आर्टम्यूजिका और भारतीय शास्त्रीय नृत्यशैली भरतनाट्यम का तुलनात्मक अध्ययन	30-12-1998	कु० तेडा शैंटाला
22.	"भाषा दर्शन का न्याय परिप्रेक्ष्य : इसे अप्रत्यक्ष रूप से जानना"	12-01-1999	प्रो० पी. के मुखोपाध्याय
23.	राजस्थान में जल संग्रह की परम्परा"	19-01-1999	श्री अनुपम मिश्र
24.	"नगरीय-ग्रामीण द्वैधभाव : हमारी संस्कृति की परिकल्पनाओं में क्या खराबी है"	28-01-1999	प्रो० नॉर्बर्ट एल्जेंतर
25.	"संगीतोपनिषत् सारोद्धार : "	04-02-1999	डा० ऐलिन गाइनर
26.	"जीवन-चक्र"	12-02-1999	डा० नवांग त्सेरिंग
27.	"माध्यमिक प्रणाली"	18-02-1999	डा० लॉबजैंग त्सेरवांग्स

अनुबन्ध-9

इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र में मार्च 1999 तक के प्रकाशनों की तालिका

कलातत्त्वकोश ग्रन्थमाला

1. कलातत्त्वकोश : खण्ड - 1 प्रिलिमिनरि (अप्राप्य)

यह एक आदर्श (मॉडल) खण्ड है जिसमें भारतीय कलाओं की आठ आधारभूत अवधारणाओं, अर्थात् ब्रह्म, पुरुष, आत्मन्, शरीर, प्राण, बीज, लक्षण और शिल्प का विवेचन किया गया है। ये पारिभाषिक शब्द बहुत व्यापक अर्थ लिए हुए हैं। इन शब्दों ने कलाओं के सिद्धांत तथा व्यवहार दोनों पक्षों को प्रभावित किया है। सुयोग्य विद्वानों तथा विशेषज्ञों द्वारा समालोचनात्मक पद्धति पर प्रस्तुत इन अवधारणाओं के विवेचन में उनके प्रयोग तथा उद्धरणों के माध्यम से अनेक बहुस्तरीय अर्थों को अभिव्यक्त करने का प्रयास किया गया है।

प्रधान सम्पादक : कपिला वात्स्यायन
सम्पादक : बेट्टिना बॉमर
सह-प्रकाशन: इन्दिरा गाँधी राष्ट्रीय कला केन्द्र तथा मोतीलाल बनारसीदास पब्लिशर्स प्रा. लि., 41 यू.ए. बंगलो रोड, जवाहरनगर, दिल्ली-110 007
1988, पृष्ठ : xxviii + 189, मूल्य : 200 रुपए

2. कलातत्त्वकोश: खण्ड - 2 कॉन्सेप्ट ऑफ स्पेस एण्ड टाइम

इस खण्ड में 'दिक्' और 'काल' विषयक बीजभूत पारिभाषिक शब्दों का विवेचन शामिल है। इन पारिभाषिक शब्दों की तत्त्वमीमाँसा से लेकर विज्ञान तथा कलाओं तक के विभिन्न क्षेत्रों से संबंधित मूल ग्रंथों की व्यापक छानबीन के द्वारा विवेचन किया गया है। इन शब्दों पर लिखे गए निबंधों को पढ़कर पाठक विभिन्न संदर्भों में इन अवधारणाओं के बहुस्तरीय अर्थ समझ सकता है। इस खण्ड में सम्मिलित किए गए शब्द है: *बिन्दु, नाभि, चक्र, क्षेत्र, लोक, देश, काल, क्षण, क्रम, संधि, सूत्र, ताल, मान, लय, शून्य, पूर्ण* ।

प्रधान सम्पादक : कपिला वात्स्यायन
सम्पादक : बेट्टिना बॉमर
सह-प्रकाशन : इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र तथा मोतीलाल बनारसी दास पब्लिशर्स प्रा.लि. 41, यू.ए. बंगलो रोड़ जवाहर नगर, दिल्ली-110 007
1992, पृष्ठ : xxxvii + 478, मूल्य : 450 रुपए

3 कलातत्त्वकोश: खण्ड - 3 प्राइमल एलिमेंट्स - महाभूत

इस खण्ड में महाभूतों-मूल तत्त्वों से संबंधित बीजभूत पारिभाषिक शब्दों का विवेचन किया गया है। इन पारिभाषिक शब्दों की तत्वमीमांसा से लेकर विज्ञान तथा कलाओं तक के विभिन्न क्षेत्रों से संबंधित मूल ग्रंथों की व्यापक छानबीन के द्वारा यह विवेचन किया गया है। इन शब्दों पर लिखे गए निबंधों को पढ़ कर पाठक विभिन्न संदर्भों में इन अवधारणाओं के बहुस्तरीय अर्थ समझ सकता है। इस खण्ड में सम्मिलित किए गए शब्द हैं : प्रकृति, भूत-महाभूत, आकाश, वायु, अग्नि, ज्योतिष/प्रकाश, अप, पृथ्वी/भूमि।

प्रधान सम्पादक : कपिला वात्स्यायन
सम्पादक : बेट्टिना बॉमर
सह-प्रकाशन : इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र तथा
मोतीलाल बनारसी दास पब्लिशर्स प्रा.लि.
41, यू.ए. बंगलो रोड़ जवाहर नगर, दिल्ली-110 007
1999, पृष्ठ : xxxviii + 446, मूल्य : 450 रुपए

4 कलातत्त्वकोश: खण्ड - 4 मैनिफैस्टेशन ऑफ नेचर (सृष्टि-विस्तार)

इस खण्ड में उन बीजभूत पारिभाषिक शब्दों का समावेश है जो सृष्टि के विस्तार में महाभूतों के अनुपूरक हैं। इस खंड में जिन पारिभाषिक शब्दों का विवेचन किया गया है वे हैं : इन्द्रिय, द्रव्य, धातु, गुण/दोष, अधिभूत/अधिदैव/अध्यात्म, स्थूल/सूक्ष्म पर, सृष्टि/स्थिति/संहार।

इस खंड में योगदान करने वालों में शामिल हैं : प्रेमलता शर्मा, सरोजा भाटे, एल. एम. सिंह, सातकड़ि मुखोपाध्याय, आर. एस. भट्टाचार्य, एच. एन. चक्रवर्ती, एस. के. लाल, रत्ना बसु और संघमित्रा बसु।

प्रधान सम्पादक : कपिला वात्स्यायन
सम्पादक : अद्वैतवादिनी कौल, और
सुकुमार चट्टोपाध्याय
1999, पृष्ठ : xxxviii + 429, रेखाचित्र, ग्रंथसूची,
सूचक, हार्डबैक, आई. एस. बी. एन 81-208-1547-7, मूल्य : 450 रुपए

कलामूलशास्त्र ग्रंथमाला

5. मात्रालक्षणम् (क.मू.शा. ग्रंथमाला सं.-1)

यह खण्ड इस कृति की पूर्ण रूप से उपलब्ध दो पाण्डुलिपियों पर आधारित है और साथ में इसका अंग्रेजी अनुवाद तथा विस्तृत टिप्पणियां भी दी गई हैं। यह खण्ड अत्यन्त महत्त्वपूर्ण है क्योंकि संभवतः यह ऐसा प्रथम ग्रंथ है जिसमें समय की मात्रा की संकल्पना पर विचार किया गया है, यानी छंदों के लिखित रूप पर स्वराघात दर्शाने वाले उच्चारण चिह्न लगाने तथा उनका सस्वर पाठ करने की शैली को लिखित रूप में प्रस्तुत करने का यह प्रथम प्रयास है।

यह ग्रंथ संगीतज्ञों, संगीत शास्त्रियों, सामवेद के गायकों, यहां तक कि उन शोधकर्ताओं के लिए भी अनिवार्य रूप से पठनीय है जो वैदिक संगीत के स्वरों तथा उनका भारत के शास्त्रीय और लोक संगीत पर प्रभाव, विषय पर शोधकार्य में रुचि रखते हैं।

प्रधान सम्पादक : कपिला वात्स्यायन
सम्पादक : वेन हॉवर्ड
सह-प्रकाशन: इन्दिरा गाँधी राष्ट्रीय कला केन्द्र तथा
मोतीलाल बनारसीदास पब्लिशर्स प्रा. लि.,
41 यू.ए. बंगलो रोड, जवाहरनगर, दिल्ली-110 007
1988, पृष्ठ : xvi + 98, मूल्य : 150 रुपए

6. दत्तिलम् (क.मू.शा. ग्रंथमाला सं. 2)

यह 'गंधर्व' का सार-संग्रह है जो वैदिक संगीत का प्रतिरूप या प्रतिपक्ष और अवैदिक संगीत का मूलाधार है। यह अपनी ही कोटि का एक अनुपम ग्रंथ है और इसलिए विशेष रूप से महत्त्वपूर्ण है क्योंकि यह भरत के नाट्यशास्त्र में किए गए इस विषय के प्रतिपादन का निचोड़ प्रस्तुत करता है और साथ ही एक तरह से उसका अनुपूरक भी है।

प्रधान सम्पादक : कपिला वात्स्यायन
सम्पादक : मुकुन्द लाठ
सह-प्रकाशन: इन्दिरा गाँधी राष्ट्रीय कला केन्द्र तथा
मोतीलाल बनारसीदास पब्लिशर्स प्रा. लि.,
41 यू.ए. बंगलो रोड, जवाहरनगर, दिल्ली-110 007
1988, पृष्ठ : xvii + 236, मूल्य : 300 रुपए

7. श्रीहस्तमुक्तावली (क.मू.शा. ग्रंथमाला सं. 3)

भारत के विभिन्न भागों में 17वीं शताब्दी तक संगीत, नृत्य और नाट्य विषयों पर अनेक पुस्तकें लिखी जाती रहीं। 12वीं से 16वीं सदी के बीच क्षेत्रीय शैलियां उभर आईं। सभी भागों में मध्यकालीन ग्रंथ खोजे गए हैं। उनमें से एक है *श्रीहस्तमुक्तावली* जो पूर्वी परम्परा से सम्बद्ध है। यद्यपि इसके उद्भव के विषय में अस्पष्टता है, इसका पाठ मैथिली तथा असमिया प्रतिलिपियों में पाया गया है। लेखक ने अपने प्रयास को 'हस्त' (हस्त संकेतों) के विस्तृत विवेचन तक ही सीमित रखा है। डॉ. महेश्वर नियोग ने बड़ी सावधानी से इसके पाठ का सम्पादन तथा अनुवाद किया है और साथ ही नाट्यशास्त्र तथा *संगीतरत्नाकर* की परम्परा से उसकी समानताओं तथा भिन्नताओं को दर्शाया है। यह ग्रंथ उन हस्तसंकेतों की भाषा पर पर्याप्त प्रकाश डालता है जो सम्भवतः पूर्वी प्रदेशों में अपनाए जाते रहे होंगे।

प्रधान सम्पादक : कपिला वात्स्यायन
सम्पादक : महेश्वर नियोग
सह-प्रकाशन: इन्दिरा गाँधी राष्ट्रीय कला केन्द्र तथा
मोतीलाल बनारसीदास पब्लिशर्स प्रा. लि.,
41 यू.ए. बंगलो रोड, जवाहरनगर, दिल्ली-110 007
1992, पृष्ठ : xii + 205, मूल्य : 300 रुपए

8. कविकर्णेरपाला, 4 खंडों में (क.मू.शा. ग्रंथमाला सं. 4, 5, 6, 7)

17वीं शताब्दी के उत्तरार्द्ध में बंगला भाषा में रचित कविकर्ण के "सोलोपाला" यानी सत्यनारायण के गुणानुवाद के 16 पदों का गायन समकालीन उड़ीसा में व्यापक रूप से प्रचलित है। सत्यनारायण की पूजा और व्रतकथा का वाचन तथा उसके पश्चात् "शिरनी" खास किस्म के मुस्लिम प्रसाद का वितरण जो "सत्यपीर" (जैसा कि पाला/पदों में सत्यनारायण को कहा गया है) को चढ़ाया जाता है। भारत में सर्वत्र हिन्दुओं द्वारा इसी समेकित प्रक्रिया को अपनाया जाता है। इन पालाओं सहित, सभी भारतीय भाषाओं में उपलब्ध व्रत कथाओं का उद्गम स्कंद पुराण के रेवा खंड में पाया जाता है परन्तु 'सत्यपीर' शब्द किसी भी व्रत कथा में नहीं मिलता, केवल कविकर्ण के पालाओं में ही प्रयुक्त हुआ है। एक मुस्लिम फ़कीर का अपने सभी पालाओं में उल्लेख करके और 'शिरनी' को 'प्रसाद' के तौर पर बंटवा कर कविकर्ण ने धार्मिक तथा कर्मकांडीय धरातलों पर सांस्कृतिक समन्वय स्थापित करने का प्रशंसनीय प्रयास किया है जो राष्ट्रीय एकता की दिशा में एक बहुमूल्य योगदान है। कविकर्ण ने अपने 16 पालाओं को जिस क्रम में रखना चाहा था उसी क्रम को इस पुस्तक में अपनाया गया है।

प्रधान सम्पादक : कपिला वात्स्यायन
सम्पादक : विष्णुपद पाण्डा
सह-प्रकाशन: इन्दिरा गाँधी राष्ट्रीय कला केन्द्र तथा
मोतीलाल बनारसीदास पब्लिशर्स प्रा. लि.,
41 यू.ए. बंगलो रोड, जवाहरनगर, दिल्ली-110 007
1992, पृष्ठ : ci + 1182, मूल्य : 1200 रुपए (4 खण्ड).

9. बृहद्देशी खण्ड-1 (क.मू.शा. ग्रंथमाला सं. 8)

संगीत के क्षेत्र में बृहद्देशी पहला उपलब्ध ग्रंथ है जिसमें *राग* का वर्णन किया गया है, *सारिगम* के विषय में बताया गया है, *श्रुति, स्वर, ग्राम, मूर्च्छना* आदि के बारे में नया दृष्टिकोण प्रस्तुत किया गया है और देशी तथा उसके प्रतिरूप मार्ग की संकल्पना को प्रतिष्ठापित किया गया है।

यद्यपि पाण्डुलिपि की खोज के अभाव में, यह ग्रंथ अभी तक अपूर्ण है, तथापि यह संस्करण, जहां तक इसका व्याप्ति क्षेत्र है जो कि पर्याप्त रूप से विस्तृत है, अध्ययन एवं शोध के प्रयोजन से काफी उपयोगी होगा। सम्पूर्ण कृति तीन खण्डों में प्रकाशित की जाएगी।

प्रधान सम्पादक : कपिला वात्स्यायन
सम्पादक : प्रेमलता शर्मा
सह-प्रकाशन: इन्दिरा गाँधी राष्ट्रीय कला केन्द्र तथा
मोतीलाल बनारसीदास पब्लिशर्स प्रा. लि.,
41 यू.ए. बंगलो रोड, जवाहरनगर, दिल्ली-110 007
1992, पृष्ठ : xviii + 194, मूल्य : 275 रुपए.

10. कालिकापुराणे मूर्तिविनिर्देशः (क.मू.शा. ग्रंथमाला सं. 9)

कालिकापुराणे मूर्तिविनिर्देशः, कालिकापुराण में से लिए गए लगभग 550 श्लोकों का संग्रह है, जिसमें अनेक देवी-देवताओं तथा अंशावतारों का शारीरिक वर्णन किया गया है। उनमें कुछ तो केवल संकल्पनात्मक हैं, किन्तु कुछ अन्य पत्थर तथा धातु प्रतिमाओं के रूप में प्रस्तुत किए जाते हैं।

कालिकापुराण ईसा की नौवीं शताब्दी के अंतिम दशकों या दसवीं शताब्दी के प्रारंभिक काल का एक महत्त्वपूर्ण उप-पुराण है। इसकी रचना प्राचीन असम (कामरूप) में मातृदेवी कामाख्या के गुणानुवाद और उसकी आराधना की कर्मकाण्डीय विधि बताने के लिए की गई थी। *कालिकापुराण* के विभिन्न अध्यायों में विभिन्न देवी-देवताओं के विषय में बिखरे हुए श्लोकों को प्रत्येक देवता का सम्पूर्ण चित्रण प्रस्तुत करने के लिए देवतानुसार संकलित किया गया है। संस्कृत मूलपाठ के साथ-साथ प्रत्येक श्लोक का अंग्रेजी में यथार्थ अनुवाद भी दिया गया है।

प्रधान सम्पादक : कपिला वात्स्यायन
सम्पादक : विश्वनारायण शास्त्री
सह-प्रकाशन: इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र तथा
मोतीलाल बनारसीदास पब्लिशर्स प्रा. लि.,
41 यू.ए. बंगलो रोड, जवाहरनगर, दिल्ली-110 007
1994, पृष्ठ : xxxiv + 159, मूल्य : 250 रुपए

10. बृहद्देशी खण्ड - 2 (क.मू.शा. ग्रंथमाला सं. 10)

इस खण्ड में *बृहद्देशी* के *प्रबन्धाध्याय* तक का सम्पूर्ण उपलब्ध पाठ प्रस्तुत किया गया है। यह *जाति* के विवेचन से प्रारंभ होकर *ग्रामराग* तथा *याष्टिक* एवं शार्दूल के अनुसार उनकी परिभाषाएं देते हुए *देशी रागों* का आंशिक वर्णन करके प्रबन्धाध्याय के साथ समाप्त हो जाता है। इस खण्ड के मूलपाठ का कलेवर प्रथम खण्ड में प्रस्तुत पाठ से लगभग दोगुना है। मूल पाठ में दिए गए इन विषयों के विवेचन की प्रमुख विशेषताएँ 'विमर्श' में यत्र-तत्र इंगित की गई हैं। किन्तु ये केवल बिन्दुओं के अनुसार ही स्पष्टीकरण हैं। तृतीय खण्ड में जो समालोचना दी जाएगी वही सम्पूर्ण मूल ग्रंथ की विषयवस्तु की समीक्षा प्रस्तुत करेगी। उसमें पूर्ववर्ती तथा परवर्ती ग्रंथों के माध्यम से दृष्टिपात किया जाएगा।

प्रधान सम्पादक : कपिला वात्स्यायन
सम्पादक : प्रेमलता शर्मा
सह-प्रकाशन: इन्दिरा गाँधी राष्ट्रीय कला केन्द्र तथा
मोतीलाल बनारसीदास पब्लिशर्स प्रा. लि.,
41 यू.ए. बंगलो रोड, जवाहरनगर, दिल्ली-110 007
1994, पृष्ठ : xviii + 320, मूल्य : 300 रुपए

12. काण्वशतपथब्राह्मणम् खण्ड-1 व 2 (क.मू.शा. ग्रंथमाला सं. 12)

यह पहला अवसर है जबकि शुक्ल यजुर्वेद की काण्व शाखा के शतपथ ब्राह्मण का एक सम्पूर्ण आलोचनात्मक संस्करण अंग्रेजी अनुवाद के साथ प्रकाशित किया गया है। इस संस्करण में, तेलुगु लिपि में प्रकाशित पाठों के अलावा, कुछ अन्य पाण्डुलिपियों में उपलब्ध पाठान्तरों को भी ध्यान में रखा गया है, जो प्रो. कैलेंड को उपलब्ध नहीं थे जिन्होंने इसके प्रथम सात कांडों का समालोचनात्मक संस्करण निकाला था। यह सम्पूर्ण अंग्रेजी अनुवाद प्रस्तुत करने का भी प्रथम प्रयास है निस्संदेह माध्यन्दिन तथा काण्व शाखा का शतपथ ब्राह्मण के पाठों में उसके अष्टम से षोडश तक के काण्डों में कोई विशेष अंतर नहीं है और पूर्वोक्त का प्रो0 ईगलिंग का अनुवाद उपलब्ध है, फिर भी श्रौत यज्ञों के कर्मकांडों में सक्रिय रूप से संलग्न परम्परागत विद्वानों के साथ विशद विचार-विमर्श के फलस्वरूप परवर्ती भाग का नए सिरे से अनुवाद करना आवश्यक समझा गया ।

पाठान्तर-विशेष को अपनाने का आधार बताने के लिए मूलपाठ संबंधी टिप्पणियां मूलपाठ के अध्ययन के फलस्वरूप उत्पन्न हुए कुछ चुने हुए प्रश्नों पर चर्चा स्वरूप 'विमर्श' शीर्षक खण्ड; ब्राह्मण ग्रंथों के अनुसार विषयवस्तु की विस्तृत सूची और पारिभाषिक शब्दों की सूची इस प्रयास की कुछ अतिरिक्त विशिष्टताएँ हैं। श्रौत यज्ञों के विशेषज्ञ परम्परागत विद्वानों से प्राप्त सुझाव और मार्गदर्शन इस संस्करण की श्रेष्ठता के प्रतीक हैं।

प्रथम खण्ड में पहले काण्ड का पाठ अनुवाद के साथ पाठविमर्श सहित प्रस्तुत किया गया है। दूसरा तथा तीसरा खण्ड पाठ्य टिप्पणियों के साथ समाहित है। शेष भाग को कलामूलशास्त्र ग्रंथमाला के अन्य खण्डों में प्रकाशित किया जाएगा।

प्रधान सम्पादक : कपिला वात्स्यायन
सम्पादक : सी.आर. स्वामिनाथन
सह-प्रकाशन: इन्दिरा गाँधी राष्ट्रीय कला केन्द्र तथा
मोतीलाल बनारसीदास पब्लिशर्स प्रा. लि.,
41 यू.ए. बंगलो रोड, जवाहरनगर, दिल्ली-110 007
1994, पृष्ठ : xxiii + 168, मूल्य : 300 रुपए (खण्ड- I)
1997, पृष्ठ : xxv + 297, मूल्य : 550 रुपए (खण्ड- II)

13. स्वायम्भुवसूत्रसंग्रह : (क.मू.शा. ग्रंथमाला सं. 13)

स्वायम्भुवसूत्रसंग्रह : शैवसिद्धान्त के 28 आगमों की परम्परागत सूची में तेरहवां आगम है। शैव सम्प्रदाय के प्राचीनतम आचार्यों में से एक आचार्य सद्योज्योति ने इसके विद्यापाद खण्ड पर एक टीका लिखी थी। इसमें जिन विषयों का विवेचन किया गया है वे हैं : पशु अर्थात् बंधनयुक्त जीवात्मा; पाश यानी बंधन; अनुग्रह अर्थात् प्रभुकृपा और अध्वन् यानी मुक्ति प्राप्ति के मार्ग। सद्योज्योति ने इन संकल्पनाओं द्वारा उठाई गई दार्शनिक समस्याओं पर सुनिश्चित एवं आत्यन्तिक दृष्टिकोण अपनाया है। उसने उनके कर्मकांडीय आधार पर बल दिया है, जो कि तांत्रिक साहित्य की मूल प्रवृत्ति और शैव धर्म का मर्म है। इस पुस्तक में सद्योज्योति की टीका के मूलपाठ का समालोचनात्मक सम्पादन करके उसे अंग्रेजी अनुवाद के साथ प्रकाशित किया गया है।

प्रधान सम्पादक : कपिला वात्स्यायन
सम्पादक : पियरे सिलवैन पिलियोजा
सह-प्रकाशन: इन्दिरा गाँधी राष्ट्रीय कला केन्द्र तथा
मोतीलाल बनारसीदास पब्लिशर्स प्रा. लि.,
41 यू.ए. बंगलो रोड, जवाहरनगर, दिल्ली-110 007
1994, पृष्ठ : xxxviii + 144, मूल्य : 200 रुपए

14. मयमतम् खण्ड-1 व 2 (क.मू.शा. ग्रंथमाला सं. 14 और 15)

मयमतम् एक वास्तुशास्त्र अर्थात् वास (घर) विषयक ग्रंथ है और इस प्रकार यह देवी-देवताओं तथा मनुष्यों के वासगृहों के संबंध में उनके निर्माणस्थल से लेकर मंदिर की दीवारों के प्रतिमा विज्ञान तक सभी पक्षों का विवेचन करता है। इसमें ग्रामों एवं नगरों तथा देवालयों, घरों, भवनों एवं प्रासादों के यथार्थ विवरण प्रचुर मात्रा में दिए गए हैं। यह ग्रंथ मकान के लिए उचित स्थान एवं दिशा, सही आयाम

और उपयुक्त सामग्री के चयन के बारे में निर्देश देता है। यह एक और वास्तुविद् के लिए नियमपुस्तक है तो दूसरी ओर जनसाधारण के लिए मार्गदर्शक पुस्तक। दक्षिण भारत के पारम्परिक स्थपतियों के चिन्तन की उपज यह पुस्तक इस समय पर्याप्त रुचि का विषय है जब सभी क्षेत्रों में उपलब्ध तकनीकी परम्पराओं को इस उद्देश्य से जांचा-परखा जा रहा है कि क्या आज उनका उपयोग हो सकता है।

डॉ. ब्रूनो दाजां द्वारा तैयार किए गए इस द्विभाषी संस्करण में समालोचनात्मक रूप में सम्पादित संस्कृत मूलपाठ दिया गया है जो कि इसी सम्पादक द्वारा पहले सम्पादित उस संस्करण का संशोधित एवं परिष्कृत रूप है जो पांडिचेरी के फ्रेंच इंडोलॉजी संस्थान के प्रकाशनों में प्रकाशन संख्या-40 के रूप में प्रकाशित हुआ है। पूर्व-प्रकाशित अंग्रेजी अनुवाद भी अब प्रचुर टिप्पणियों के साथ संशोधित कर दिया गया है। इस संस्करण की उपयोगिता इसमें विश्लेषणात्मक विषयवस्तु की तालिका तथा विस्तृत शब्दावली जोड़ देने से और भी बढ़ गई है।

प्रधान सम्पादक : कपिला वात्स्यायन
सम्पादक : ब्रूनो दाजां
सह-प्रकाशन: इन्दिरा गाँधी राष्ट्रीय कला केन्द्र तथा
मोतीलाल बनारसीदास पब्लिशर्स प्रा. लि.,
41 यू.ए. बंगलो रोड, जवाहरनगर, दिल्ली-110 007
1994, पृष्ठ : ci + 978, मूल्य : 1000 रुपए

15. शिल्परत्नकोश (क.मू.शा. ग्रंथमाला सं. 16)

शिल्परत्नकोश 17वीं शताब्दी में उड़ीसा के स्थापक निरंजन महापात्र द्वारा रचित ग्रंथ है जिसमें मंदिर के सभी भागों और उड़ीसा के मुख्य-मुख्य मंदिर रूपों, जैसे 'मंजुश्री' तथा 'खाकार' का वर्णन किया गया है। इसमें एक खंड मूर्तिकला (प्रासादमूर्ति) पर भी है और मूर्ति निर्माण (प्रतिमालक्षण) पर एक परिशिष्ट जोड़ा गया है। यह ग्रंथ यद्यपि इसमें वर्णित मंदिरों के निर्माण काल से बहुत बाद की रचना है, अपने समय की जीवंत परम्परा का चित्रण करता है और उड़ीसा के मंदिर स्थापत्य संबंधी शब्दावली को स्पष्ट करने में बहुत सहायक है। तथापि इस ग्रंथ का सबसे महत्त्वपूर्ण योगदान यह है कि इसने श्रीचक्र के साथ मंजुश्री मंदिर के तादात्म्य का निरूपण किया है जिसके फलस्वरूप लेखकों को भुवनेश्वर के राजराणी मंदिर के बारे में यह जानने में सहायता मिली है कि यह मंदिर श्रीचक्र के रूप में राजराजेश्वरी को समर्पित है।

इस प्रकाशन का मूल पाठ तीन तालपत्रीय पाण्डुलिपियों के आधार पर सम्पादित तथा अनूदित किया गया है और साथ में बहुत से चित्र (रेखाचित्र एवं तस्वीरें) दिए गए हैं। साथ में दी गई शब्दावली

पुस्तक की उपयोगिता को बढ़ाती है। यह ग्रन्थ अब तक प्रकाशित शिल्प/वास्तु साहित्य की श्रीवृद्धि करने वाला एक महत्त्वपूर्ण प्रकाशन है और यह उड़ीसा के मंदिर स्थापत्य में रुचि रखने वाले जिज्ञासुओं के लिए बहुत उपयोगी होगा।

प्रधान सम्पादक : कपिला वात्स्यायन
सम्पादक एवं अनुवादन : बेट्टिना बॉमर तथा राजेन्द्र प्रसाद दास
सह-प्रकाशन: इन्दिरा गाँधी राष्ट्रीय कला केन्द्र तथा
मोतीलाल बनारसीदास पब्लिशर्स प्रा. लि.,
41 यू.ए. बंगलो रोड, जवाहरनगर, दिल्ली-110 007
1994, पृष्ठ : xii + 229, प्लेटें, मूल्य : 400 रुपए.

16. नर्तननिर्णय-खण्ड-1 व 2 (क.मू.शा. ग्रंथमाला सं. 17, 18 व 19)

यह भारतीय संगीत एवं नृत्य पर, संगीत रत्नाकर के बाद रचे जाने वाले ग्रंथों में से एक है। यह अपने काल(ईसा की 16वीं शताब्दी) की इन कलाओं के सिद्धान्त और व्यवहार दोनों पक्षों की जानकारी के लिए एक प्रामाणिक स्रोत है। यद्यपि यह एक सीधी-सादी और सुस्पष्ट साहित्यिक शैली में लिखा गया है तथापि यह अपने चित्रोपम वर्णनों के माध्यम से विशद कल्पनाशीलता प्रस्तुत करता है।

एक अद्वितीय क्रमबद्ध योजना के अन्तर्गत, *नर्तननिर्णय* में उसके प्रथम तीन अध्यायों में नृत्य के प्रति क्रमशः करताल वादक, मृदंग वादक और गायक के योगदान का वर्णन करने के बाद अंतिम तथा सबसे लम्बे चतुर्थ अध्याय में नर्तक की कला का विवेचन किया गया है। इस अध्याय में कला से संबंधित वर्णमाला, शब्दावली, व्याकरण तथा मुहावरे के विषय में ही नहीं, अपितु उत्तर भारत तथा दक्षिण भारत की कुछ नृत्य शैलियों समेत (कुछ को तो वस्तुतः निरूपित किया गया है) प्रस्तुति संबंधी परम्पराओं तथा रंगपटल में भी नई विशेषताओं का समावेश किया गया है। इसमें बंध नृत्य तथा अनिबंध नृत्य का जो विशद विवेचन प्रस्तुत किया है वह परम्परावादी तथा नवाचारवादी दोनों प्रकार के नर्तकों के लिए गम्भीरतापूर्वक ध्यातव्य है।

इस ग्रंथ का सम्पूर्ण मूल पाठ एक विस्तृत एवं विद्वत्तापूर्ण टीका के साथ 3 खण्डों में प्रकाशित किया जाएगा।

प्रधान सम्पादक : कपिला वात्स्यायन
सम्पादक : आर. सत्यनारायण
सह-प्रकाशन: इन्दिरा गाँधी राष्ट्रीय कला केन्द्र तथा
मोतीलाल बनारसीदास पब्लिशर्स प्रा. लि.,
41 यू.ए. बंगलो रोड, जवाहरनगर, दिल्ली-110 007
1994, पृष्ठ : xiii + 357, मूल्य : 450 रुपए (खण्ड-1)
1996, पृष्ठ : xii + 491, मूल्य : 650 रुपए(खण्ड-11).

17. कृष्णगीति ऑफ मानवेद (क. मू. शा. ग्रंथमाला सं० 20)

कृष्णगीति कोझीकोड के जेमोरिन मानवेद (17 वीं शताब्दी ईसवी) द्वारा रचित एक भक्ति-रसात्मक गीतिकाव्य है। संस्कृत भाषा में रचित इस काव्य में कृष्ण के अवतार से लेकर स्वर्गारोहण तक के जीवन का चित्रण है। आठ अध्यायों में विभाजित और संभावत: जयदेव के गीतगोविन्द की शैली पर रचित तथा कृष्ण को संबोधित एकालाप के रूप में लिखित यह काव्य भक्तिभाव से ओतप्रोत है। यह कृष्ण भगवान की महिमा का वर्णन करते हुए पृथ्वी पर उनकी लीलाओं का गुणगान करता है। इसके अतिरिक्त, यह काव्य "कृष्ण-अट्टम" नामक भक्ति-भावपूर्ण नृत्य-नाटक के लिए स्रोत ग्रंथ है, जो मध्य केरल में स्थित गुरुवायुर मंदिर से संबद्ध है।

इस सम्पूर्ण काव्य में सर्वत्र जो भक्ति रस परिव्याप्त है उससे एक अद्भुत गीतात्मक और नाटकीय शक्ति उत्पन्न हो जाती है जिससे कृष्ण-अट्टम अभिनय की अनन्त संभावनाओं से परिपूर्ण हो जाता है। एक साहित्यिक कृति और एक स्रोत-ग्रंथ के रूप में काव्य की दोहरी अनुभूति इसे पाठक तथा दर्शक दोनों के लिए समान रूप से रोचक बना देती है।

प्रकाशित संस्करण में कृष्णगीति के पाठ को पहली बार देवनागरी लिपि में सुबोध एवं प्रांजल अंग्रेजी अनुवाद के साथ प्रस्तुत किया गया है।

सम्पादक एवं अनुवादक : सी. आर. स्वामिनाथन और सुधा गोपालकृष्ण
सह-प्रकाशन: इन्दिरा गाँधी राष्ट्रीय कला केन्द्र तथा
मोतीलाल बनारसीदास पब्लिशर्स प्रा. लि.,
41 यू.ए. बंगलो रोड, जवाहरनगर, दिल्ली-110 007
1997, पृष्ठ : xv + 349, प्लेटें : 8.25x19 सें. मी.
चित्र; हार्ड बैक; आईएसबीएन : 81-208-14789; मूल्य : 650 रुपए

18. रिसाल-ए-रागदर्पण (क.मू.शा. ग्रंथमाला सं० 21)

तर्जुमा-ए-मानकुतूहल और रिसाल-ए-रागदर्पण एक संयुक्त ग्रंथ है जिसकी रचना नवाब सैफ ख़ान जो फ़कीरुल्लाह के नाम से ज्यादा मशहूर थे, ने की थी। रिसाल-ए-रागदर्पण तत्कालीन व्यवहृत संगीत विषय की एक मौलिक रचना है जबकि तर्जुमा-ए-मानकुतूहल अनुवाद (तर्जुमा) मात्र है।

जैसा कि पाण्डुलिपि के पन्ने पर दर्ज किया गया है, फकीरुल्लाह इस नुस्खा (पाण्डुलिपि) के मालिक व मुसन्निफ़ (स्वामी एवं लेखक) दोनों थे। यह स्पष्ट है कि फकीरुल्लाह ने अपने इस अनुवाद तथा मूल रचना (तस्नीफ़) दोनों को एक साथ वर्ष 1076 हिजरी (1666 ई0) में पूरा किया था।

फ़कीरुल्लाह का यह ग्रंथ 10 बाबों (अध्यायों) में है। पहले बाब में बताया गया है कि इस ग्रंथ की रचना क्यों की गई। दूसरे बाब में भिन्न-भिन्न रागों की पहचान बताई गई है। तीसरा बाब उन रागों से संबंधित ऋतु-काल के बारे में है जिसमें यह भी बताया गया है कि अमुक राग के लिए दिन अथवा रात का कौन सा प्रहर/समय उपयुक्त है। चौथा सुर (स्वर) बोध के विषय में, पांचवां विभिन्न साज़ (वाद्यों) की सही पहचान के बारे में है। छठे बाब में गोइन्दों (गीतकार तथा संगीतकार) के दोषों को स्पष्ट किया गया है। सातवां बाब आवाज की खासियतों (कण्ठ की विशेषताएं), उनकी श्रेणियों तथा हंजरा (स्वर यंत्र) के बारे में है। आठवें बाब में उस्ताज-ए-कामिल (कला-गुरु) की विशेषताओं का विवेचन किया गया है। नवां बाब वृंद (वाद्य वृंद) (ऑर्केस्ट्रा) की समझ और एक साथ मिलकर वाद्य बजाने के लाभों के बारे में है। दसवें बाब में समकालीन गोइन्दों (कवि संगीतज्ञों) का परिचय दिया गया है।

'खातिमा' यानी समाप्ति के रूप में पुस्तक के अंत में तत्कालीन कश्मीरी संगीत के विषय में लेखक ने अपनी संक्षिप्त टिप्पणी दी है।

प्रधान सम्पादक : कपिला वात्स्यायन

सम्पादक : शाहब सरमदी

सह-प्रकाशन, इन्दिरा गाँधी राष्ट्रीय कला केन्द्र तथा

मोतीलाल बनारसीदास पब्लिशर्स प्रा. लि.,

41 यू.ए. बंगलो रोड, जवाहरनगर, दिल्ली-110 007

1996, पृष्ठ : ixviii + 314, प्लेटें 3; मूल्य : 500 रुपए

19. संगीतोपनिषत्सारोद्धार (वाचनाचार्य श्री सुधाकलश द्वारा रचित)

"संगीतोपनिषत्सारोद्धार" एक महत्वपूर्ण मध्यकालीन ग्रंथ है जो 1350 में लिखा गया था। यह एक जैन विद्वान वाचनाचार्य श्री सुधाकलश द्वारा रचित बलताया जाता है। यह संगीतशास्त्र की एक विशिष्ट पश्चिम भारतीय और जैन धारा का प्रतिनिधित्व करता है। संगीत विषय की महान कृति 'संगीतरत्नाकर के लगभग एक सौ वर्ष बाद रचित यह ग्रंथ विषय-विवेचन तथा पद्धति की दृष्टि से संगीतरत्नाकर से काफी भिन्न है।

इस ग्रंथ की स्थिति संगीतरत्नाकर और नर्तननिर्णय जैसी उत्तर मध्यकालीन कृतियों के बीच की है। कतिपय प्रमुख मूल सिद्धान्तों का पालन करने के भारतीय तथ्य का सार प्रस्तुत करते हुए यह ग्रंथ परस्पर-प्रभावों की अनेक क्रियाओं को प्रकट एंव अभिव्यक्त करता है और रूप तथा तकनीक के कुछ विशेष मूर्तरूप तथा लिंग निर्धारित कर दिया गया है; यह परिवर्तन इस

ग्रंथ की एक महत्वपूर्ण विशेषता है।

इस संस्करण में पाठ का अनेक दुर्लभ पांडुलिपियों के आधार पर समालोचनात्मक सम्पादन किया गया है। और साथ में यथार्थ अंग्रेजी अनुवाद भी दिया गया है।

सम्पादक तथा अनुवादक : एलिन माइनर
सह-प्रकाशन: इन्दिरा गाँधी राष्ट्रीय कला केन्द्र तथा
मोतीलाल बनारसीदास पब्लिशर्स प्रा. लि.,
जवाहारनगर, दिल्ली-110007
1998, पृष्ठ : ixvii + 263, 25x19 सेंमी.
ग्रंथसूची, सूचक, हार्ड बैक आई. एस. बी. एन. : 81-208-1548-3
मूल्य : 400 रुपए.

20. लाट्यायन-श्रौत-सूत्र (खंड- 1,2 एंव 3)

श्रौत-सूत्र समस्त सूत्र साहित्य का एक अत्यन्त महत्वपूर्ण अंग है जो वैदिक ग्रंथों अर्थात् संहिताओं तथा ब्राह्मणों का सारतत्व संक्षेप में प्रस्तुत करता है और भारत में यज्ञ-परम्परा को आगे बल प्रदान करता है।

लाट्यायन श्रौत-सूत्र समावेद की कौथुम शाखा से संबद्ध है। यह सोमयज्ञ के विशेष संदर्भ में श्रौत-कर्म में मंत्रोच्चार करने वाले पुरोहितों अर्थात् उद्‌भगाता, प्रस्तोता, प्रतिहर्ता और सुब्रह्मण्य के कर्तव्यों का उल्लेखन करता है। प्रस्तुत संस्करण में इसके विवेचनात्मक सम्पादन के साथ-साथ अंग्रेजी अनुवाद भी दिया गया है।

इस श्रौत-सूत्र में एकाह, अहीन और सत्र सोमयज्ञों में उद्‌गाताओं के कर्तव्यों के साथ-साथ, सोम तथा अन्य अनके यज्ञों में ब्राह्मण पुरोहित की भूमिका का भी विवेचन किया गया है।

इस संस्करण में अग्निस्वामी का टीका के उद्‌धरण और द्राह्यायन-श्रौत-सूत्र तथा उसकी धन्विन् कृत टीका के समरूप अंश भी दिए गए हैं।

सम्पादक तथा अनुवादक : एच. जी. रानाडे
सह-प्रकाशन: इन्दिरा गाँधी राष्ट्रीय कला केन्द्र तथा
मोतीलाल बनारसीदास पब्लिशर्स प्रा. लि.,
जवाहारनगर, दिल्ली-110007
1998, 3 खंड (पृष्ठ : xxi + 1266, 25x19 सेंमी.
ग्रंथसूची, सूचक, हार्डबैक आई. एस. बी. एन.;
81-208-1548-3 (सेट); मूल्य : 2200 रुपए.

कलासमालोचन ग्रंथमाला

21. राम तेजेण्ड एण्ड राम रिलीफ्स इन इंडोनेशिया

विलियम स्टटरहाइम द्वारा 1925 में लिखित *राम तेजेण्ड एण्ड राम रिलीफ्स* पुस्तक अपनी पुरातत्वीय सटीकता के कारण तथा एशियाई कला के अध्ययन के लिए भाषायी विश्लेषण के सिद्धान्तों को लागू करने की नई विधि का सूत्रपात करने के कारण भी एक उच्च कोटि की कृति मानी गई है। इसमें इंडोनेशिया के प्रम्बनन मंदिर का विवेचन किया गया है।

लेखक : विलियम स्टटरहाइम
आमुख : कपिला वात्स्यायन
सह-प्रकाशन : इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र तथा
अभिनव पब्लिकेशन, ई-37, हौजखास, नई दिल्ली-110 016
1989, पृष्ठ : xxx + 287 + 230 प्लेटें, मूल्य : 600 रुपए

22. द याउजेंड आर्म्ड अवलोकितेश्वर

कला मर्मज्ञों एवं इतिहासज्ञों ने अवलोकितेश्वर की संकल्पना की नानाविध व्याख्या की है। यद्यपि अवलोकितेश्वर का मूल संस्कृत पाठ लुप्त हो गया फिर भी इसकी संकल्पना तथा छवि तिब्बत, चीन तथा जापान तक पहुंच गई। पुस्तक का मूल पाठ लिखित तथा मौखिक अनेक रूपों में उपलब्ध है।

प्राक्कथन : कपिला वात्स्यायन
मूलपाठ : लोकेश चन्द्र
सह-प्रकाशन : इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र तथा
अभिनव पब्लिकेशन, ई-37, हौजखास, नई दिल्ली-110 016
1988, पृष्ठ : viii + 303, मूल्य : 500 रुपए

23. सलेक्टेड् लेटर्स आफ आनन्द के. कुमारस्वामी (अप्राप्य)

डा. आनन्द के. कुमारस्वामी की ग्रंथमाला के संग्रह ग्रंथ लेखक के संशोधनों तथा परिवर्तनों के साथ, विषयानुसार सुव्यवस्थित रूप में प्रकाशित किए जायेंगे। इस ग्रंथमाला में उनके द्वारा, श्रीलंका, भारत, एशिया तथा यूरोप के शिल्प, कलाओं, खनिजों तथा भू-विज्ञान पर लिखी गई समग्र सामग्री

सम्मिलित की गई है। सिलेक्टेड लेटर्स आफ आनंद कुमारस्वामी इस ग्रंथमाला का पहला पुष्प है। इस खंड में सम्मिलित किए गए पत्र जो पहली बार प्रकाशित हो रहे हैं, उनसे इस वितक्षण मनीषी के अनमनीय व्यक्तित्व का पता चलता है जो किसी प्रकार के सिद्धान्तों, विचारधाराओं अथवा राजनीतिक या दार्शनिक मतों या वादों में विश्वास नहीं करता था। एक भू-वैज्ञानिक के रूप में अपने प्रशिक्षण के माध्यम से प्राप्त वैज्ञानिक सूक्ष्मता के साथ अपनी संवेदनशीलता का समन्वय करते हुए डॉ. आनन्द के० कुमारस्वामी ने इतिहास, दर्शन, धर्म, कला एवं शिल्प की विभिन्न विधाओं का अवगाहन किया है।

सम्पादक : एलविन मूर जूनियर और राम पी० कुमारस्वामी
सह-प्रकाशन : इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र तथा
ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस, वाई.एम.सी.ए.
लाइब्रेरी बिल्डिंग, जयसिंह रोड, नई दिल्ली-110 001
1988, पृष्ठ : xxxiii + 479, मूल्य : 250 रुपए.

24. सलेक्टेड् लेटर्स आफ रोमांरोला (अप्राप्य)

ये पत्र रोमांरोला की गम्भीर कला मर्मज्ञता और अत्यन्त हृदयस्पर्शी अन्तर्वैयक्तिक संवेदनशीलता की सुकोमलता के द्योतक हैं। ये उनकी इस प्रतिबद्धता को प्रमाणित करते हैं कि समग्र विश्व आध्यात्मिक दृष्टि से एक है। मानवता–देश व काल की सीमाओं में नहीं बंधी है।

सम्पादक : फ्रांसिस डोर एवं मैरी लौरे प्रेवोस्ट
प्राक्कथन : कपिला वात्स्यायन
सह-प्रकाशन : इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र तथा
ऑक्सफोर्ड, यूनिवर्सिटी प्रेस, वाई.एम.सी.ए.
लाइब्रेरी बिल्डिंग, जयसिंह रोड, नई दिल्ली-110 001
1990, पृष्ठ : xvii + 139, मूल्य : 125 रुपए.

25. वॉट इज़ सिविलाइजेशन (अप्राप्य)

इस खण्ड में प्रकाशित बीस निबंधों में ऐसे आधारभूत प्रश्न पूछे गए हैं जो कुमारस्वामी की अद्वितीय शैली में मर्मवेधी होने के साथ-साथ तीक्ष्ण भी हैं। प्रथम निबंध में "सभ्यता" शब्द के मूल, उसके अर्थ तथा संदर्भ की यूनानी तथा संस्कृत भाषाओं में गहराई तक खोज की गई है और एक साथ समग्र पाश्चात्य तथा प्राच्य सभ्यताओं का आद्योपांत विवेचन किया गया है

सम्पादक : आनंद के. कुमारस्वामी
प्राक्कथन : सैयद हुसैन नस्र
सह-प्रकाशन : इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र तथा
ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस, वाई.एम.सी.ए
लाइब्रेरी बिल्डिंग, जयसिंह रोड, नई दिल्ली-110 001
1989 पृष्ठ : xi + 193, मूल्य : 250 रुपए

26. इस्लामिक आर्ट एण्ड स्पिरिच्युअलिटी

यह अंग्रेजी भाषा में ऐसी पहली पुस्तक है जिसमें इस्लामिक कला, जिसमें रूपंकर कलाएँ ही नहीं, साहित्य एवं संगीत भी शामिल हैं, के आध्यात्मिक महत्त्व का विवेचन किया गया है। इसमें इस्लाम की विभिन्न कलाओं के इतिहास का विवेचन करने या उनका विवरण देने के बजाय, विद्वान् लेखक ने इन कलाओं के रूप, विषयवस्तु, प्रतीकात्मक भाषा, अर्थ तथा उनकी उपस्थिति का इस्लामिक उद्भावना के मूल स्रोतों के साथ संबंध जोड़ा है।

लेखक : सैयद हुसैन नस्र
सह-प्रकाशन : इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र तथा
ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस, वाई.एम.सी.ए
लाइब्रेरी बिल्डिंग, जयसिंह रोड, नई दिल्ली-110001
1990, पृष्ठ : x + 213, मूल्य : 300 रुपए

27. टाइम एण्ड ईटर्निटी

ऐस्कोना, स्विट्जरलैंड में 1947 में मुद्रित इसका प्रथम संस्करण कुमारस्वामी का अंतिम ग्रंथ था जो उनके जीवनकाल में प्रकाशित हुआ था। इस पुस्तक में वे यह प्रतिपादन करते हैं कि यद्यपि हम काल की सीमाओं में रहते हैं पर हमारी मुक्ति अनंतता में ही निहित है। सभी धर्म यह अंतर स्पष्ट करते हैं अर्थात् यह बताते हैं कि केवल शाश्वत् या चिरस्थायी क्या है और अनादि; अनन्त क्या है।

लेखक : आनन्द के. कुमारस्वामी
प्राक्कथन : कपिला वात्स्यायन
सह-प्रकाशन : इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र तथा
सिलेक्ट बुक्स, 35/3 ब्रिगेड रोड क्रॉस, बंगलौर-560 001
1990, पृष्ठ : viii + 107, मूल्य : 110 रुपए.

28. टाइम एण्ड ईटर्नल चेंज

मिथक और पुरातत्त्वीय खगोल विज्ञान के अध्येता तथा खगोल भौतिकी में पारंगत होने के नाते, जॉन मैकिम मेलविले काल एवं परिवर्तन के संबंध में अनेक रूपकों के माध्यम से पाठक का मार्गदर्शन करते हुए बताते हैं कि काल के स्वरूप के विषय में प्राचीन ऋषियों को जो अन्तर्बोध हुए थे उनमें से कितनों को आधुनिक भौतिकी तथा खगोल विज्ञान ने अपनाया है।

लेखक : जॉन मैकिम मेलविले
प्राक्कथन : कपिला वात्स्यायन
सह-प्रकाशन : इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र तथा
स्टर्लिंग पब्लिशर्स प्रा० लि०,
एल० 10, ग्रीन पार्क एक्सटेंशन, नई दिल्ली-110 016
1990, पृष्ठ : x + 112, मूल्य : 150 रुपए.

29. प्रिंसिपल्स ऑफ कॉम्पोजिशन इन हिन्दू स्कल्पचर

इस पुस्तक में हिन्दू मूर्तिकला के अब तक अछूते रहे एक पक्ष को प्रस्तुत किया गया है। इसमें पूर्व मध्यकालीन मूर्तिकला का विवेचन है और इस कला के ऐतिहासिक, सैद्धांतिक और सौंदर्यशास्त्रीय पक्षों को न छूते हुए, इससे अनन्य रूप से संरचना के प्रश्न पर ही ध्यान केन्द्रित किया गया है।

लेखक : एलिस बोनर
प्राक्कथन : कपिला वात्स्यायन
सह-प्रकाशन : इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र तथा
मोतीलाल बनारसीदास पब्लिशर्स प्रा. लि०,
41, यू.ए. बंगलो रोड, जवाहर नगर, दिल्ली-110 007
1990, पृष्ठ : xvii + 274 + चित्र, मूल्य : 450 रुपए.

26. इन सर्च ऑफ ऐस्थेटिक्स ऑफ दि पपेट थिएटर

पुत्तलि रंगमंच के एक सर्वाधिक सृजनशील समकालीन कलामर्मज्ञ द्वारा रचित यह पुस्तक पुत्तलिकला जगत के सौंदर्य शास्त्र से संबंधित है। लेखक ने यह दर्शाया है कि पुत्तलिकला में *दिक्* और *काल* का विवेचन एक ही मंच पर कैसे किया जा सकता है जैसा कि ब्रह्मांड, आकाश और विभिन्न कालक्रमों का विवेचन किया जाता है।

लेखक : माइकेल मेश्के, मार्गरेटा सोरेनसन के सहयोग से
प्राक्कथन : कपिला वात्स्यायन
सह-प्रकाशन : इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र तथा
स्टर्लिंग पब्लिकेशन्स प्रा. लि.,
एल-10 ग्रीन पार्क एक्सटेंशन, नई दिल्ली-110 016
1992, पृष्ठ : 176, मूल्य : 300 रुपए.

31. एलोरा : कॉनसेप्ट एण्ड स्टाइल

यह ग्रंथ एलोरा की विश्वविख्यात शैलकृत गुफाओं के समन्वयात्मक विवेचन का निश्चयात्मक प्रयास है। इसका उद्देश्य भारतीय कला के अध्ययन के लिए एक रीतिनीति निर्धारित करने और कला के सामान्य इतिहास के प्रति इसके महान् योगदान की ओर ध्यान आकर्षित करना है।

लेखक : कारमेल बर्कसन
प्राक्कथन : मुल्कराज आनंद
सह-प्रकाशन : इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र तथा
अभिनव पब्लिकेशन्स, ई-37, हौजखास, नई दिल्ली-110 016
1992, पृष्ठ : 392 + 270 चित्र, मूल्य : 750 रुपए.

32. अंडरस्टैंडिंग कुचिपुड़ी

इस शताब्दी में पुनरुज्जीवित की गई भारतीय नृत्य की विभिन्न शैलियों/विधाओं में से कुचिपुड़ी नृत्य शैली का इतिहास सैद्धांतिक तथा व्यावहारिक दोनों स्तरों पर बहुत की रोचक है। इसके अतिरिक्त, इस शैली के विकास का इतिहास अभी बन रहा है और इसका समकालीन पुनरुत्थान एवं इसकी लोकप्रियता मंचीय कलाओं के गतिविज्ञान पर पर्याप्त प्रकाश डालती है। कुचिपुड़ी का इतिहास न केवल मंदिर तथा प्रांगण के अन्योन्याश्रय संबंध को दर्शाता है अपितु नगरीय एवं ग्रामीण, नारी एवं पुरुष तथा तमिलनाडु एवं आन्ध्र प्रदेश के पारस्परिक संवाद को भी प्रकट करता है।

लेखक : गुरु सी.आर. आचार्य तथा मल्लिका साराभाई
प्राक्कथन : कपिला वात्स्यायन
सह-प्रकाशन : इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र तथा
दर्पण एकेडमी ऑफ परफोर्मिंग आर्ट्स, अहमदाबाद,
1992, पृष्ठ : 212, मूल्य : 200 रुपए.

33. ऐसेज इन अर्ली इंडियन आर्किटेक्चर

भारत में स्थापत्य कला के इतिहास के प्रति कुमारस्वामी का योगदान सीमित होते हुए भी गुरु-गंभीर था। विशेष रूप से आदि भारत के असाधारण काष्ठ स्थापत्य के पुनर्निर्माण के उद्देश्य से उनके द्वारा किया गया ग्रंथो एवं स्थापत्य कृतियों का विश्लेषणात्मक विवेचन अत्यन्त विद्वत्तापूर्ण था और एक ऐसा मूलाधार था जिसके ऊपर भारत की उत्कृष्ट स्थापत्य परम्परा के सभी परवर्ती इतिहासों का निर्माण किया गया है।

प्रधान सम्पादक : आनन्द के. कुमारस्वामी
सम्पादक : मिकाइल डब्लू. माइस्तार
प्राक्कथन : कपिला वात्स्यायन
सह-प्रकाशन : इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र तथा
ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस, वाई.एम.सी.ए.,
लाइब्रेरी बिल्डिंग, जयसिंह रोड, नई दिल्ली-110 001
1992, पृष्ठ : xxxviii + 151, मूल्य : 400 रुपए.

34. रिलीजन एण्ड दि एनवाइरनमेंटल क्राइसिस (दि व्यूज ऑफ हिन्दूइज्म एण्ड इस्लाम)

कुछ वर्ष पहले दिए गए एक स्मरणीय व्याख्यान में, सैयद हुसैन नस्र ने पर्यावरण के उस संकट के कारण का गंभीर विवेचन किया था जिसने आज विकसित तथा विकासशील दोनों वर्गों के विश्व को अपने चुंगल में फंसा लिया है।

लेखक : सैयद हुसैन नस्र
प्राक्कथन : कपिला वात्स्यायन
सह-प्रकाशन : इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र तथा
अभिनव पब्लिकेशन्स, ई-37, हौजखास, नई दिल्ली-110 016
1993, पृष्ठ : 32, मूल्य : निर्मूल्य

35. स्पिरिच्युअल अथॉरिटी एण्ड टेम्पोरल पावर इन दि इंडियन थ्योरी ऑफ गवर्नमेंट

कुमारस्वामी ने, मूलपाठ्य स्रोतों के आधार पर भारतीय शासन सिद्धान्त की व्याख्या की है। समुदाय का कल्याण आज्ञापालन तथा निष्ठा की लम्बी शृंखला पर निर्भर करता है, जैसे प्रजा की राजा तथा पुरोहित, दोनों के प्रति भक्ति एवं निष्ठा, राजा की पुरोहित के प्रति निष्ठा और राजराजेश्वर के रूप में धर्मशास्त्र के सिद्धान्तों के प्रति सभी की निष्ठा।

लेखक : आनन्द के. कुमारस्वामी
सम्पादकगण : केशवराम एन.अय्यंगर तथा राम.पी. कुमारस्वामी
प्राक्कथन : कपिला वात्स्यायन
सह-प्रकाशन : इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र तथा
ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस, वाई एम.सी.ए.
लाइब्रेरी बिल्डिंग, जयसिंह रोड नई दिल्ली-110 001
1993, पृष्ठ : x + 127, मूल्य : 200 रुपए

36. यक्षज : एसेज इन दि वाटर कॉस्मालजी

कुमारस्वामी ने वैदिक, ब्राह्मण तथा उपनिषद् साहित्य के संदर्भ में यज्ञों की उत्पत्ति की जांच की और आर्येत्तर तथा आर्य-पूर्व संस्कृति के अधिक महत्त्वपूर्ण काल में यक्षों तथा यक्षिणियों की संकल्पना के विषय में स्पष्ट चित्र प्रस्तुत करने के लिए सामग्री एकत्र की। कलात्मक मूलभाव को स्पष्ट करते हुए, उन्होंने जलीय ब्रह्मांड विज्ञान के अनछुए क्षेत्रों का गहराई से अवगाहन किया।

लेखक : आनन्द के. कुमारस्वामी
सम्पादक : पॉल श्रोडर
प्राक्कथन : कपिला वात्स्यायन
सह-प्रकाशन : इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र तथा
ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस, वाई.एम.सी.ए.,
लाईब्रेरी बिल्डिंग, जयसिंह रोड, नई दिल्ली-110 001
1993, पृष्ठ : xvii + 339, मूल्य : 500 रुपए.

37 हजारी प्रसाद द्विवेदी के पत्र

पुस्तक में आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी द्वारा पंडित बनारसी दास चतुर्वेदी को लिखे गए पत्रों का संग्रह है। पंडित बनारसीदास चतुर्वेदी, आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी के गुरु, मार्गदर्शक तथा उससे भी अधिक उनके मित्र थे। आचार्य द्विवेदी अपने सुख-दुख की बात चतुर्वेदी जी से कहा करते थे। इस पृष्ठभूमि के साथ, ये पत्र द्विवेदी जी के व्यक्तिगत जीवन की कई घटनाओं का चित्रण करते हैं। और विभिन्न साहित्यिक समस्याओं के विषय में उनके विचारों से अवगत होने का अवसर देते हैं, जो संभवतः औपचारिक रचनाओं में नहीं मिल सकता।

ये पत्र ऐसे जीवंत प्रलेख हैं जो एक साहित्य पंडित तथा शोधकर्ता दोनों के लिए समान रूप से उपयोगी हैं। ये पत्र आचार्य द्विवेदी के जीवन पर शोध कार्य करने के लिए प्रचुर सामग्री उपलब्ध कराते हैं।

सम्पादक : मुकुन्द द्विवेदी
प्राक्कथन : कपिला वात्स्यायन
सह-प्रकाशन : इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र तथा
राजकमल प्रकाशन प्रा. लि.,
1-बी., नेताजी सुभाष मार्ग, नई दिल्ली-110 002
1994, पृष्ठ : 205, मूल्य : 125 रुपए.

38. दुनहुआंग आर्ट - थ्रू दि आइज ऑफ दुआन वेनजी

दुनहुआंग को यद्यपि अंतराष्ट्रीय स्तर पर लोग जानते हैं पर वहां जाने वाले बहुत कम हैं। दुनहुआंग स्थित मगाओ मठ 492 गुफाओं का समूह है, जिनमें 45,000 वर्गमीटर के क्षेत्र में भित्तिचित्र बने हुए हैं और 2,415 गचकारी की मूर्तियां हैं। यह समस्त विश्व की एक बहुमूल्य विरासत है। इसका इतिहास तथा कला की दृष्टि से अत्यन्त महत्व है। चौथी से चौदहवीं शताब्दी तक लगातार इन गुफाओं के निर्माण, नवीकरण तथा रखरखाव का काम बड़ी लगन के साथ चलता रहा था। परवर्ती काल में भी 19 वीं शताब्दी तक, उनका अनुरक्षण बराबर चलता रहा। 7 वीं से 9 वीं शताब्दी तक का समय यह चीन में संस्कृति तथा कला का स्वर्णयुग था और दुनहुआंग कला भी इसमे खूब फली-फूली।

इस खंड में दुनहुआंग अकादमी के निदेशक प्रा० दुआन वेनजी की कुछ चुनी हुई रचनाओं का अंग्रेजी अनुवाद प्रस्तुत किया गया है। प्रो० वेनजी ने अपनी रचनाओं में मगाओ गुफाओं के भीतर उपलब्ध चित्रों तथा मूर्तियों का कालक्रमिक अध्ययन प्रस्तुत किया है जो उनके मार्गदर्शन में दुनहुआंग अकादमी में दशकों तक चले शोधकार्य का परिणाम है।

सम्पादक एवं प्रस्तावना : तानचुंग
प्राक्कथन : कपिला वात्स्यायन
सह-प्रकाशन : इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र तथा
अभिनव पब्लिकेशन्स, ई-37 हौजखास, नई दिल्ली-110 006
1994, पृष्ठ : 456, प्लेटें : 64, मूल्य : 1500 रुपए

39. एक्सप्लोरिंग इंडियाज सैक्रिड आर्ट

यह खण्ड स्टेला क्रैमरिश की चुनी हुई रचनाओं का संग्रह है। स्टेला भारतीय कला तथा उनके धार्मिक संदर्भ की अग्रणी व्याख्याकार थी। यह ग्रंथ स्टेला के समग्र व्यक्तित्व व कृतित्व का ही नहीं, बल्कि उनके भावबोध तथा सूक्ष्मदृष्टि का रस लेने का एक साधन है।

इस खण्ड में संगृहीत शोधपत्र क्रैमरिश द्वारा लगभग पचास वर्षों में लिखे गए थे जो भारतीय कला के सांस्कृतिक तथा प्रतीकात्मक मूल्यों पर बल देते हैं। प्रथम भाग में कलाओं के सामाजिक तथा धार्मिक संदर्भों की चर्चा की गई है। उसके बाद के लेख मंदिर स्थापत्य, मूर्तिकला तथा चित्रकला के औपचारिक तथा तकनीकी पक्षों का उनके प्रतीकात्मक अर्थ के संदर्भ में विवेचन

करते हैं। ग्रंथ 150 से भी अधिक चित्रों से सुसज्जित है जो स्टेला की रचनाओं को महत्त्वपूर्ण दृश्य आयाम प्रदान करते हैं। इसमें बारबरा स्टोलर मिलर द्वारा लिखा गया एक जीवनी लेख भी है।

लेखक : स्टेला क्रैमरिश
सम्पादक : बारबरा स्टोलर मिलर
प्राक्कथन : कपिला वात्स्यायन
सह-प्रकाशन : इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र तथा
मोतीलाल बनारसीदास पब्लिशर्स प्रा. लि.,
41, यू.ए. बंगलो रोड, जवाहर नगर, नई दिल्ली-110 007
1994, पृष्ठ : xii + 356, मूल्य : 600 रुपए.

40. विद्यापति पदावली

मैथिली भाषा के अत्यन्त विख्यात कवि विद्यापति ठाकुर ने पदों की एक माला की रचना की, विषय था राधा एवं कृष्ण के नाम से परमात्मा तथा जीवात्मा की प्रणय लीला। उन्होंने ग्रामीण भारत की रोजमर्रा की साधारण गतिविधियों को आध्यात्मिक महत्त्व प्रदान किया। उनकी राधा एक गांव की गोरी है जो अपने परमप्रभु के प्यार की दीवानी है और उसी से प्रेमक्रीड़ाएँ करती है। इसी प्रकार कृष्ण भी कोई ऐतिहासिक व्यक्तित्व नहीं, बल्कि परब्रह्मपरमात्मा के अवतार हैं। इस प्रकार एकात्मता तथा समग्रता के सिद्धान्त को बोधगम्य विधि से प्रतिपादित किया गया है।

कुमारस्वामी ने राधा कृष्ण की प्रेमलीलाओं को अत्यन्त साधारण रीति से व्यक्त करने वाले इन पदों के बहु-स्तरीय प्रतीकवाद को अंग्रेजी भाषा में व्यक्त करने की आवश्यकता महसूस की और उसके फलस्वरूप इस पुस्तक का निर्माण हुआ।

अपने वर्तमान रूप में इस पुस्तक में पदावली का बंगला तथा देवनागरी लिपियों में मूलपाठ दिया गया है और साथ ही उनका अंग्रेजी अनुवाद भी प्रस्तुत किया गया है।

लेखक : विद्यापति ठाकुर
अनुवादक : आनन्द के. कुमारस्वामी तथा अरुण सेन
प्राक्कथन : कपिला वात्स्यायन
सह-प्रकाशन : इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र तथा
क्लैरियन बुक्स, 18-19, जी.टी. रोड,
दिलशाद गार्डन, दिल्ली-110 095
1994, पृष्ठ : 360, मूल्य : 550 रुपए.

41. थर्टी सांग्स फ्रॉम पंजाब एण्ड कश्मीर

श्रीमती एलिस कुमारस्वामी ने लेखिका के रूप में भारतीय नाम रतन देवी का प्रयोग करते हुए, ये गीत रिकार्ड किए थे जो आनन्द कुमारस्वामी की प्रस्तावना तथा अनुवाद के साथ इस पुस्तक में छपे हैं। एलिस ने कपूरथला के उस्ताद अब्दुल रहीम से भारतीय शास्त्रीय संगीत सीखा था, और आगे चलकर उन्होंने अपने सीखे हुए गीतों में से कुछ को संगीत तथा शब्दों में लिपिबद्ध किया। उनके द्वारा स्वरबद्ध किए गए तीस गीत ध्रुपद, ख्याल, ठुमरी, दादरा आदि शैलियों तथा राग-रागिनियों में रचे गए हैं।

प्रस्तुत खण्ड में उपर्युक्त संकलन को भाग-एक के रूप में शामिल किया गया है और भाग-दो में इन गीतों को सारिगम स्वरांकन के साथ देवनागरी लिपि में, हिन्दी अनुवाद के साथ प्रस्तुत किया गया है और साथ ही राग, ताल तथा मूलपाठ पर हिन्दी तथा अंग्रेजी में टिप्पणियां दी गई हैं। कुशल संगीतज्ञा प्रो. प्रेमलता शर्मा ने बड़ी मेहनत करके भाग-दो का पाठ तैयार किया है।

सम्पादक : प्रेमलता शर्मा
प्राक्कथन : कपिला वात्स्यायन
सह-प्रकाशन : इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र तथा
स्टर्लिंग पब्लिशर्स प्रा. लि.,
एल-10, ग्रीन पार्क एक्सटेंशन, नई दिल्ली-110 016
1994, पृष्ठ : xv + 177, मूल्य : 500 रुपए

42. इंडियन आर्ट एण्ड कॉनिसारशिप

यह प्रकाशन ऐसे 25 निबंधों का संग्रह है जो ब्रिटिश म्यूजियम के भारतीय कला विभाग के भूतपूर्व कीपर डूगलस बैरेट के भारतीय कला अध्ययन के प्रति योगदान को मान्यता प्रदान करने के लिए अंतर्राष्ट्रीय विद्वानों द्वारा लिखे गए हैं। ये निबंध 5 भागों में विभाजित हैं : भाग 1 प्राचीन भारत, भाग 2 उत्तर भारतीय चित्रकला, भाग 3 दक्षिण भारतीय मूर्तिकला, भाग 4 भारतीय चित्रकला, भाग 5 इस्लामिक कला। सभी निबंध चित्रों से सुसज्जित किए गए हैं, जिनमें से कुछ रंगीन चित्र भी हैं। इसमें भारतीय कला विषय पर डूगलस बैरेट के लेखों की संपूर्ण सूची भी शामिल की गई है।

योगदान करने वाले लेखक हैं : टी.के. विश्वास, विद्या देहेजिया, साइमन डिग्बी, क्लौस फिशर, बैसिल ग्रे, जॉनी गाइ, जे.सी. हार्ले, हरबर्ट हर्टल, जॉन इर्विन, कार्ल खंडालावाला, जे.पी. लॉस्टी, टी.एस मैक्सवेल, आर. नागस्वामी, प्रतापादित्य पाल, आर. पिंडर विल्सन, एच.के स्वाली, रॉबर्ट स्केल्टन, एम. टैडी, एण्ड्रू टॉम्सफील्ड, एम.सी. वेल्स, जोअन्ना वितियम्स आदि।

सम्पादक : जॉन गाइ
प्राक्कथन : कपिला वात्स्यायन
सह-प्रकाशन : इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र तथा
मेपिन पब्लिशिंग प्रा.लि., चिदम्बरम्, अहमदाबाद-380 013
1995 : 22 रंगीन तथा 211 श्वेतश्याम चित्रों के साथ;
पृष्ठ : 360, मूल्य : 1200 रुपए

43. इंडियन टेम्पल आर्किटेक्चर : फॉर्म एण्ड ट्रांसफॉर्मेशन

भारतीय मन्दिरों के रूपों में परिवर्तन एक दोहरी प्रक्रिया के माध्यम से होता रहा है। समय और स्थान के माध्यम से होने वाले रूपांतरण की ये दो पद्धतियां एक दूसरी में बहुत कुछ प्रतिबिम्बित होती हैं। दोनों में ही आविर्भाव, विकास तथा विस्तार की प्रक्रियाएँ अंतर्निहित हैं, जिनमें एक साथ पृथक होने तथा एक होने अर्थात् एकत्व से बहुत्व और उसी में लय होने की क्रियाएं चलती रही हैं।

भारत में मंदिर निर्माण की सबसे समृद्ध परम्पराओं में से एक वह थी जो ईसा की 7वीं शताब्दी में अस्तित्व में आई थी और उस प्रदेश में केन्द्रित रही थी जो आजकल कर्नाटक राज्य कहलाता है। यह परम्परा 13वीं शताब्दी तक विद्यमान रही थी। यह द्रविड़ यानी दक्षिणी मंदिर स्थापत्य कला की दो मुख्य शाखाओं में से एक थी। इसी के अन्तर्गत विरूपाक्ष, पट्टडकल, कैलास, एलोरा और होयसलेश्वर, हलेबिड जैसे विख्यात मंदिरों का निर्माण हुआ था। इस विशाल अध्ययन ग्रंथ में इन प्रसिद्ध मंदिरों के साथ-साथ 250 से भी अधिक अन्य भवनों के स्थापत्य का विश्लेषण किया गया है और इसमें पहली बार द्रविड़ कर्नाटक परम्परा को एक सतत तथा सुसंबद्ध विकास के रूप में स्पष्ट किया गया है।

इस पुस्तक का इसमें अनेक विश्लेषणात्मक रेखाचित्रों के कारण विद्वत्समाज में स्वागत होगा क्योंकि इनसे यह पता चलता है कि इन विशाल एवं महत्त्वपूर्ण भवनों पर किस तरह दृष्टिपात किया जाए। वास्तव में इनसे इनका जटिल स्थापत्य बोधगम्य हो गया है। इससे यह स्पष्ट पता चलता है कि एक मंदिर की रूपात्मक संरचना अव्यक्त की किस प्रकार एक ठोस रूप में अभिव्यक्त करती है और शाश्वत तथा अनंत सत्ता का पहले बहुविध रूपों में अंतरण होता है और फिर वही नाना रूपात्मक वस्तुजगत उस असीम में विलीन हो जाता है, जिसमें से वह एक अलग सत्ता में आया था।

लेखक : ऐडम हार्डी
प्राक्कथन : कपिला वात्स्यायन
सह-प्रकाशन : इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र तथा
अभिनव पब्लिकेशंस, ई-37, हौजखास, नई दिल्ली
1995, पृष्ठ : xix + 810, ग्रंथ सूची, सूचक, हाफ्टॉन चित्र,
158 रेखाचित्र, 217 नक्शे व 3 चार्ट, मूल्य : 2000 रुपए.

44. डिक्शनरी ऑफ इंडो-पर्शियन लिटरेचर

इस साहित्य कोश में भारतीय उप-महाद्वीप के फारसी लेखकों का संक्षेप में परिचय दिया गया है। ज्ञान के विभिन्न क्षेत्रों पर उनका आधिपत्य था। यह तथ्य उनके द्वारा रचित ग्रंथों के विस्तार तथा विविधता से प्रमाणित होता है। उनकी कृतियां विविध प्रकार की हैं और विभिन्न विषयों से संबंध रखती हैं। जैसे सूफीवाद, कवियों तथा संतों की चुनी हुई रचनाओं के संग्रह, पैगम्बर की परम्पराओं के भाषांतरण और न्यायशास्त्र विषयक मूल सार-संग्रह, इतिहास, डायरियां, संस्मरण, विज्ञान, चिकित्साशास्त्र, सरकारी विज्ञप्तियां आदि। भारतीय दर्शन और विज्ञान विषयक संस्कृत ग्रंथों के फ़ारसी अनुवादों ने भी इस भारतीय इस्लामिक/फ़ारसी साहित्य में एक नया आयाम जोड़ा। मानव जातीय दृष्टि से एक-दूसरे से भिन्न होते हुए भी इन लेखकों ने बुद्धिबल और जिज्ञासा के प्रयोग में उल्लेखनीय समानता प्रकट की है। अलबेरुनी से इकबाल तक की नौ शताब्दियों में साहित्य की श्रीवृद्धि करने वाले उत्कृष्ट लेखकों की लम्बी परम्परा रही है, जिन्होंने फ़ारसी की प्रतिष्ठा में चार चांद लगाए और अपनी सामूहिक प्रतिभा के द्वारा भारत के वैचारिक भंडार को समृद्ध किया। अनेक कारणों से गुणवत्ता बराबर बनी रही, जिनमें मुख्य थे शासक वर्ग का संरक्षण तथा खुले हाथ से आर्थिक सहायता, विद्वत्ता को मिलने वाला मान-सम्मान और उस अवधि में फारसी का दरबारी भाषा होना।

कोशकार : नबी हादी

प्राक्कथन : कपिला वात्स्यायन

सह-प्रकाशन : इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र तथा

अभिनव पब्लिकेशन्स, ई -37 हौजखास, नई दिल्ली-110 016

1995, पृष्ठ : xiv + 757, मूल्य : 750 रुपए

45. दि टेम्पल ऑफ मुक्तेश्वर ऐट चौडदानपुर

कर्नाटक का उत्तरी भाग भारत के उन समृद्ध क्षेत्रों में से एक है जहां कला की दृष्टि से अत्यन्त महत्त्वपूर्ण स्मारक बहुतायत से पाये जाते हैं। यहां ईसा की 10वीं, 11वीं, 12वीं तथा 13वीं शताब्दियों में अनेक राजवंशों अर्थात् कल्याण के चालुक्य, कालचूरी तथा सेउण वंश का शासन रहा है। यह काल सांस्कृतिक सुरुचि एवं उत्कर्ष का काल था। इसी अवधि में कालामुख-लाकुल शैव आन्दोलनों का अधिकतम विस्तार हुआ और वीरशैव मत को चरमोत्कर्ष मिला। चौडदानपुर (धारवाड जिला) में मुक्तेश्वर का मंदिर उस समय की उत्कृष्ट शैली तथा उच्च संस्कृति का सुन्दर नमूना है। वहां बड़े-बड़े सात शिला पट्टों पर मध्ययुगीन साहित्यिक कन्नड भाषा में सुन्दरता से उत्कीर्ण किए गए सात लम्बे शिलालेख है जिनसे इस मंदिर के इतिहास का पता चलता है। इनसे स्थानीय शासकों-गुट्टल नरेशों के विषय में बहुत-कुछ जानकारी मिलती है, जो स्वयं को गुप्त वंशीय बतलाते थे। इसके अलावा, मंदिर परिसर में निर्मित कुछ भवनों, देवताओं को भेंट किए गए दान तथा कुछ प्रमुख

धर्मगुरुओं/महात्माओं के बारे में भी इन शिलालेखों से बड़ी रोचक जानकारी मिलती है। इसमें एक ताकुलशैव संत मुक्तजीयार और एक वीरशैव संत शिवदेव के जीवन पर भी प्रकाश डाला गया है। ये संत 19 अगस्त, 1225 ई. को इस स्थान पर आए थे और फिर उन्होंने यहीं पर त्याग-तपस्या तथा आध्यात्मिक उत्कर्ष का लम्बा जीवन बिताया। घोर शैवमत के युग की यह धरोहर स्थापत्य तथा मूर्तिकला का उत्कृष्ट नमूना है। यह एक ही प्रस्तर खंड से निर्मित मंदिर है। इस निर्माण शैली को जक्कणाचारी शैली या कभी-कभी कल्याण-चालुक्य शैली भी कहते हैं। इसे कल्याण-चालुक्य शैली के नाम से अभिहित करना इसलिए भी उपयुक्त नहीं है क्योंकि इसी शैली के और बहुत से मंदिर कालचूरी या सेउण वंशों के संरक्षण में भी बने हैं। प्रस्तुत अध्ययन में ऐतिहासिक परिचय, सम्पूर्ण पाठ, अनुवाद तथा शिलालेखों का अर्थ, विशद सर्वेक्षण के साथ एक स्थापत्य कलात्मक विवरण तथा एक प्रतिमा-वैज्ञानिक विश्लेषण भी दिया गया है।

लेखक : वसुन्धरा फितियोजा
स्थापत्य : पिएर सिलवैन फितियोजा
प्राक्कथन : मुनीश चन्द्र जोशी
सह-प्रकाशन : इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र तथा
अभिनव पब्लिकेशन्स, ई-37, हौजखास, नई दिल्ली-110 016
1995. पृष्ठ : xv + 212,
परिशिष्ट, ग्रंथसूची, हाफ्टॉन चित्र 12,
रंगीन चित्र 16, चार्ट 5. मूल्य : 700 रुपए.

46. दि ट्रांसफॉर्मेशन ऑफ नेचर इन आर्ट

यह प्रकाशन इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र के प्रकाशन कार्यक्रम के अन्तर्गत ए.के. कुमारस्वामी के संग्रह ग्रंथों की पुस्तकमाला का नौवां पुष्प है। डॉ. कपिला वात्स्यायन द्वारा सम्पादित यह संस्करण स्वयं लेखक के प्रमाणिक संशोधनों पर आधारित है।

इस खंड में, कुमारस्वामी ने मध्ययुगीन यूरोप तथा एशिया की कला, विशेषत: भारत की कला के पीछे जो सिद्धान्त है उसकी व्याख्या करने का प्रयास किया है। कुमारस्वामी इसमें भारतीय सिद्धान्त के साथ-साथ चीनी सिद्धान्त को भी प्रस्तुत करते हैं। उनके मतानुसार पहला सिद्धान्त यह है कि कला का अस्तित्व स्वयं अपने लिए नहीं है, यह किसी धार्मिक स्थिति अथवा अनुभूति के माध्यम के रूप में व्यक्त होती है। इस प्रसंग में मध्ययुगीन यूरोप की कला से जो तुलना की गई है वह बहुत ही ज्ञानवर्द्धक है। वे आगे यह दर्शाते हैं कि ये दोनों पुनर्जागरणोत्तर यूरोपीय कला से बिल्कुल भिन्न है।

यह पुस्तक कला का इतिहास जानने के इच्छुक पाठकों के लिए ही नहीं अपितु कलाकारों के लिए भी उपयोगी है।

प्राक्कथन, प्रस्तावना, सम्पादन : कपिला वात्स्यायन
सह-प्रकाशन : इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र
तथा स्टर्लिंग पब्लिशर्स प्रा. लि.
एल-10, ग्रीन पार्क एक्सटेंशन, नई दिल्ली-110 016
1995, पृष्ठ : xxv + 189, मूल्य : 350 रुपए.

47. एसेज इन आर्किटेक्चरल थ्योरी

यह ग्रन्थ इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र के प्रकाशन कार्यक्रम के अन्तर्गत प्रकाशित की जाने वाली ए.के. कुमारस्वामी की ग्रंथमाला का 10 वां पुष्प है। कुमारस्वामी की स्थापत्य संबंधी ग्रंथमाला का प्रथम खंड था : आनन्द के. कुमारस्वामी-एसेज इन अर्ली इंडियन आर्किटेक्चर (1992), जो उपलब्ध प्रतिमाओं तथा मूलपाठों के सूक्ष्म विश्लेषण पर आधारित एक महत्वपूर्ण ग्रंथ है जिसका विषय है पारिभाषिक शब्दावली, आयोजन, आकृति विज्ञान, तथा नागरिक बोलचाल की भाषा का वाक्य-विन्यास और प्राचीन भारत में पवित्र वास्तुशिल्प।

"आनन्द के. कुमारस्वामी : एसेज इन आर्किटेक्चरल थ्योरी" नामक इस द्वितीय खंड में क्रमिक रूप से कुमार स्वामी के उन निबंधों को संकलित किया गया है जो स्थापत्य के भाष्य विज्ञान अर्थात् उसके विधि (कैसे) पक्ष की अपेक्षा "कारण" (क्यों) पक्ष पर कुमारस्वामी के तेजी से विकासशील चिन्तन के सर्वोत्तम द्योतक हैं।

लेखक : आनन्द के. कुमारस्वामी
सम्पादक : मिकाइल डब्लू माइस्तर
सह-प्रकाशन : इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र तथा
ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस, वाई.एम.सी.ए., लाइब्रेरी बिल्डिंग,
जयसिंह रोड, नई दिल्ली-110 001.
1995, पृष्ठ : xxv + 189, मूल्य : 350 रुपए.

48. स्तूप एण्ड इट्स टेक्नोलॉजी : ए टिबेटो-बुद्धिस्ट पर्स्पेक्टिव

विश्व के समस्त धार्मिक स्मारकों में, स्तूप का ऐतिहासिक विकास सर्वाधिक लम्बे समय तक अबाध गति से हुआ है। भारत से बाहर विश्व के सभी देशों में जहां-जहां भी बौद्ध धर्म फला-फूला, स्तूप तथा तत्संबंधी स्थापत्य का पर्याप्त विकास हुआ, हालांकि उसका मूल प्रतिरूप भारतीय ही रहा। समय

के साथ-साथ, भारत में तथा अन्य एशियाई बौद्ध देशों में भी स्तूप के संरचनात्मक स्वरूप में उल्लेखनीय परिवर्तन हुए।

प्रस्तुत अध्ययन में यह दर्शाया गया है कि तिब्बत किस प्रकार बौद्ध संस्कृति तथा साहित्य का खजाना बना। साथ ही, इसमें स्तूप स्थापत्य विषयक महत्त्वपूर्ण पुस्तकों पर भी प्रकाश डाला गया है। स्तूप के निर्माण से संबंधित विभिन्न कर्मकाण्डीय क्रियाकर्मों का विवरण दिया गया है और साथ ही तिब्बती-बौद्ध स्तूपों के आठ मूलभूत प्रकारों तथा उनके मुख्य संरचनात्मक संघटकों का वर्णन भी किया गया है। ऊपरी सिन्धु घाटी के लेह क्षेत्र में मिले स्तूपों का सर्वेक्षण भी प्रस्तुत किया गया है। पुस्तक के परिशिष्ट में चार महत्त्वपूर्ण तिब्बती मूलपाठों का अंग्रेजी में लिप्यन्तरण तथा अनुवाद दिया गया है जिससे पुस्तक का महत्त्व और भी बढ़ गया है।

लेखक : पेमा दोरजी;
प्राक्कथन : एम. सी. जोशी
सह-प्रकाशन : इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र तथा
मोतीलाल बनारसीदास पब्लिशर्स प्रा. लि.
41 यू.ए. बंगलो रोड, जवाहर नगर दिल्ली-110 007
1996; पृष्ठ : xxxiv + 189; मूल्य : 450 रुपए.

49. एस्थेटिक्स एण्ड मोटिवेशन्स इन आर्ट एण्ड साइन्स

यह खंड उन बारह शोधपत्रों का संग्रह है जो शांति निकेतन में आयोजित एक राष्ट्रीय संगोष्ठी के लिए आमंत्रित किए गये थे। ये शोधपत्र नोबेल पुरस्कार विजेता एस. चन्द्रशेखर की बीजभूत कृति "ट्रूथ एण्ड ब्यूटी : ऐस्थेटिक्स एण्ड मोटिवेशन्स इन साइन्स" पर आधारित थे। इन शोधपत्रों के लेखक कलाओं, ललित कलाओं तथा विज्ञान विषयों के मर्मज्ञ थे, जिन्होंने अपनी विशेषज्ञता के अलग-अलग विषयों में सर्जनात्मकता, सौन्दर्य और सत्य के विषय में अपने शोध निष्कर्ष प्रस्तुत किए हैं। आशा है, इस प्रकाशन से कला तथा विज्ञान के क्षेत्र में व्यवसाय करने वाले व्यक्ति परस्पर संवाद के लिए प्रेरित होंगे।

सम्पादक : किरण सी. गुप्ता;
प्राक्कथन : कपिला वात्स्यायन
सह-प्रकाशन : इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र तथा
न्यू एज इंटरनेशनल प्रा.लि. पब्लिशर्स;
4835/24, अंसारी रोड, नई दिल्ली-110 002;
1996; पृष्ठ : xiii - 183; मूल्य : 350 रुपए.

50. गिफ्ट्स ऑफ अर्थ : टेराकोटास एण्ड क्ले स्कल्पचर्स ऑफ इंडिया

भारत में कार्यरत कुम्हारों की संख्या साढ़े तीन लाख से भी अधिक है, इतनी विश्व के और किसी देश में नहीं है। हर समुदाय, चाहे वह कितना भी छोटा क्यों न हो, आमतौर पर अपना एक कुम्हार अवश्य रखता है, और नगरों तथा शहरों की तो बात ही क्या, जहां कुम्हारों की आबादी काफी ज्यादा है। चूंकि ये शिल्पी तरह-तरह की उप-संस्कृतियों, परम्पराओं तथा पर्यावरणों की आवश्यकताओं को पूरा करते हैं, इसलिए उनके बर्तन तथा अन्य उत्पाद भी आमतौर पर कई तरह के होते हैं। वे हर किस्म के घरेलू इस्तेमाल के लिए बर्तन बनाते हैं–मिट्टी के साधारण दीपक, हांडी-कूंडे से लेकर आठ फुट ऊंचे अनाज के कोठे तक। वे धार्मिक उत्सवों, पर्वों में काम आने वाली प्रतिमाएं बनाते हैं। इनमें से कुछ मूर्तियां तो छोटे-छोटे खिलौने मात्र होती हैं पर कुछ शानदार हाथी-घोड़ों की मूर्तियां होती हैं जिनकी ऊंचाई 18 फुट से भी अधिक होती है–इतनी बड़ी मिट्टी की प्रतिमायें मानवता के इतिहास में शायद ही कभी बनाई गई हैं।

लेखक : स्टीफेन पी. हुयलर;
प्राक्कथन : कपिला वात्स्यायन,
सह-प्रकाशन : इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र तथा
मेपिन पब्लिशिंग प्रा.लि., चिदम्बरम;
1996; पृष्ठ : 232; मूल्य : 2,250 रुपए.

51. कॉन्सेप्ट्स ऑफ टाइम : ऐन्शेण्ट एण्ड मॉर्डन

यह खण्ड उन चुने हुए 54 शोधपत्रों का संकलन है, जो नवम्बर 1990 में नई दिल्ली में हुई संगोष्ठी में प्रस्तुत किए गए थे। प्रत्येक शोधपत्र में उस सर्वव्यापी काल-तत्व का सूक्ष्मता से विवेचन किया गया है, जिसके चिन्तन में मानव अपने अस्तित्व बोध के आदिकाल से ही ध्यानमग्न रहा है। इन शोधपत्रों को आठ भागों में विभाजित किया गया है : (1) काल : संकल्पनाएं; (2) काल : दार्शनिक प्रवचन; (3) काल : भू-वैज्ञानिक तथा जीव-वैज्ञानिक; (4) काल : सामाजिक तथा सांस्कृतिक; (5) काल : चेतना; और (6) काल : ज्ञानातीतत्व तथा सर्वव्यापित्व।

प्रस्तावना : कपिला वात्स्यायन
सह-प्रकाशन : इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र तथा
स्टर्लिंग पब्लिकेशन प्रा.लि.,
एल. 10 ग्रीनपार्क एक्सटेंशन, नई दिल्ली-10016
1996, पृष्ठ : xxxviii + 502, मूल्य : 1250 रुपए.

52. आर्ट एक्सपीरिएन्स

इस ग्रंथ मे भारतीय सौंदर्य शास्त्र के विभिन्न पक्षों पर 15 निबंधों का समावेश है। परम्परागत दृष्टिकोण से विचारित आधारभूत संकल्पनाओं का सूक्ष्मवेधी विश्लेषण करने के पश्चात् प्रो. हिरियन्ना ने उनकी सारगर्भित व्याख्या की है। उन्होने सांख्य दृष्टिकोण से रस सिद्धान्त का विशद विवेचन किया है। रस ध्वनि तथा संस्कृत काव्यशास्त्र विषयक उनके लेख और प्राक्कथन भी समानरूप से प्रबोधक हैं। प्रत्येक निबंध में भारतीय सौंदर्यशास्त्र अथवा काव्यशास्त्र के किसी एक पक्ष पर प्रकाश डाला गया है।

लेखक : एम. हिरियन्ना
प्राक्कथन : कपिला वात्स्यायन
सह-प्रकाशन : इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र तथा
मनोहर पब्लिशर्स एण्ड डिस्ट्रिब्यूटर्स
2/6, अंसारी रोड़, दरिया गंज, नई दिल्ली-110 016
1996, (नया संस्करण) पृष्ठ : xiii + 113; मूल्य : 250 रुपए

53. सिलेक्टेड एसेज ऑफ जी. शंकर पिल्लै

इस पुस्तक में समाविष्ट लेख केरल के कर्मकाण्डीय अथवा लोक रंगमंच के प्रति भाव-प्रबलता से ओतप्रोत हैं। शंकर पिल्लै की दृष्टि तथा लेखनी के माध्यम से माता के रूप में धरती और धरती के रूप में माता की छवि प्रस्तुत की गई है। समकालीन साहित्य तथा रंगमंच विषयक लेख भी समान रूप से सशक्त हैं। लेखक ने भारत में रंगमंच के स्वरूप का, उसके राष्ट्रीय तथा अंतर्राष्ट्रीय घटनाक्रम, विशेषत: यूरोपीय आन्दोलनों की पृष्ठभूमि में सूक्ष्म विश्लेषण किया है।

प्रो. जी. शंकर पिल्लै केरल संगीत नाटक अकादमी के अध्यक्ष; जॉन मथाई केन्द्र स्थित कालिकट विश्वविद्यालय के नाट्य विद्यालय के संस्थापक; और अनेक राष्ट्रीय तथा अंतर्राष्ट्रीय पुरस्कारों के विजेता थे।

सम्पादक : एन. राधाकृष्णन
प्राक्कथन : कपिला वात्स्यायन
सह-प्रकाशन : इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र तथा
न्यू एज. इंटरनेशनल (प्रा. लि.) पब्लिशर्स
4835/24, अंसारी रोड़, दरिया गंज, नई दिल्ली-110 002
1997; पृष्ठ : viii + 176; मूल्य : 250 रुपए

54. यक्षगान

डॉ. के. एस कारन्त आज यक्षगान विषय के सर्वश्रेष्ठ विशेषज्ञ हैं और उसके सभी पक्षों अर्थात् नृत्य, संगीत और साहित्य पर सन् 1930 से कार्यरत हैं। उन्होंने इस कला विद्या के गहन तथा सुव्यवस्थित अध्ययन का मार्ग प्रशस्त किया है। उन्होंने यक्षगान के प्रत्येक पाण्डुलिपि का निरीक्षण तथा अध्ययन करने के लिए कर्नाटक के दूरदराज गांवों की यात्रा में कई दशक बिता दिए हैं - उन्हें प्राप्त प्राचीनतम पाण्डुलिपि सन् 1651 ईस्वी की है। अपनी प्रखर विवेक शक्ति तथा सौंदर्यानुभूति की सहायता से उन्होंने यक्षगान प्रस्तुत करने की बदलती हुई प्रवृत्तियों का पता लगाया है। उन्होंने सैंकड़ों यक्षगान कलाकारों से यह जानने के लिए सम्पर्क किया हैं कि पहले जमाने में यक्षगान के प्रशिक्षण तथा प्रदर्शन की कौन सी परिपाटियां प्रचलित थी जो आज लुप्त हो गई है और उन्हे पुनर्जीवित किया जाना चाहिए। उन्होंने अपने शोधकार्य के निष्कर्षों को दो प्रामाणिक पुस्तकों- कन्नड़ भाषा में "यक्षगान बयलता" (1958) और कन्नड़ तथा अंग्रेजी में "यक्षगान (1975)" में प्रस्तुत किया है। यक्षगान का यह खण्ड उनकी पुरानी पुस्तक का संशोधित संस्करण है, जिसमें अतिरिक्त सामग्री तथा चित्र दिए गए हैं।

आशा है इस पुस्तक से हमारे देश के एक अत्यन्त आकर्षक एवं गतिशील कला-रूप पर दृष्टिपात करने और मर्मज्ञ मस्तिष्क की विचक्षणता की झलक लेने में बहुमूल्य सहायता मिलेगी।

सम्पादक : के. शिवराम कारन्त
प्राक्कथन : एच. वाई. शारदा प्रसाद
सह-प्रकाशन : इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र तथा
अभिनव पब्लिकेशन्स, ई.-37, हौजखास, नई दिल्ली-110 016
चित्र : 3; रेखाचित्र: 16; 1997; पृष्ठ : 236, मूल्य : 450 रुपए

55. हिन्दुइज्म एण्ड बुद्धिज्म (बे. ले. आनन्द के. कुमारस्वामी)

सम्पादक : के. एन. आइयंगर

56. बाराबुदुर (स्केच ऑफ ए हिस्टरी ऑफ बुद्धिज्म बेस्ड ऑन आर्कियोलॉजिकल क्रिटिसिज्म ऑफ टेक्स्ट्स)

इस पुस्तक में उन विचारों, धार्मिक आकांक्षाओं और भवन निर्माण की तकनीकों का गंभीर एंव व्यापक विश्लेषण किया गया है, जिन्होनें विश्व के एक महानतम बौद्ध भवन-संकुल के निर्माण में योगदान दिया है। यह पुस्तक न तो जावा के इस सुप्रसिद्ध स्मारक का इतिहास है और न ही बौद्ध धर्म का इतिहास। यह तो एक ऐसी कृति के प्राक्कथन का अंग्रेजी अनुवाद है, जो असंगत रूप से

बाराबुदुर के विषय में लिखी गई थी और सन् 1935 में हनोई में फ्रेंच भाषा में प्रकाशित की गई थी। इसके अलावा, यह पुस्तक वेदों तथा उपनिषदों में अभिव्यक्त, भारत की आदिकालीन धार्मिक तथा आध्यात्मिक परम्पराओं की पृष्ठभूमि में प्रस्तुत किए गए बौद्ध धर्म तथा दर्शन की संकल्पनाओं का सर्वेक्षण/समीक्षा है।

फ्रेंच भाषा से अनुवादक : ऐलेक्जेंडर डब्ल्यू. मैकडॉनैल्ड;
1998; पृष्ठ : xxvii + 345, 14 प्लेटें; रंगीन चित्र;
सूचक, हार्ड बैक; आई. एस. बी. एन. : 81-207-1784-8; मूल्य : 700 रुपए

57. एनसाइक्लोपीडिया ऑफ इंडियन टेम्पल आर्किटेक्चर साउथ इंडिया, अपर द्राविडदेश, लेटर फेज खण्ड-1, भाग-3

भारतीय मंदिर स्थापत्य कला के संपूर्ण परिदृश्य से संबंधित ग्रंथमाला के पहले दो पुष्पों की तरह इस तीसरे भाग में ऊपरी द्राविडदेश में स्थित मध्ययुगीन मंदिरों तथा तत्संबंधी भवनों का सर्वेक्षण प्रस्तुत किया गया है। इनमें उल्लेखनीय हैं : कर्नाटक में, कल्याण के चालुक्यों द्वारसमुद्र के होयसलों और कदम्ब, रट्ट, गुट्ट, सेऊण, शान्तार आदि राजवंशों के राज्यक्षेत्रों में स्थित मंदिर और आंध्र प्रदेश के तेलंगाना क्षेत्र में, वारंगल के काकतीयों, वेमुलवाड के चालुक्यों, तेलुगु चोड, रेड्डी तथा मल्य वंशों के राज्य और अन्ततः तुलुनाडु के आलुप राजाओं के अधीनस्थ क्षेत्र में स्थित मंदिर-प्रदेशों तथा राजवंशों के अनुसार व्यवस्थित अध्यायों में, जहां स्पष्ट प्रमाण उपलब्ध हुआ है, क्षेत्रीय वास्तु शैलियों के उद्भव तथा स्थानीय चलन के स्वरूप पर भी ध्यान केन्द्रित किया गया है और इस तथ्य को प्रचुर मात्रा में, संस्थान के संग्रहालयों से प्राप्त चित्रों तथा रेखाचित्रों की सहायता से पूर्ववत् स्पष्ट किया गया है।

वाराणसी स्थित भारतीय अध्ययन के अमेरिकी संस्थान के कला तथा पुरातत्व केन्द्र द्वारा तैयार किए गए इस खंड में प्रमुख रूप से केन्द्र के निदेशक(अनुसंधान)/एम. ए. ढाकी का योगदान उल्लेखनीय रहा है। इसके अलावा एक अध्याय (दिवं) एच. सरकार लिखित भी है।

सम्पादक : एम. ए. ढाकी
प्राक्कथन : कपिला वात्स्यायन
सह-प्रकाशन : अमेरिकन इन्स्टिट्यूट ऑफ इंडियन स्टडीज
तथा इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र नई दिल्ली-110001
218 अंसारी रोड, दरियागंज, नई दिल्ली-110 002
वितरक : मैसर्स मनोहर पब्लिकेशनस एण्ड डिस्ट्रिब्यूटर्स
1996, पृष्ठ : xxix +598 (पाठ) तथा
प्लेटें, : 1167, मूल्य : 4000 रुपए (2-खण्ड)

कलादर्शन

58. कॉन्सेप्ट्स एण्ड रेस्पान्सिज

इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र, नई दिल्ली के लिए अंतर्राष्ट्रीय वास्तुशिल्पीय डिजाइन प्रतियोगिता अद्वितीय स्थापत्य दायित्व अर्थात् एक विशाल सांस्कृतिक संकुल जो नई दिल्ली में 10 हेक्टेयर क्षेत्र में बनाया जाएगा, इसका डिजाइन तैयार करने के आह्वान के उत्तर में देश-विदेश से प्राप्त हुए अनेक प्रारूपों एवं सांस्कृतिक दृष्टिकोणों को इस पुस्तक में प्रस्तुत किया गया है। इस प्रारूप प्रतियोगिता में 37 देशों से 194 प्रविष्टियां प्राप्त हुई। इस पुस्तक में कोई 50 प्रस्तावों को चुनकर प्रस्तुत किया गया है, जिनमें पुरस्कार जीतने वाली वे पांच प्रविष्टियां भी हैं जो विख्यात वास्तुविद् अच्युत पी. कर्नावंदे द्वारा प्रस्तुत की गई थीं। यह पुस्तक सभी तरह के छात्रों एवं वास्तुविदों के लिए उपयोगी सूचना का बहुमूल्य स्रोत है।

प्रस्तावना : कपिला वात्स्यायन
सह-प्रकाशन : इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र तथा
मैपिन पब्लिकेशन प्रा.लि., चिदम्बरम्,
अहमदाबाद-380 013
1992, पृष्ठ : 184, मूल्य : 1200 रुपए

छायाकंन माध्यम ग्रंथमाला

59. राबारी : ए पेस्टॉरल कॉम्युनिटी ऑफ कच्छ

फ्लावोनी की यह कृति *राबारी-ए-पेस्टॉरल कॉम्युनिटी ऑफ कच्छ* मानव जाति वर्णन की सामग्री के अनावश्यक बोझ से नहीं दबी है। यह जनसामान्य में प्रचलित परम्पराओं के विषय में, जिन्हें, हम इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र की भाषा में 'लोक परम्परा' कहते हैं, एक बहुमूल्य परिचायक पुस्तक का काम देती है। एक चित्रात्मक पुस्तक के रूप में यह एक उच्चकोटि की कला-कृति है और एक वर्णनात्मक सामग्री के रूप में जीवन शैली की एक अभिनव अभिव्यक्ति है जिसमें लेखक ने अपनी सूक्ष्म दृष्टि के बल पर विषय की पूरी जानकारी दी है। इसे पढ़ने में आनंद आता है।

मूल पाठ एवं छायाचित्र: फ्रांसिस्को डि ओराजी फ्लावोनी
प्राक्कथन : कपिला वात्स्यायन
सह-प्रकाशन : इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र तथा
ब्रजवासी प्रिंटर्स प्रा. लि., ई-46/11,
ओखला इंडस्ट्रियल एरिया, फेज II, नई दिल्ली-110 020
1990, पृष्ठ : 31 + 100 प्लेटें + ग्रंथ सूची, मूल्य : 575 रुपए

आकाश/अंतरिक्ष एवं काल की अवधारणा

60. कॉन्सेप्ट्स ऑफ स्पेस : ऐन्श्येण्ट एण्ड मॉडर्न

इस ग्रंथ में अन्तर्विषयक अध्ययन के क्षेत्र में नई जानकारियां दी गई हैं जिससे यह उन लोगों के लिए अत्यन्त महत्त्वपूर्ण हो गया है जो चिन्तनमनन का आंतरिक जीवन और गतिशीलता तथा सक्रियता का बाह्य जीवन जीते हैं। इस द्विविध जीवन का अन्योन्य संबंध और सम्पूर्णता का मूल विषय ही इस खंड में सम्मिलित किए गए बहु-विषयोन्मुख निबंधों की मूलभूत एकता का आधार है।

सम्पादक : कपिला वात्स्यायन
सह-प्रकाशन : इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र तथा
अभिनव पब्लिकेशन्स, ई-37, हौजखास, नई दिल्ली
1991, पृष्ठ : xxiv + 665 प्लेटें, मूल्य : 1200 रुपए

शैलकला ग्रंथमाला

61. रॉक आर्ट इन दि ओल्ड वर्ल्ड

इस पुस्तक में कुछ ऐसे चुने हुए शोधपत्र प्रकाशित किए गए हैं जो 1998 में डारविन (आस्ट्रेलिया) में आयोजित विश्व-शैलकला महासम्मेलन (कांग्रेस) में प्रस्तुत किए गए थे। पहली बार, अफ्रीका, एशिया तथा यूरोप के महाद्वीपों के इतने व्यापक भौगोलिक क्षेत्रों की शैलकला का एक ही पुस्तक में विवेचन करने का सफल प्रयास किया गया है। इस प्रकाशन में समाहित शोधपत्र इस बात के विश्वसनीय प्रमाण हैं कि शैलकला का अध्ययन केवल पुरातत्व की दृष्टि से ही नहीं अपितु मानव जाति, विज्ञान तथा जीवन शैली अध्ययन के लिए भी अत्यन्त महत्वपूर्ण है। इसका व्यापक परिदृश्य यह दर्शाता है कि वैसे तो शैलकला अनुसंधान का भी एक इतिहास है पर एक नई ज्ञान विधा के रूप में यह विकास की विभिन्न सरणियों की खोज में संलग्न है। बहुत से शोधपत्रों से भारत में हुए व्यापक शोध कार्यों का पता चलता है।

यह अद्वितीय खंड इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र की शैलकला अध्ययन संबंधी शृंखला की पहली कड़ी है। यह मानव इतिहास तथा कला में रुचि रखने वाले छात्रों तथा विभिन्न विषयों के विशेषज्ञों के लिए भी उपयोगी है।

प्रधान सम्पादक : कपिला वात्स्यायन
सम्पादक : माइकेल लौरब्लांशे
वितरक : यू.बी.एस. पब्लिशर्स डिस्ट्रिब्यूटर्स, लि., नई दिल्ली
1992; पृष्ठ : xxxii + 540; मूल्य : 750 रुपए, 50 डालर (विदेश में)

62. डीअर इन रॉक आर्ट ऑफ इंडिया एण्ड यूरोप

इस पुस्तक में भारत तथा यूरोप की शैलकला में मृग के स्थान का उल्लेख करते हुए आगे चलकर ऐतिहासिक काल में उसके चित्रण से अवगत कराया गया है।

पुस्तक के भारत संबंधी भाग में अनेक स्थलों से प्राप्त बहुमूल्य साक्ष्य को भी प्रस्तुत किया गया है। मनुष्य के जीवन में तथा उन्मुक्त प्रकृति में मृग के गंभीर एवं संवेदनशील पक्ष का जो मार्मिक चित्रण भारतीय साहित्य परम्परा में उपलब्ध है उसकी एक झलक दिखाई गई है। यूरोप संबंधी भाग में मृग के विषय में गढ़ी गई जन्तु कथाओं, मिथकों तथा दन्तकथाओं के साथ-साथ यह भी बताया गया है कि यूरोप के किन-किन भागों में मृगों की कौन-कौन सी प्रजातियां पाई जाती हैं।

सम्पादकगण : गियाकामो कैमुरी, ऐंजलो फोसाती तथा यशोधर मठपाल
(गैब्रियला गट्टी तथा गियानेट्टा मुसिलेली के योगदान के साथ)
प्राक्कथन : कपिला वात्स्यायन
वितरक : स्टर्लिंग पब्लिशर्स प्रा. लि.,
एल-10, ग्रीन पार्क एक्सटेंशन, नई दिल्ली-110 016
1993, पृष्ठ : xvi + 170, प्लेटें, मूल्य : 450 रुपए

63. रॉक आर्ट इन कुमाऊं हिमालय

यह इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र द्वारा अपने 'आदि दृश्य' कार्यक्रम के अन्तर्गत शैल कला विषय पर प्रकाशित तीसरी पुस्तक है।

यह पुस्तक कुमाऊं हिमालय में, जो अपेक्षाकृत एक अज्ञात क्षेत्र है, पूर्व-ऐतिहासिक शैल कला के विभिन्न पक्षों को उजागर करती है। इस कृति में अब तक अज्ञात रहे विभिन्न शैल कला तथा शैल शरण स्थलों का विवरण देने का प्रयास किया गया है। इस खंड में शामिल की गई सामग्रियां अति विशिष्ट तथा निश्चित रूप से नई हैं। इस क्षेत्र में देखे गए शैल चित्र मनुष्य तथा प्रकृति के पारस्परिक सामान्य संबंधों का एकपक्षीय निरूपण प्रस्तुत करते हैं। कुमाऊं अंचल में मिलने वाली सर्वाधिक रोचक चित्रकारियां विभिन्न प्रकार के नृत्य दृश्य प्रस्तुत करती हैं, उनके बाद ढोल पीटने वालों, शिकारियों तथा अन्य दृश्यों के चित्रों की बारी आती है।

इस पुस्तक में लेखक अपनी सरल भाषा में विषय वस्तु का विवेचन करते हुए क्षेत्र की शैल कला को सुरक्षित रखने की तकनीक, शैली तथा वर्तमान स्थिति का विवरण देता है और साथ ही पूर्व-ऐतिहासिक काल के कलाकार की कलात्मक गुणवत्ता तथा प्रेरणा स्रोत के बारे में बताता है। इस खंड में विषय को स्पष्ट करने के लिए उदाहरणस्वरूप दिए गए चित्र जलरंगों से बने हैं जो लेखक

ने वहां क्षेत्र में ही बनाए थे। ये चित्र काफी रोचक हैं और मध्य हिमालय अंचल की शैल कला के बारे में सही प्रभाव छोड़ते हैं।

इन चित्रकारियों के अतिरिक्त, कुमाऊं क्षेत्र में पाई गई नक्काशी तथा शैल कृतियां रूप तथा विषय वस्तु की दृष्टि से बहुत ही निराली हैं और पड़ोसी हिमाचल प्रदेश के पड़ोसी क्षेत्र तथा ऊपरी हिमालय अंचल में लद्दाख क्षेत्र में प्राप्त कृतियों से सर्वथा भिन्न हैं।

प्रधान सम्पादक : कपिला वात्स्यायन
सम्पादक : यशोधर मठपाल
सह-प्रकाशन : इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र तथा
आर्यन बुक इंटरनेशनल,
पंजीकृत कार्यालय : 4378/4-बी पूजा अपार्टमेंट्स,
4, अंसारी रोड, दरियागंज, नई दिल्ली-110 002
1995; पृष्ठ : xxiv + 137, मूल्य : 700 रुपए.

64. रॉक आर्ट इन केरल

यह इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र द्वारा अपने 'आदि दृश्य' कार्यक्रम के अन्तर्गत शैल कला विषय पर प्रकाशित चौथी पुस्तक है।

प्रस्तुत अध्ययन भारत के दूर दक्षिणी प्रदेश केरल के चित्रित शरण-गृहों के सम्यक् सर्वेक्षण पर आधारित है। केरल की शैलकला के ये नमूने बेजोड़ हैं। यह पुस्तक शैलकला की परम्परा की एक विशिष्ट शैली, विशेष रूप से उत्कीर्ण ज्यामितीय आकृतियों को उजागर करती है।

लेखक : यशोधर मठपाल
सह-प्रकाशन : इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र तथा
आर्य बुक्स इंटरनेशनल, नई दिल्ली - 110 002;
1998; पृष्ठ : xxviii + 79; हार्डबैंक, आई. एस. बी. एन.
81-7305-130-5; मूल्य : 800 रुपए.

65. नेचर एण्ड कल्चर ऑफ साउंड

इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र ने 24-25 अक्तूबर, 1994 को ध्वनि विषय पर एक दो-दिवसीय संगोष्ठी का आयोजन किया था। इसका उद्देश्य ध्वनि के प्रयोगात्मक, बहु-सांस्कृतिक अवबोधों को समझना अथवा पूर्व तथा पश्चिम के प्राचीन ग्रंथों में उपलब्ध इसकी पारिभाषिक बारीकियों के बारे में विचार-विमर्श करना ही नहीं था बल्कि परम्परा, आधुनिक ध्वनिविज्ञान, और यहां तक कि वर्तमान

पर्यावरणिक अध्ययनों में भी उपलब्ध ध्वनि बोधों को एक-साथ प्रस्तुत करना था। आज के रहन-सहन की परिस्थितियों में, ध्वनि विषय विशेष रूप से निर्णायक एवं महत्वपूर्ण हो गया है क्योंकि आज ध्वनि अनुगूंज तथा शोर-गुल के रूप में एक प्रमुख प्रदूषक बन गई है।

इस खंड में इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र द्वारा आयोजित उक्त संगोष्ठी में प्रस्तुत किए गए शोध-पत्र प्रकाशित किए गए हैं। इन शोध-पत्रों के ध्वनि के विभिन्न जटिल संकल्पनात्मक आयामों पर विचार किया गया है जो रहस्यवादी तथा परम्परागत रूप से आध्यात्मिक अभिव्यक्ति से लेकर आज के नए रूपों में और/भारतीय संगीत सिद्धान्त में उसके अवबोधों से लेकर उसके भविष्यवादी अनुप्रयोगों में विद्यमान हैं। संगोष्ठी के पांच विषय-क्षेत्रों : (क) ध्वनि : सृष्टि के स्रोत के रूप में और ध्वनि के स्रोत ; (ख) ध्वनि और इन्द्रियां; (ग) ध्वनि और दिक्, (घ) ध्वनि और काल, और (ङ.) ध्वनि के प्रतीक और ध्वन्यात्मक अभिकल्प - पर ध्यान केन्द्रित करते हुए, लेखकों ने ध्वनि तत्व के अध्ययन में संलग्न भिन्न-भिन्न शास्त्रों के बीच परस्पर-क्रिया की संभावनाओं का उद्घाटन किया है।

सम्पादक : एस. सी. मलिक

सह-प्रकाशन : इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र तथा
डी. के प्रिंटवर्ल्ड (प्रा०) लि०, नई दिल्ली;
1998; पृष्ठ : viii + 175, 25x19 से.मी.
रेखाचित्र-हार्डबैक, आई. एस. बी. एन.
81-246-0111-9, *मूल्य : 400 रुपए.*

कला एवं सौन्दर्यशास्त्र ग्रंथमाला

66. आर्ट एज डायलॉग

यह पुस्तक सौन्दर्यानुभूति की संकल्पना को समझने के लिए एक पूर्णतः नई विधि पर ध्यान केन्द्रित करती है। इसके विषय क्षेत्र में मनुष्य तथा कला के पारस्परिक संबंधों की पूर्व-भाषाई, अवस्थाओं पर प्रकाश डाला गया है।

लेखक : गौतम विश्वास

प्राक्कथन : कपिला वात्स्यायन

सह-प्रकाशन : इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र तथा
डी.के. प्रिंटवर्ल्ड (प्रा. लि.), श्रीकुंज, एफ-52,
बाति नगर, नई दिल्ली-110 015
1995, पृष्ठ : + 155 मूल्य : 200 रुपए

67. इंटरकल्चरल डायलॉग एण्ड दि ह्यूमन इमेज

इस पुस्तक में प्रो. मौरिस फ्रीडमैन के भाषणों, चर्चाओं तथा विचार-विनिमयों का संग्रह है जो कई स्तरों पर हुए उन अन्तर-सांस्कृतिक संवादों के दौरान प्रस्तुत किए गए थे जो मानव कल्पना की परिधि में आते हैं। यह सब इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र में, दार्शनिक मानव विज्ञान, कला-दर्शन, सामाजिक विज्ञान दर्शन, धर्म दर्शन और नैतिक दर्शन आदि विषयों पर चल रहे कार्य की सम्पूर्ण दृष्टि से मेल खाता है।

लेखक : मौरिस फ्रीडमैन
प्राक्कथन : कपिला वात्स्यायन
सह-प्रकाशन : इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र तथा
डी.के. प्रिंटवर्ल्ड (प्रा. लि.), श्रीकुंज, एच.-12,
बाति नगर, नई दिल्ली-110 015
1995, पृष्ठ : 299, मूल्य : 600 रुपए.

प्रकृति

68. प्रकृति : दि इंटिग्रल विजन

इस पुस्तक में एक के बाद एक हुई परस्पर संबद्ध उन पांच संगोष्ठियों की शृंखला के निष्कर्षों पर प्रकाश डाला गया है, जिनसे अन्तर-सांस्कृतिक तथा बहु-विषयक समझबूझ को प्रोत्साहन मिला था। यह पांच खंडों का सैट अपनी किस्म का पहला ग्रंथ है जिसमें महाभूतों (आकाश, वायु, अग्नि, जल, पृथ्वी आदि) की इस संकल्पना पर विचार किया गया है कि वे सभ्यता तथा संस्कृति के विकास के लिए उत्तरदायी हैं।

प्रधान सम्पादक : कपिला वात्स्यायन
सम्पादक : बैद्यनाथ सरस्वती
सह-प्रकाशन : इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र तथा
डी.के. प्रिंटवर्ल्ड (प्रा. लि.), श्रीकुंज, एफ-12,
बाति नगर, नई दिल्ली-110 015
1995, पृष्ठ : xviii + 190, मूल्य : 600 रुपए.

69. प्राइमल एलिमेंट्स : दि ऑरल ट्रडिशन

प्रथम खंड उन सामंजस्यपूर्ण समुदायों के उच्चारण के संबंध में है जिनका तत्त्वों/महाभूतों के साथ अबाध गति से सतत संवाद चलता रहता है। प्रकृति समुदायों के लिए बुद्धि विदग्धता का विषय नहीं है, अपितु यह यहां और इसी समय के जीवन का प्रश्न है, जो उनके आद्य मिथकों और कर्मकाण्डों में प्रकट होता है। इनके द्वारा प्रकृति की उपासना की जाती है ताकि मनुष्य विश्व के अभिन्न अंग के रूप में रह सके।

प्रधान सम्पादक : कपिला वात्स्यायन
सम्पादक : सम्पत नारायण
सह-प्रकाशन : इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र तथा
डी.के. प्रिंटवर्ल्ड (प्रा. लि.), श्रीकुंज, एफ-12,
बाति नगर, नई दिल्ली-110 015
1995, पृष्ठ : xiv + 153, मूल्य : 600 रुपए.

70. वैदिक, बुद्धिस्त एण्ड जैन ट्रडिशन्स

दूसरे खंड में वैदिक कर्मकांड, उपनिषदिक दर्शन, ज्योतिष शास्त्र और बौद्ध धर्म तथा जैन धर्म में महाभूतों की संकल्पना के अभूतपूर्व विवेचन पर विचार किया गया है। इसमें भारत की भिन्न-भिन्न विचारधाराओं के बीच दृष्टिकोणों की अनेक समानताओं तथा भिन्नताओं को भी उजागर किया गया है।

प्रधान सम्पादक : कपिला वात्स्यायन
सम्पादक : वैद्यनाथ सरस्वती
सह-प्रकाशन : इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र तथा
डी.के. प्रिंटवर्ल्ड (प्रा. लि.), श्रीकुंज, एफ-12,
बाति नगर, नई दिल्ली-110 015
1995, पृष्ठ : xviii + 190, मूल्य : 600 रुपए.

71. दि आगमिक ट्रडिशन एण्ड दि आर्ट्स

इस तीसरे खंड में सुव्यवस्थित रूप से यह बताया गया है कि भारतीय कलाओं तथा उनकी आगमिक पृष्ठभूमि में महाभूतों की अभिव्यक्ति किस प्रकार हुई है। यहां संरचनात्मक कलाओं को वास्तुविद्, मूर्तिकार, चित्रकार, संगीतज्ञ तथा नर्तक की अलग-अलग अनुकूल स्थिति से, उनके आद्य स्तर पर समझने का फिर से प्रयास किया गया है।

प्रधान सम्पादक : कपिला वात्स्यायन
सम्पादक : बेट्टिना बॉमर
सह-प्रकाशन : इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र तथा
डी.के. प्रिंटवर्ल्ड (प्रा. लि.), श्रीकुंज, एच-12,
बाति नगर, नई दिल्ली-110 015
1995, पृष्ठ : xiv + 193, मूल्य : 600 रुपए.

72. दि नेचर ऑफ मैटर

चौथे खंड में मात्र सिद्धान्त और प्रारंभिक कणों, सजीव पदार्थ का विकास, पदार्थ का स्वरूप तथा कार्य, वैज्ञानिक दर्शन तथा बौद्ध चिन्तन, पदार्थ के विषय में सांख्य सिद्धान्त, प्राचीन तथा मध्ययुगीन जीवविज्ञान, रहस्यवाद तथा आधुनिक विज्ञान, परम्परागत ब्रह्मांड विज्ञान, पदार्थ तथा औषधि, पदार्थ तथा चेतनता आदि पर महत्त्वपूर्ण चर्चा की गई है।

प्रधान सम्पादक : कपिला वात्स्यायन
सम्पादक : जयंत वी. नारलीकर
सह-प्रकाशन : इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र तथा
डी.के. प्रिंटवर्ल्ड (प्रा. लि.), श्रीकुंज एच-12,
बाति नगर, नई दिल्ली-110 015
1995, पृष्ठ : xiv + 228, मूल्य : 600 रुपए.

73. मैन इन नेचर

पांचवें तथा अंतिम खंड में कुछ विशेष समाजों के मिथक तथा ब्रह्मांड विज्ञान और वैज्ञानिकों, दार्शनिकों, मानव विज्ञानियों, पारिस्थिति-विज्ञानियों तथा कलाकारों के अंतर्राष्ट्रीय समुदाय की संस्कृति पर विचार किया गया है।

प्रधान सम्पादक : कपिला वात्स्यायन
सम्पादक : वैद्यनाथ सरस्वती
सह-प्रकाशन : इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र तथा
डी. के. प्रिंटवर्ल्ड (प्रा. लि.), श्रीकुंज, एच-12,
बाति नगर, नई दिल्ली-110015
1995, पृष्ठ : xii + 270, मूल्य : 600 रूपए

74. किंग ऑफ हंटर्स, वारियर्स एण्ड शेपर्ड्स (ऐसेज आन खंडोबा)

इस खंड के उन लेखों को एक साथ प्रकाशित किया गया है जो महाराष्ट्र के देव "खंडोबा" और आन्ध्र प्रदेश में उसके समकक्ष देव "मल्लाना" और कर्नाटक मे "मैलारा" के विषय में सॉन्धीमर द्वारा अंग्रेजी भाषा में लिखे गए थे। इन लेखों में तरह-तरह की जातियों और जन-जातियों की अलग-अलग परम्पराओं का उल्लेख किया गया है जिनके सदस्यों के लिए खंडोबा (या मल्लाना अथवा मैलारा) एक महत्वपूर्ण देवता है, और इनमें विभिन्न प्रकार की स्रोत सामग्री का उपयोग किया गया है जिसे सॉन्धीमर ने यहां-वहां से इकट्ठा किया था; जैसे, धांगड़ गडरियों के मौखिक काव्य, विभिन्न समुदायों/समूहों के लोगों द्वारा कहीं गई कहानियों तथा उनकी टीका-टिप्पणियां और कथन; खंडोबा के बंदीजनों तथा "नर्तकियों" वाघिया तथा मुरली गणों के पद, ब्रह्मणों द्वारा संस्कृत तथा मराठी में रचित महात्म्य; महानुभाव, वर्करी तथा अन्य मध्यकालीन संतों के साहित्य में खोजे गए वर्णन और टिप्पणियों; और प्रकाशित तथा अप्रकाशित ऐतिहासिक प्रलेखों से संकलित फुटकर संदर्भ।

सम्पादक : ऐन फेल्डहॉस, आदित्य मलिक, हीडरन ब्रोकनर
सह-प्रकाशन : इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र तथा
मनोहर लाल पब्लिशर्स एण्ड डिस्ट्रीब्यूटर्स,
नई दिल्ली-110002
1997, पृष्ठ : 15,353, मूल्य : 600 रूपए

जीवन शैली अध्ययन ग्रंथमाला

75. कम्प्यूटराइजिंग कल्चर्स

यह पुस्तक एक यूनेस्को-कार्यशाला के कार्य-विवरण का भाग है, जो नई दिल्ली में इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र के परिसर में आयोजित की गई थी, और उसका विषय था, "सकुल सांस्कृतिक जीवन-शैली अध्ययन, बहु-माध्यमिक कम्प्यूटरीकरणीय प्रलेखन के साथ"। इस पुस्तक में संगृहीत निबंध सांस्कृतिक डेटा के प्रलेखन तथा कम्प्यूटरीकरण से संबंधित सैद्धान्तिक तथा तकनीकी समस्याओं का विवेचन करते हैं।

इस शानदार पुस्तक के प्रतिभाशाली लेखकों ने ऐसी नई संकल्पनाओं तथा उपयुक्त तकनीकों का पहली बार उपयोग करने का प्रयास किया है जो संस्कृतियों के बहु-आयामी संरूपण को समझने में सहायक होती हैं। स्वदेशी श्रेणियों पर बल देते हुए और अनेक दृष्टि बिन्दुओं को अपनाते हुए, चिन्तनात्मक दृष्टिकोण स्पष्ट किया गया है।

मनुष्य द्वारा कम्प्यूटर के इस्तेमाल के दौरान जो भी सैद्धांतिक तथा विध्यात्मक समस्याओं का अनुभव किया जाता है, उनका, अनेक लेखकों ने बड़ी कुशलता के साथ निरूपण किया है। ऐसा करते हुए लेखकों ने भारत, पाकिस्तान, थाईलैंड, इंडोनेशिया तथा जापान विषयक सांस्कृतिक डेटा के विषय में व्यापक दृष्टिकोण अपनाया है। कम्प्यूटर वैज्ञानिकों तथा तकनीकी विशेषज्ञों ने ऐसे आकर्षक उदाहरण प्रस्तुत किए हैं जिनसे बहु-माध्यमिक कम्प्यूटरीकरणीय प्रलेखन कार्य के संपन्न करने में हार्डवेयर/ सॉफ्टवेयर की उपादेयता स्पष्ट प्रमाणित होती है।

प्रधान सम्पादक : कपिला वात्स्यायन
सम्पादक : वैद्यनाथ सरस्वती
सह-प्रकाशन : इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र तथा
न्यू एज इंटरनेशनल (प्रा. लि.) प्रकाशक,
4835/24, अंसारी रोड, दरियागंज, नई दिल्ली-110 002,
1995 · पृष्ठ : xx + 242; मूल्य : 300 रूपये

76. क्रॉस कल्चरल लाइफस्टाइल स्टडीज

यह पुस्तक इसी विषय पर इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र, नई दिल्ली में आयोजित यूनेस्को कार्यशाला के कार्यवृत्त का एक भाग है। इसमें संगृहीत निबंध संकुल-सांस्कृतिक जीवनशैली के अध्ययन के लिए एक अनुकरणीय आदर्श संकलन प्रस्तुत करते हैं।

इस पुस्तक के लेखकों का मुख्य प्रयास जीवनशैली अध्ययन की एक ऐसी समग्र रीति-नीति विकसित करना है, जिसका मुख्य उद्देश्य मानव सभ्यताओं में परस्पर-सक्रिय घटकों का पता करना हो। पुस्तक में वस्तुस्थिति अध्ययन के माध्यम से, आर्थिक व्यवसाय, स्वास्थ्य, तीर्थयात्रा, संगीत, धार्मिक प्रतिमाएँ तथा कर्मकाण्ड जैसे पक्षों को उजागर किया गया है जिनसे परम्परागत संस्कृतियों के संरूप और रचनात्मक जीवन के अध्ययन का शुभारंभ किया जा सकता है।

यह पुस्तक जीवनशैली अध्ययन का एक नया मार्ग प्रशस्त करती है। इसमें प्रस्तुत की गई सामग्री मानव-वैज्ञानिकों, लोक साहित्य के अध्येताओं, मानवजाति-पुरातत्वज्ञों तथा कला-इतिहासकारों के लिए बहुत रुचिकर एवं उपयोगी है।

प्रधान सम्पादक : कपिला वात्स्यायन
सम्पादक : बैद्यनाथ सरस्वती
सह-प्रकाशन : इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र तथा
न्यू एज इंटरनेशनल (प्रा. लि.), नई दिल्ली
1995, पृष्ठ : xii + 76, मूल्य : 150 रूपए.

77. इन्टरफेस ऑफ कल्चरल आइडेंटिटी एण्ड डिवलपमेण्ट

इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र ने समग्र सांस्कृतिक भिन्नताओं और परिभाषाओं के संदर्भ में विकास संबंधी विचारणीय विषयों पर एक बहु-विषयक/शास्त्रीय संवाद का शुभारंभ किया है, जिसे वह अपनी नई ग्रंथ-माला : "संस्कृति तथा विकास" में समग्ररूप से समाविष्ट करने का विचार रखता है।

इस विषय को दृष्टिगत रखते हुए, इस ग्रंथमाला के प्रथम पुष्प में उन 23 शोधपत्रों का संकलन है जो इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र, नई दिल्ली में 19 से 23 अप्रैल, 1993 तक हुई यूनेस्को-प्रायोजित विशेष बैठक में प्रस्तुत किए गए थे। सांस्कृतिक पहचान तथा विकास के प्रश्न पर मानव-केन्द्रित तथा ब्रह्माण्ड केन्द्रित मार्गों/दृष्टिकोणों के बीच विद्यमान मूलभूत अंतरों को उजागार करते हुए लेखक यह बताते हैं कि संस्कृति तथा विकास के घटक क्या हैं। अपने आप में नहीं, अपितु संस्कृति तथा जीवन शैली, संस्कृति तथा भाषा/परिस्थिति वैज्ञानिक पहचान की अंगभूत समग्रधारणा के रूप में; और किस प्रकार विकास के कुछ व्यवहार्य वैकल्पिक उदाहरणों को प्राचीन रहस्यात्मक/आध्यात्मिक सूक्ष्मदृष्टि तथा आधुनिक विज्ञान के मेल से विकसित किया जा सकाता है।

आस्ट्रेलिया, बंगलादेश, भारत, इंडोनेशिया, ईरान, मंगोलिया, नेपाल, श्रीलंका, थाइलैंड तथा तुर्की के कुशल मानव-वैज्ञानिकों, समाजवैज्ञानिकों, वैज्ञानिकों तथा अन्य विषय-विशेषज्ञों द्वारा प्रस्तुत किए गए

इन शोधपत्रों में केवल सांस्कृतिक पहचान और विकास के विभिन्न सैद्धान्तिक प्रश्नों पर ही विचार नहीं किया गया है अपितु भिन्न-भिन्न क्षेत्रगत परिस्थितियों में वस्तुस्थिति अध्ययन भी प्रस्तुत किए गए हैं।

प्रधान सम्पादक : कपिला वात्स्यायन
सम्पादक : वैद्यनाथ सरस्वती
सह-प्रकाशन : इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र तथा
डी. के. प्रिंटवर्ल्ड (प्रा. लि.), श्रीकुंज, एफ-12,
बाति नगर, नई दिल्ली-110015
1995, पृष्ठ : xii + 290, मूल्य : 600 रुपए.

78. इंटीग्रेशन ऑफ एण्डोजीनस कल्चरल डाइमेंशन इन-दू डिवलपमेंट

"संस्कृति और विकास श्रंखला" के इस खंड 2 में "सांस्कृतिक पहचान" के जटिल प्रश्न से लेकर अन्तर्जात संस्कृतियों को नजरअन्दाज करते हुए विकास के योजना निर्माताओं द्वारा विश्वभर में उत्पन्न की गई मानव-समस्याओं तक फैले हुए विभिन्न विषयों पर चर्चा की गई है। इस खंड में 17 शोधपत्र संकलित किए गए हैं जो इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र, नई दिल्ली में, यूनेस्को द्वारा प्रायोजित कार्यशाला में 19 से 23 अप्रैल, 1995 तक प्रस्तुत किए गए थे। इनमें औद्योगिक देशों द्वारा अपने अनुभव से विकसित किए गए विकास के आधुनिक तरीकों पर प्रश्नचिह्न लगाते हुए यह चुनौती दी गई है कि ऐसे विकास के फलस्वरूप न तो शांति और समरसता ही उत्पन्न हुई है और न ही गरीबी दूर हुई है अथवा सामाजिक आर्थिक समानता आई है। इसलिए वर्तमान विकास प्रक्रियाओं पर गंभीर रूप से पुनर्विचार करने की आवश्यकता पर बल देते हुए, लेखकों ने कहा है कि अब न केवल अन्तर्जात सांस्कृतिक आयामों का विकास के प्रतिमानों में एकीकरण करने की तत्काल आवश्यकता है, बल्कि जीवन तथा रहन-सहन के नैतिक आधार के साथ विकास को जोड़ना भी जरूरी हो गया है। इस खंड में एशिया की स्थिति के विशेष संदर्भ में, अनेक मामलों में किए गए विशेष अध्ययन भी शामिल किए गए हैं।

प्रधान सम्पादक : कपिला वात्स्यायन
सम्पादक : वैद्यनाथ सरस्वती
सह-प्रकाशन : इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र तथा
डी. के. प्रिंटवर्ल्ड (प्रा. लि.), नई दिल्ली-110016
1997, पृष्ठ : 251, मूल्य : 560 रुपए.

79. दि कल्चरल डाइमेन्शन ऑफ एजुकेशन

शिक्षा विषयक 16 निबंधों के मेल से बना यह खंड एक सम्मेलन की देन है जो इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र में यूनेस्को प्रपीठ के कार्यकलापों (सांस्कृतिक विकास के क्षेत्र में) के अन्तर्गत, "शिक्षा तथा परिस्थिति विज्ञान का सांस्कृतिक आयाम" विषय पर नई दिल्ली में 13-16 अक्तूबर, 1995 तक हुआ था। इसमें प्राथमिक शिक्षा पर, विशेष रूप से बंगलादेश, भारत और थाईलैंड में इसकी वर्तमान स्थिति, प्रवृत्तियों और समस्याओं पर गहराई से विचार किया गया है।

प्रधान सम्पादक : कपिला वात्स्यायन
सम्पादक : वैद्यनाथ सरस्वती
सह-प्रकाशन : इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र तथा
डी. के. प्रिंटवर्ल्ड (प्रा. लि.), नई दिल्ली-110001
1998, पृष्ठ : 258, मूल्य : 700 रूपए.

80. दि कल्चरल डाइमेन्शन ऑफ ईकॉलजी

आक्रामक या अंधाधुध विकास के अब तक अपनाए गए तरीकों के संदर्भ में पहाड़ों, वनों और द्वीपों में पारिस्थितिक प्रणालियों पर ध्यान केन्द्रित करते हुए, इस खंड में संगृहीत 15 लेखों में आधुनिक जीवन-शैली को तत्काल बदलकर प्रकृति को मित्र बनाने और सर्वोपरि "विवक बुद्धि-परम्परा" पर लौट आने की आवश्यकता पर बल दिया गया है। इसमें कुछ विशेष मामलों में किए गए विशेष अध्ययन भी शामिल किए गए हैं जिनमें संस्कृति के उन पक्षों को उजागर किया गया है जो आज भी लोगों के दिन-प्रतिदिन के जीवन में अपनाए जा रहे हैं।

प्रधान सम्पादक : कपिला वात्स्यायन
सम्पादक : वैद्यनाथ सरस्वती
सह-प्रकाशन : इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र तथा
डी. के. प्रिंटवर्ल्ड (प्रा. लि.), नई दिल्ली-110055
1998, पृष्ठ : 185, मूल्य : 600 रूपए.

81. लाइफस्टाइल एण्ड ईकॉलजी

अपने एक महत्वपूर्ण कार्यक्रम के रूप में, इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र मे पिछले कुछ समय से अपना ध्यान जीवन शैली संबंधी अध्ययनों पर केन्द्रित किया है। इसके अन्तर्गत, ब्रह्मांड व्यवस्था के साथ मनुष्य के संबंध, अनेक युगों में और भिन्न-भिन्न संस्कृतियों में दिक और काल के विषय में उसका बोध, और प्रकृति के बारे में उसका अनुभव और उसने कहां तक उसके साथ सह-अस्तित्व का संबंध विकसित कर लिया है जैसे मूलभूत प्रश्नों पर विचार किया जा रहा है। केन्द्र ने कुछ प्रायोगिक

अध्ययनों की एक श्रृंखला प्रारम्भ की है, जो समुदाय-विशेष के अध्ययन के माध्यम से, संस्कृति तथा पारिस्थितिकी के पारस्परिक संबंध को उसके असंख्य रूपों में खोजने का प्रयास करती है। जीवन शैलियों और पारिस्थितिकी इस प्रबन्ध ग्रंथ का विषय है।

अन्य जन-समुदायों के साथ-साथ हिमालय के पशुचारी घुमन्तू लोगों, लक्षद्वीप के निवासियों, और कन्याकुमारी के मुक्कुवर मछुआरों की जीवन-शैलियों का बड़ी सावधानीपूर्वक विश्लेषण प्रस्तुत करने वाले इन अध्ययनों में यह दिखाया गया है कि ये जन-समुदाय किस प्रकार प्रकृति -जगत की भावना का अनुसरण करते है : उसकी नकल करते नहीं, बल्कि उसके आद्य स्वरूप के सातत्य में। इसके अलावा, इस पुस्तक में परम्परागत संसाधन प्रबन्ध प्रणालियों के संदर्भ में परिस्थितियों का महिमामय परिदृश्य प्रस्तुत किया गया है।

इस पुस्तक के लेखक विख्यात परिस्थिति विज्ञानी, मानव विज्ञानी और लोक - साहित्यविद हैं।

प्रधान सम्पादक : कपिला वात्स्यायन
सम्पादक : वैद्यनाथ सरस्वती
सह-प्रकाशन : इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र तथा
डी. के. प्रिंटवर्ल्ड (प्रा. लि.), नई दिल्ली,
1998, पृष्ठ : 236, मूल्य : 600 रुपए.

82. दि रिच्युअल आर्ट ऑफ तेय्यम एण्ड भूताराधना

इस पुस्तक में भूताराधना तथा तेय्यम की कर्मकाण्डीय कला का विवरण दिया गया है, जैसी कि वह केरल तथा कर्नाटक के कुछ आदिम जातीय समुदायों में देखने को मिलती है। तेय्यम तथा भूत परम्पराओं की शोध संबंधी संभावनाओं को देखते हुए, इस पुस्तक में प्रामाणिक सामग्री संग्रहीत करने तथा उसकी व्याख्या करने का प्रयास किया गया है।

इस पुस्तक में यह स्पष्ट करने का प्रयास किया गया है कि जन-जीवन में किस प्रकार अतीन्द्रिय एवं दुर्बोध घटनाएं घटित होती हैं और फिर वे लोक परम्परा में किस प्रकार प्रतिबिम्बित होती हैं। तेय्यम भूत-प्रेतात्माओं से क्षतिपूर्ति प्राप्त करने के लिए अभिनीत किया जाता है। लेखक ने इस कर्मकाण्ड की विभिन्न क्रियाओं का विवरण देने का प्रयास किया है। प्रस्तुतिकर्ता इन क्रियाओं में इतना मग्न हो जाता है कि वह अपने अस्तित्व को भूलकर, मानसिक रूप से प्रकृति की अदृश्य शक्तियों के संसार में पहुंच जाता है और देवी-देवताओं का अभिनय करते हुए अपने अलौकिक हाव-भाव द्वारा तथाकथित दैवी शक्ति का प्रदर्शन करता है। इस पुस्तक में तेय्यम की कर्मकाण्डीय कला से जुड़े हुए अन्य अनेक कलारूपों का भी विवेचन किया गया हैं, जैसे, कर्मकाण्डीय चित्रकारियों की कला,

शीर्ष-परिधान बनाने से संबंधित शिल्प एवं पद्धतियां, मंचनीय कलाएं आदि।

प्रधान सम्पादक : कपिला वात्स्यायन
सम्पादक : सीता के. नाम्बियार
सह-प्रकाशन : इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र
तथा नवरंग बुकसेलर्स एण्ड पब्लिशर्स,
आर.बी.-7 इंद्रपुरी, नई दिल्ली-110002
1996; पृष्ठ : xvi + 159.

83. दि यूज ऑफ कल्चरल हेरिटेज ऐज ए टूल फॉर डेवलपमेंट

(एन इनक्वायरी इन-टू दि इण्डिजीनस वीवर्स ऑफ इंडिया एंड श्रीलंका)

इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र में, वर्ष 1995 में सांस्कृतिक विकास के क्षेत्र में एक यूनेस्को प्रपीठ (चेयर) की स्थापना की गई थी। इन हाल के वर्षों में, संस्कृतियों में अभिव्यक्त विकास प्रक्रिया के बारे में लोग और राष्ट्र अधिकाधिक चिन्तित हो गए हैं। भारत तथा श्रीलंका के स्वदेशी बुनकरों की स्थिति पर आधारित इस अध्ययन का उद्देश्य यह बताना है कि विकास के उपकरण के रूप में सांस्कृतिक धरोहर का कैसे उपयोग किया जाए और साथ ही इस विषय पर भी चर्चा करना है कि मौलिक धरोहर/सम्पदा से संस्कृति तथा विकास के कौन से सिद्धान्त उभर कर सामने आते हैं और तदनुसार सरकारी योजना निर्माताओं और निर्णायक अधिकारियों का ध्यान उस ओर दिलाना है।

प्रधान सम्पादक : कपिला वात्स्यायन
सम्पादक : वैद्यनाथ सरस्वती
सह-प्रकाशन : इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र, जनपथ, नई दिल्ली
1996; पृष्ठ : 36 पेपरबैक

84. स्वराज इन एजुकेशन : एक्सपीरिएन्स एण्ड एक्सपेरिमेंट इन प्राइमरी एजुकेशन

ब्रिटिश औपनिवेशक प्रगति पथ के दिग्दर्शक लार्ड मैकाले ने सिफारिश की थी कि पश्चिमी ज्ञान-विज्ञान का प्रसारी अंग्रेजी भाषा के माध्यम से किया जाए। इसके आधार पर शिक्षा की जो प्रणाली उत्पन्न हुई उसका अंतिम उद्देश्य लोक प्रशासन के लिए नौकर प्राप्त करना, युवाओं और युवतियों को प्राच्य साहित्य के अध्ययन से हटाकर पाश्चात्य साहित्य को मोड़ना और युवा हृदयों मे पश्चिमी ज्ञान तथा संस्कृति के प्रति उत्कट् प्रेम-भाव जागृत करना था। यह पुस्तक काशी में बोस फाउंडेशन स्कूल में दी जा रही प्राथमिक शिक्षा के माध्यम से, स्वराज की परिकल्पना को साकार

करने का विकल्प प्रस्तुत कराती है।

प्रधान सम्पादक : कपिला वात्स्यायन
सम्पादक : वैद्यनाथ सरस्वती
सह-प्रकाशन : इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र,
1996; पृष्ठ : 27

85. रूरल कॉन्टैक्स्ट ऑफ प्राइमरी एजुकेशन

भारत में शालापूर्व से लेकर उच्च स्तर की वर्तमान शिक्षा प्रणाली पश्चिम में आयात की हुई है। यहां अध्ययन के लिए कृषि संबंधी जलवायु वाले भिन्न-भिन्न क्षेत्रों, जैसेसूखा-प्रवण क्षेत्र, वर्षा-सिंचित क्षेत्र और महाराष्ट्र में पुणे जिले के पश्चिमी घाटों में स्थित पहाड़ी क्षेत्र में से तीन गांव चुने गए हैं। इस पुस्तक में शिक्षा की देसी प्रणाली की छान-बीन की गई है, जिसमें संस्कृति शिक्षण प्रक्रिया में ओतप्रोत है।

प्रधान सम्पादक : कपिला वात्स्यायन
सम्पादक : वैद्यनाथ सरस्वती
सह-प्रकाशन : इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र
1996; पृष्ठ : 27

86. गांधियन एक्सपेरिमेंट इन प्राइमरी एजुकेशन

इण्डोनेशियन एक्सपेरिमेंट

इस पुस्तक में इण्डोनेशिया के एक ऐसे किंडरगार्डन/स्कूल के कार्य-संचालन पर प्रकाश डाला गया है जो गांधी जी के उन विचारों का प्रसार करने के लिए स्थापित किया गया था जो नई पीढ़ी को सही दिशा प्रदान करते हैं और उन्हें जिम्मेदार नागरिक बनाते हैं। इस प्रणाली में स्वदेशी का सिद्धान्त विचार तथा कार्य के भिन्न-भिन्न स्तरों पर उजागर होता है।

प्रधान सम्पादक : कपिला वात्स्यायन
सम्पादक : वैद्यनाथ सरस्वती
सह-प्रकाशन : इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र और
सांस्कृतिक विकास के क्षेत्र में यूनेस्को चेंबर, नई दिल्ली
1996; पृष्ठ : 23

क्षेत्र सम्पदा ग्रंथमाला

87. तंजावूर बृहदीश्वर-एन आर्किटेक्चरल स्टडी

चोल स्मारकों, विशेषत: तंजावुर स्थित बृहदीश्वर मंदिर तथा गंगैकोंडा चोलपुरम मंदिर ने पुरातत्त्वविदों, पुरालेख शास्त्रियों, साहित्यिक समालोचकों, संगीतज्ञों, नर्तकों, शिल्प विशेषज्ञों, समाज वैज्ञानिकों तथा मानव वैज्ञानिकों का ध्यान अपनी ओर आकर्षित किया है।

बृहदीश्वर मंदिर के स्थापत्य पर प्रकाशित यह ग्रंथ एक परियोजना के अन्तर्गत प्रकाशित किए जाने वाले तकनीकी प्रबन्धों की शृंखला का पहला खंड है। यह वस्तुत: समीचीन ही है कि स्मारक की स्थापत्य योजना (नक्शा) का विवेचन मंदिर की भीतरी तथा बाहरी दीवारों पर उत्कीर्ण प्रतिमाओं तथा लेखों, गर्भगृह में उपलब्ध भित्ति चित्रें, ऊपरी मंजिलों, के 'कारणों', शिलालेखों और अन्य सभी विषयों से संबंधित अध्ययनों से पहले किया जाना चाहिए। एक मानक कूट (कोड) तैयार कर लिया गया है, जिसका परवर्ती सभी अध्ययनों में पालन किया जाएगा। यह एक ऐसा स्मारक है जो इस क्षेत्र को केन्द्रीयता प्रदान करता है और अन्य पक्षों पर आगे अध्ययन के लिए आधारभूत ढांचे का काम करता है।

प्रधान सम्पादक : कपिला वात्स्यायन
सम्पादक : पिएर पिशर्ड
सह-प्रकाशन : इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र तथा
आर्यन बुक इंटरनेशनल, 4378/4-बी. पूजा अपार्टमेंट्स,
4, अंसारी रोड़, दरियागंज, नई दिल्ली-110 002
1995; आकृतियां 32,-प्लेटें 45,-छायाचित्र 167-पृष्ठ : 244;मूल्य : 1000-रूपए

88. गोविन्ददेव--ए डायलॉग इन स्टोन

यह खंड पहली बार गोविन्ददेव के डिजाइन तथा प्रतिमा विज्ञान के विस्तृत अध्ययन को, छायाचित्रों तथा आलेखों, से पूर्णत: सुसज्जित रूप में प्रस्तुत करता है। अन्य अध्यायों में इसके निर्माण तथा औरंगजेब के शासन में इसे अपवित्र किए जाने के इतिहास पर चर्चा की गई है। साथ ही यह भी बताया गया है कि जब श्री गोविन्द देव की प्रतिमा को जयपुर में उसके वर्तमान देवालय तक लाया गया तो उस यात्रा के मार्ग में कहां-कहां मंदिर बनाए गए। अभिलेखागार से प्राप्त पाण्डुलिपियों के प्रतेखों से मंदिर के पुजारियों की वंशपरम्परा का पता चलता है और पाण्डुलिपिक स्रोतों से मंदिर की कर्मकाण्डीय गतिविधियों का विवरण

प्राप्त होता है। लेखकगण भारत, अमरीका तथा यूरोप के जाने-माने विद्वान् हैं।

सम्पादक : मार्गरेट एच. केस
प्रस्तावना : कपिला वात्स्यायन
प्रकाशक : इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र
वितरणकर्ता : आर्यन बुक्स इंटरनेशन, 4378/4 बी, पूजा अपार्टमेंट्स,
4, अंसारी रोड़, दरियागंज, नई दिल्ली-110002
1996; पृष्ठ : xxi + 305, चित्र, 267, मूल्य : 2000 रुपए

89. ईवनिंग ब्लॉसम्स : टेम्पल ट्रडिशन ऑफ सांझी इन वृंदावन

उन्नीसवीं शताब्दी के अंतिम दशकों में 'सांझी' ने मंदिर कला का रूप ले लिया था। प्रारंभ में कुमारी कन्याओं द्वारा घर की दीवारों पर गोबर पुती पृष्ठभूमि पर बनाई जाने वाली सांझी आगे चलकर पुजारियों द्वारा मंदिर के भीतर वेदी के ऊपर बनाई जाने लगी। इस प्रकार की सांझी, जो संभवत: धूलिचित्र बनाने की प्राचीन कला से निकली थी, प्रारंभ में प्राकृतिक पदार्थों यानी कुमकुम, गुलाल आदि से तूलिका की सहायता से बनाई जाती थी; पर अब इसमें रंगीन पाउडरों का इस्तेमाल होने लगा है। जंगली फूलों का स्थान अब बेलों ने ले लिया है। जिनसे "हौदा" यानी डिजाइन का मध्य भाग बनता है।

प्रधान सम्पादक : कपिला वात्स्यायन
सम्पादक : अनिमकृष्ण दास
सह-प्रकाशन : इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र,
तथा स्टर्लिंग पब्लिशर्स, प्रा. लि.,
एल-10, ग्रीन पार्क एक्सटेंशन, नई दिल्ली-110 016
1996; पृष्ठ 113, प्लेटें : 58, मूल्य : 750 रुपए

90. म्यूरल्स फॉर गॉडेसेज एण्ड गॉड्स

यह पुस्तक भारत की कर्मकाण्डीय चित्रकला का एक भव्य प्रलेख है, जो उड़ीसा के "ओसाकोठी" (ओसा-तपस्या, कोठी-पवित्र स्थल) भित्तिचित्रों के सुव्यवस्थित अध्ययन पर आधारित है। इसमें दुर्लभ, समृद्ध एवं अर्थपूर्ण कर्मकाण्डीय भित्तिचित्रकला का विवेचन किया गया है, जो अब बड़ी तेजी से लुप्त होती जा रही है। मिर्जापुर, सिंहपुरी, भीमबेटका, झीरी तथा भारत के अन्य स्थानों में पाए जाने वाले प्रागैतिहासिक काल के शैलगुफा चित्र इस कला की प्राचीनता के द्योतक है। इन भित्तिचित्रों और

आजकल गुजरात में राठवा उत्सव पर बनाए जाने वाले भित्तिचित्रों में बहुत समानता है। इन दोनों मामलों में दृश्य छवि में रूपान्तरण तथा पुनरुज्जीव दृष्टिगोचर होता है।

लेखक : एबरहर्ड फिशर तथा दीनानाथ पाथी
प्राक्कथन : कपिला वात्स्यायन
सह-प्रकाशन : इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र, नई दिल्ली तथा म्यूजियम रीटबर्ग ज्यूरिच,
वितरक : आर्यन बुक्स इंटरनेशनल, 4370/4, बी
पूजा अपार्टमेंट्स, 4 अंसारी रोड, दरिया गंज, नई दिल्ली - 110002
1996; पृष्ठ : 24; प्लेटें : 298 मूल्य : 2,250 रुपए

91. बेंगाली पैट्रियोटिक सांग्स एण्ड ब्रह्म समाज

इस पुस्तक में कु. श्रीलेखा बसु द्वारा संगृहीत बंगाल के देशभक्ति पूर्ण गीत संकलित हैं। उन्होंने अनेक ब्रह्मसमाज मंदिरों में अछूते पड़े पुराने अभिलेखों की छानबीन करके इन गीतों को खोज निकाला है। इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र में इनका एक आडियो रेकार्ड भी उपलब्ध है।

प्राक्कथन : कपिला वात्स्यायन
भूमिका : श्रीलेखा बसु
सह-प्रकाशन : इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र तथा
स्टर्लिंग पब्लिशर्स (प्रा. लि.)
एल 10, ग्रीन पार्क एक्सटेंशन, नई दिल्ली-110016
1996, पृष्ठ : vii + 90, मूल्य : 250 रुपए

92. टीक एण्ड ऐरेकानट : कॉलोनियल स्टेट, फोरेस्ट एण्ड पीपल इन दि वेस्टर्न घाट्स (साउथ इंडिया) 1800-1947

उपनिवेशवादी शक्तियों द्वारा गर्म प्रदेशों में पाए जाने वाले प्राकृतिक संसाधनों के दोहन के विनाशकारी स्वरूप के बारे में हाल ही में बहुत कुछ कहा जा चुका है। इस पुस्तक में पश्चिमी घाट, कर्नाटक के सबसे अधिक जंगलों से ढके एक जिले उत्तर कन्नड के विषय में एक अनोखा अध्ययन विस्तार से प्रस्तुत किया गया है, जिससे यह पता चला है कि आर्थिक लाभ और संरक्षण अभियान दोनों ही इस क्षेत्र से संबंधित ब्रिटिश वन नीति के मुख्य बिन्दु थे। इस अध्ययन में यह तर्क प्रस्तुत किया गया है कि उपनिवेशवादी हस्तक्षेप का एक सबसे विनाशकारी परिणाम यह था कि इससे सामाजिक संगठन छिन्न-भिन्न हो गया, जो मूलतः पर्यावरण के साथ घनिष्ठ रूप से

जुड़ा हुआ था। इन सामाजिक-आर्थिक परिवर्तनों को समझने में, अतिसंवेदनशील पर्यावरण के संरक्षण के साथ-साथ स्थानीय समुदायों की आवश्यकताओं को पूरा करने के प्रयासों की चुनौती का शायद कोई हल निकल सके।

लेखक : भारतीन बूची
प्राक्कथन : जैक्वस पोंचेपादास, कपिला वात्स्यायन
तथा एस. परमेश्वरप्पा
सह-प्रकाशन : इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र तथा
इंस्टिट्यूट फ्रेंकॉइज डी., पांडिचेरी,
1996, पृष्ठ : 225, मूल्य : 300 रुपए

स्मारकीय व्याख्यान ग्रंथमाला

93. निर्मल कुमार बोस मेमोरियल लेक्चर, खण्ड-1

व्याख्यान माला के प्रथम खण्ड में प्रो. सिन्हा द्वारा "द हेरीटेज ऑफ निर्मल कुमार बोस" तथा "इंडियन सिविलिजेशन : स्ट्रक्चर एण्ड चेंज" की वार्ताएं सम्मिलित हैं। पहले व्याख्यान में प्रो. सिन्हा ने डॉ. बोस के भारतीय सभ्यता के सम्बन्ध में दृष्टिकोण चर्चा की तथा दूसरे में प्रो. सिन्हा ने भारतीय सभ्यता के सम्बन्ध में अपने विचार प्रकट किये।

वक्ता : सुरजित चन्द्र सिन्हा
प्रकाशन : इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र, जनपथ, नई दिल्ली
1977, पृष्ठ : 26, मूल्य : 35 रुपए

94. निर्मल कुमार बोस मेमोरियल लेक्चर, खण्ड-2

व्याख्यान माला के दूसरे खण्ड में डा. बीरेन्द्र कुमार भट्टाचार्य ने "गांधीज इम्पैक्ट ऑन बोसेज स्कालरशिप" तथा रवीन्द्रनाथ एण्ड गांधी : रिस्पॉन्स टू इण्डियन रिएलिटी" शीर्षक से दो भाषण दिये। इनमें से पहले में उन्होंने डॉ. बोस की गांधी जी के विचारों के प्रति निष्ठा का उल्लेख किया, तथा दूसरे में गाँधी जी और रवीन्द्रनाथ ठाकुर के दार्शनिक विचारों का विश्लेषण किया।

वक्ता : वीरेन्द्र कुमार भट्टाचार्य
प्रकाशन : इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र, जनपथ, नई दिल्ली
1997, पृष्ठ : 54, मूल्य : 50 रुपए

95. निर्मल कुमार बोस स्मारकीय व्याख्यान, खण्ड-3

स्मारकीय भाषाओं की श्रृंखला में तीसरी कड़ी के रूप में से दो व्याख्यान शामिल थे जो डा. एम. ए. ढाकी द्वारा दिए गए थे : "प्रो. निर्मल कुमार बोस और भारतीय मंदिर स्थापत्य में उनका योगदान" और "प्रतिष्ठा-लक्षणसमुच्चय और कलिंग का स्थापत्य "इनमें से पहले व्याख्यान में मन्दिर स्थापत्य के संबंध में प्रो० एन. के. बोस के वे विचार दिए गए है जो उनकी कृतियों - कैनन्स ऑफ ओरिस्सन आर्किटेक्चर", "इंडियन टेम्पल डिजाइन्स" और "डिजाइन्स फ्रौम ओरिस्सन टेम्पल्स" में अभिव्यक्त हैं। दूसरे व्याख्यान में मन्दिर स्थापत्य और तत्संबंधी कर्मकांडो, प्रक्रियाओं, प्रारंभिक सोच-विचार तथा साहचर्य -भावों की व्याख्या की गई है।

वक्ता : एम. के. ढाकी
प्रकाशन : इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र, जनपथ, नई दिल्ली
1998, पृष्ठ : 35, मूल्य : 60 रुपए

96. क्षेत्र सम्पदा ग्रंथमाला

श्री श्रीरूपगोस्वामिप्रभुपादप्रणीत : श्री भक्तिरसामृतसिन्धु

श्रीभक्तिरसामृतसिन्धु केवल गौड़ीय परम्परा का प्रमुख ग्रंथ ही नहीं है अपितु पूरे देश में भक्तिरस का जो भी प्रतिपादन हुआ है उसकी पराकाष्टा इसमें निबद्ध है।

श्रीभक्तिरसामृतसिन्धु में भक्ति का सांगोपांग निरूपण परम्परा-प्राप्त नौ रसों मे से शांत और श्रृंगार से दास्य, सख्य और वात्सल्य को जोड़कर पांच मुख्य भक्ति रस और शेष सात-हास्य, करूण, वीर, भयानक, बीभत्स, रौद्र एंव अद्भुत - को गौण भक्तिरस बनाकर द्वादश भक्तिरस का प्रतिपादन है।

प्रेमलता शर्मा संगीत, नाट्य, कला, रस, भक्ति, साहित्य एंव गौड़ीय वैष्णव दर्शन की अनूठी निदुषी है। संस्कृत, हिन्दी, अंग्रेजी एंव बंगला-इन चारों भाषाओं पर आपका असाधारण अधिकार है। गुजराती और मराठी का भी आपको ज्ञान है। सुप्रसिद्ध संगीतज्ञ पंडित ओंकारनाथ ठाकुर से गायन का उच्चस्तरीय प्रशिक्षण प्राप्त कर उन्होनें संगीत के सिद्धान्त, इतिहास एंव दर्शन की अध्यापिका के रूप में अपने कर्मजीवन का प्रारम्भ किया। इस समय आप संगीत नाटक अकादमी की उपाध्यक्षता हैं। आप अनेक मौलिक कृतियों की रचयित्री, सम्पादिका एंव अनुवादिका हैं। उनकी कृतियों में उल्लेखनीय हैं - रसविलास, संगीतराज, महसरस, एकलिंग-माहात्म्य आदि। मतंगमुनिकृत बृहद्देशी का अंग्रेजी अनुवाद सहित समीक्षात्मक संस्करण (इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र) भी उनका एक महत्वपूर्ण कार्य है।

श्री श्री भक्तिरसामृतसिन्धु
संपादक एंव अनुवादक : डा० प्रेमलता शर्मा
प्राक्कथन : कपिला वात्स्यायन
1998 xviii, 564 पृ० ISBN = 81-208-1546-7 : 850 रुपए

97. जीवन शैली ग्रंथमाला

बुन्देलखण्ड की लोक संस्कृति का इतिहास

बुंदेलखंड की लोकसंस्कृति का इतिहास मूलतः मौखिक स्रोतों के आधार पर लिखा गया है, पर इसमें पुरातात्विक और ऐतिहासिक सामग्री का भी उपयोग किया गया है। यह सामाजिक इतिहास है जिसमें न कालानुक्रम महत्वपूर्ण है, न राजा-रानी, न युद्ध में जय-पराजय । लोकाचार समूहों के अंतसंबंध, पारिवारिक जीवन आदि को बहुत ही प्रभावशाली ढंग से रेखांकित किया गया है।

महुआ और बेर के प्रदेश के नायक - आल्हा-ऊदल, ताला हरदौल - इस विराट् रूप में आए हैं। मूनियो देव या मनियां देवी के प्रश्न पर भी विचार हुआ है, जिसमें एक महत्वपूर्ण जातीय उद्भव की समस्या जुड़ी हुई है।

लोकसाहित्य और संस्कृति के अध्ययन की दृष्टि से यह अपने ढंग का पहला ग्रंथ है।

नर्मदा प्रसाद गुप्त : आपका जन्म बुन्देलखंड में, जनवरी, 1931 को हुआ। दस वर्ष अंग्रेजी और पच्चीस वर्ष हिन्दी के प्राध्यापक रहे। आपके संस्थापक, संरक्षक, अध्यक्ष, मंत्री एंव कार्य समिति सदस्य के रूप में अनेक संस्थाओं की सेवा में रत रहे। आपकी 25 कहानियां, आल्हा - ऐतिहासिक उपन्यास, साहित्य पर 30 लोकसाहित्य 40, पर लोककला पर 10, शोधलेख, लोकललित निबंध 10 ख्यात पत्रिकाओं में प्रकाशित हुए हैं। आप जबलपुर का "लोकसाहित्य-सम्मान एंव तिवनी (रीवा) का "लोक-भाषा - सम्मान", उत्तर प्रदेश हिन्दी संस्थान लखनऊ का "श्री मैथिलीशरण गुप्त पुरस्कार" से विभूषित हैं।

नर्मदा प्रसाद गुप्त
दो शब्द : कपिला वात्स्यायन
भूमिका : श्यामचरण दुबे
1995 : 1475 पृ० ISBN = 81-7-224-4 : 95 रुपए

98. जीवन शैली ग्रंथमाला

परिव्राजक की डायरी

यह पुस्तक एक अन्तर्दृष्टिसम्पन्न विद्वान के सूक्ष्म निरीक्षण और पर्यवेक्षण का ऐसा लेखा-जोखा है जो पाठक के मन-मस्तिष्क पर अपनी अमिट छाप छोड़ जाता है। निर्मल कुमार बोस बचपन से ही अपने चारों ओर के परिवेश के प्रति सजग थे और बहुत कुछ जानने को उत्सुक भी। अपने पिता की भांति उन्हें भी डायरी लिखने का शौक था और यही डायरी आज एक अनमोल धरोहर बन गई है। इस डायरी में समाविष्ट भिन्न-भिन्न स्थानों और समय के विभिन्न अनुभव, एक चतुर चितेरे की सूक्ष्म दृष्टि और संवेदनशील हृदय की अनुभूति से हमें परिचित कराते हैं।

निर्मल कुमार बोस (1901-1972) कलकत्ता में जन्में और पले-बढ़े। उन्होंने कलकत्ता विश्वविद्यालय से स्नातकोत्तर शिक्षा और शोध कार्य करके अपनी प्रतिभा की छाप तत्कालीन विद्वानों के मन पर छोड़ दी थी। बहुमुखी प्रतिभा के धनी निर्मल कुमार बोस इतिहास, राजनीतिशास्त्र, स्थापत्यकला एंव भाषाओं के साथ-साथ मानवविज्ञान के भी विद्वान थे।

स्वतंत्रता संग्राम के समय गांधीवादी विचारधारा से प्रभावित होकर आपने गरीबों, अहसायों की सेवा की और जन-चेतना को जागृत किया। हिन्दी, अंग्रेजी एंव बांग्ला में प्रकाशित उनकी पुस्तकों से उनके

रूचि-वैविध्य के बारे में ज्ञात होता है।

निर्मल कुमार बोस
अनुवादक : मनोज कुमार मिश्र
आमुख : कपिला वात्स्यान
1997 : 144 पृ० ISBN = 81-7055-526-4 : 95 रुपए.

99. बाल जगत ग्रंथमाला
सोमी

इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र के बाल जगत कार्यक्रम का प्रमुख उद्देश्य, बच्चों को भारतवर्ष की समृद्ध परम्पराओं से अवगत कराना है। इस कार्यक्रम के अन्तर्गत गांधी जी के सिद्धान्तों पर आधारित बाल सुबोध पुस्तकों के प्रकाशन की योजना है। इस श्रंखला में सुप्रसिद्ध सर्जक, श्री हकुभाई शाह द्वारा रचित बाल कथाएं सोमी और धरती का प्रकाशन इस दिशा में हमारा प्रथम प्रयास है, जिसको प्रकाशित करते हुए हमें अपार हर्ष हो रहा है।

हंकु शाह-सुप्रसिद्ध सर्जक, शब्दशिल्पी एंव कलापारखी। आप भारत सरकार में हथकरघा के अभिकल्प एंव नेशनल इन्स्टिट्यूट ऑफ डिजाइन, अहमदाबाद में शोधार्थी - सलाहकार के रूप में जुड़े रहे हैं। देश-विदेश में आपकी सर्जनात्मकता की कई प्रदर्शनियां आयोजित की जा चुकी हैं। 1989 में भारत सरकार द्वारा आपको पद्मश्री से विभूषित किया गया था।

हकु-शाह
1998 : 29 पृ० : 40 रुपए.

100. जीवन शैली ग्रंथमाला
धरती और बीज

इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र द्वारा प्रतिष्ठापित अनुसंधान-पद्धति के अन्तर्गत ब्रज-क्षेत्र के किसानों में "धरती-बीज" की अवधारणा का अध्ययन प्रस्तुत करने वाली महत्वपूर्ण पुस्तक है - धरती और बीज ।

ग्यारह अध्यायों में विभाजित धरती और बीज पुस्तक में डा० राजेन्द्र रंजन चतुर्वेदी ने धरती और बीज संबंधी भौतिक, मनोवैज्ञानिक, सौंदर्यबोध, अभिव्यक्ति, चिंतन और विश्राम-प्रणाली के अनेक विशिष्ट पक्षों का अन्वेषण किया है।

डा० राजेन्द्र रंजन चतुर्वेदी सनातन धर्म कालेज, पानीपत में व्याख्याता है। आपने आगरा विश्वविद्यालय से लोकवार्ता विज्ञान में डी. लिट् की उपाधि प्राप्त की और इसी क्षेत्र में गत कई वर्षों से शोध कार्य में संलग्न है। 1986 में उत्तर प्रदेश संस्थान ने चतुर्वेदी जी को "श्रीधर पाठक नामित पुरस्कार" से सम्मानित किया। आपके महत्वपूर्ण प्रकाशित ग्रंथों में है। "भारतीय संगीत परम्परा और स्वामी हरिदास", "लोक शास्त्र", "लोकोक्ति और लोकविज्ञान", "ब्रज लोकगीत"। आपने कई अन्य जन प्रसारण माध्यमों से भी लोकवार्ता विज्ञान का प्रसार किया है।

राजेन्द्र रंजन चतुर्वेदी
पुरोवाक : वैद्यनाथ सरस्वती
1997 : 337 पृ० ISBN : 7119-376-1; 250 रुपए

इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र के सचित्र पोस्ट कार्डों की सूची

1. इंडियन पिजन्स एण्ड डव्ज़, 1988, मूल्य : 10 रुपए प्रति सैट (अप्राप्य)
2. हिमालय पर्वतमालाओं की दृश्यावली, 1988, मूल्य : 10 रुपए प्रति सैट (अप्राप्य)
3. भीमबेटका के शैल चित्र, 1988, मूल्य : 10 रुपए प्रति सैट
4. बूनर की चित्रकारियां, 1988, मूल्य : 10 रुपए प्रति सैट
5. दि इंडियन पिजन्स एण्ड डव्ज, 1990, मूल्य : 25 रुपए प्रति सैट
6. दि बर्ड्स ऑफ पैराडाइज, 1990, मूल्य : 25 रुपए प्रति सैट
7. दि कैलिको पेंटिंग एण्ड प्रिंटिंग, 1990, मूल्य : 25 रुपए प्रति सैट
8. भारत में प्राचीन स्थापत्य कला, 1990, मूल्य : 25 रुपए प्रति सैट
9. दि आर्ट ऑफ दुनहुआंग ग्रोटोज, 1992, मूल्य : 25 रुपए प्रति सैट
10. राजा लाला दीनदयाल के छायाचित्र, 1993, मूल्य : 25 रुपए प्रति सैट
11. भीमबेटका की शैल-कला, 1993, मूल्य : 25 रुपए प्रति सैट
12. चीन के मार्ग से भारत की सुरम्य यात्रा, 1993, मूल्य : 25 रुपए प्रति सैट

कैटलॉग

1. खम् : स्पेस एंड दि एक्ट ऑफ स्पेस, 1986
2. काल : ए मल्टीमीडिया प्रेजेंटेशन ऑन टाइम, 1990-91
3. मोगाओ ग्रोट्टोज दुनहुआंग : बुद्धिस्ट केव पेंटिंग्स फ्रॉम चाइना, 1991 (अप्राप्य)
4. प्रकृति : मैन इन हारमनी विद एलीमेंट्स, 1993 (अप्राप्य)

विंहगम **इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र का समाचार-पत्रक**

खण्ड-1 अंक-1 सितम्बर-नवम्बर, 1993

खण्ड-1 अंक-2 जनवरी-मार्च, 1994

खण्ड-2 अंक-1 अप्रैल-जून, 1994

खण्ड-2 अंक-2 जुलाई-सितम्बर, 1994

खण्ड-2 अंक-3 अक्तूबर-दिसम्बर, 1994

खण्ड-2 अंक-4 जनवरी-मार्च, 1995

खण्ड-3 अंक-1 अप्रैल-जून, 1995

खण्ड-3 अंक-2 जुलाई-सितम्बर, 1995

खण्ड-3 अंक-3 अक्तूबर-दिसम्बर, 1995

खण्ड-4 , 1996

खण्ड-4 , 1997

खण्ड-4 , 1998